राष्ट्रीय संस्करण

वर्ष 9 अंक 326

दैनिक जागरण

मूल्य ₹8 .00 नई दिल्ली, मंगलवार, 5 मई, 2026

www.jagran.com

पृष्ठ 14

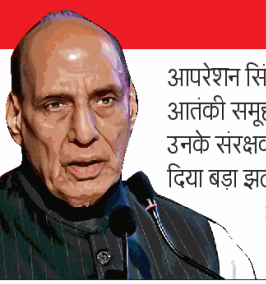

आपरेशन सिंदूर ने आतंकी समूहों और उनके संरक्षकों को दिया बड़ा झटका

>> 6

बंगाल में पहली बार भाजपा सरकार

बंगाल में हुआ खेला, भाजपा पर बरसी मतदाताओं की 'ममता', अपनी सीट भी नहीं बचा पाईं मुख्यमंत्री

असम में भाजपा की हैट-ट्रिक, राज्य में कांग्रेस के सीएम पद का चेहरा रहे गौरव गोगोई को भी मिली हार

तमिलनाडु में नायक से जननायक बने विजय, 50 साल बाद राज्य की द्रविड़ राजनीति को बड़ा झटका

केरलम में विजयन की हार के बाद राज्य में कांग्रेसनीत यूडीएफ की दस साल बाद सत्ता में वापसी

बंगाल में ऐतिहासिक जीत के बाद सोमवार को नई दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय में पारंपरिक बंगाली धोती-कुर्ता पहनकर पहुंचे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी। रायटर

हार के प्रमुख कारण

बंगाल (तृणमूल कांग्रेस)

- तीन बार की सत्ता विरोधी लहर, तृणमूल के प्रति व्यापक जनआक्रोश
- भ्रष्टाचार, ध्रुवीकरण और चुनावी हिंसा के आरोपों से नकारात्मक माहौल

असम (कांग्रेस)

- भाजपा की गठबंधन रणनीति, घुसपैठ व विकास का मुद्दा
- कांग्रेस नेतृत्व का संगठनात्मक बिखराव, कई नेताओं ने दल छोड़ा

तमिलनाडु (द्रमुक गठबंधन)

- द्रमुक के शीर्ष नेताओं का सनातन विरोधी अनर्गल प्रलाप
- विजय की आक्रामक राजनीति से वोटरों का आकर्षण टीवीके के प्रति बढ़ा

केरलम (एलडीएफ)

- एलडीएफ के दो कार्यकाल के बाद तीव्र एंटी-इन्कम्बेंसी
- कांग्रेस-नीत यूडीएफ की बेहतर एकजुटता और रणनीतिक वोटिंग

पुडुचेरी (कांग्रेस गठबंधन)

- एनडीए का बेहतर चुनावी समन्वय और मजबूत रणनीति
- विपक्षी गठबंधन में आंतरिक गुटबाजी व नेतृत्व में अस्थिरता

अरविंद शर्मा • जागरण

नई दिल्ली : पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव नतीजों ने कई स्थापित राजनीतिक समीकरणों को उलट दिया है। बंगाल की राजनीति में बड़ा परिवर्तन हुआ है, जहां ऐतिहासिक जीत के साथ भाजपा की पहली बार सरकार बनने का रास्ता साफ हो गया है। पार्टी ने 200 के आंकड़े को भी पार कर लिया और ममता बनर्जी की पार्टी दो अंकों में सिमट गई। वहीं तमिलनाडु में अभिनेता से नेता बने विजय की पार्टी टीवीके चमत्कारिक प्रदर्शन करते हुए राज्य में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। केरलम में कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ को स्पष्ट बढ़त मिली है, जबकि असम और पुडुचेरी में भाजपा ने अपनी सत्ता बरकरार रखी है। इन चुनावों ने राष्ट्रीय राजनीति में भाजपा की बढ़ती ताकत, क्षेत्रीय दलों की चुनौतियां और कांग्रेस की सीमित वापसी को स्पष्ट रूप से सामने रखा है। खास बात यह है कि ममता बनर्जी व एमके स्टालिन सत्ता गंवाने के साथ अपनी सीट भी नहीं बचा पाए। केरलम के सीएम विजयन जीतने में सफल रहे। असम के सीएम हिमंत बिस्वा सरमा ने जीत दर्ज कर अपना कद और बढ़ा लिया। वहीं, केरलम में एलडीएफ की हार के साथ देश में सत्ता से वाम दलों का सफाया हो गया है।

बंगाल की राजनीति में यह चुनाव निर्णायक मोड़ माना जा रहा है। लंबे समय से सत्ता में रही तृणमूल कांग्रेस इस बार सौ के आंकड़े तक भी नहीं पहुंच सकी। सीमावर्ती, आदिवासी व औद्योगिक क्षेत्रों में भाजपा को व्यापक समर्थन मिला, जबकि तृणमूल कांग्रेस शहरी व कुछ ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित रह गई। चुनाव प्रचार के दौरान ध्रुवीकरण, मतदाता सूची और ईवीएम सुरक्षा जैसे मुद्दों ने माहौल को तनावपूर्ण बनाए रखा। हार के बाद ममता ने मतगणना प्रक्रिया पर सवाल उठाए हैं। सुवेंदु अधिकारी अपनी दोनों सीटें भवानीपुर और नंदीग्राम से जीतने में कामयाब रहे। पिछली बार नंदीग्राम से ममता बनर्जी को हराने वाले सुवेंदु ने इस बार भवानीपुर से तृणमूल सुप्रीमो को हरा दिया।

तमिलनाडु में 234 सीटों के चुनाव में विजय की पार्टी टीवीके ने सबसे बड़ा उलटफेर किया। बहुमत के लिए जरूरी 118 सीटों के आंकड़े की ओर बढ़ते हुए टीवीके ने द्रविड़ राजनीति के पारंपरिक द्विध्रुव को तोड़ दिया है। द्रमुक एवं अन्नाद्रमुक दोनों ही पीछे छूट गए। मुख्यमंत्री एमके स्टालिन अपनी सीट तक नहीं बचा सके। विजय की नई छवि, संतुलित बयानबाजी और लोकलुभावन वादों ने मतदाताओं को आकर्षित किया है।

केरलम में दस वर्षों के बाद सत्ता परिवर्तन के संकेत स्पष्ट हैं। कांग्रेस नेतृत्व वाले यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) ने बहुमत की ओर बढ़त बनाई है। यहां लंबे समय से वामपंथी एलडीएफ की राजनीति मजबूत थी, जो इस बार पिछड़ गया। नतीजे बता रहे हैं कि कांग्रेस को सुकून से सरकार बनाने-चलाने के लिए सहयोगी इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग के समर्थन पर निर्भर रहना पड़ेगा। भाजपा ने राज्य में पहली बार तीन सीटें हासिल की है और दो पूर्व केंद्रीय मंत्री वी. मुरलीधरन, राजीव चंद्रशेखर चुनाव जीत गए हैं। राज्य में एलडीएफ के 21 में से 13 मंत्री चुनाव हार गए, हालांकि मुख्यमंत्री पी. विजयन जीत गए हैं। हार के बाद उन्होंने राज्यपाल को अपना इस्तीफा सौंप दिया।

असम में भाजपा ने लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी कर अपनी पकड़ और मजबूत कर ली है। 126 सीटों वाली विधानसभा में पार्टी ने सहयोगियों के साथ मिलकर स्पष्ट बहुमत प्राप्त कर लिया है। हिमंत बिस्व सरमा के नेतृत्व में सरकार ने विकास कार्यों और घुसपैठ के मुद्दे पर निर्णायक काम किया था। कांग्रेस के मुख्यमंत्री पद के दावेदार गौरव गोगोई हार गए। वहीं हिमंत ने छठी बार जीत हासिल की है। भाजपा ने चुनाव के दौरान सहयोगी दलों के साथ संतुलन बनाए रखा, जिससे पुडुचेरी में भी राजग ने अपना प्रदर्शन दोहराते हुए सत्ता बरकरार रखी।

जनादेश >> पेज 3, 4 व 5

बीरभूम जिले के बोलपुर में सोमवार को भाजपा की जीत का जश्न मनाते पार्टी कार्यकर्ता। आइएएनएस

> बंगाल की जनता को नमन। यह समर्थन उन लोगों के प्रति करारा जवाब है जो भय फैलाते हैं, तुष्टीकरण करते हैं और घुसपैठियों को संरक्षण देते हैं। यह टीएमसी के भय के मुकाबले प्रधानमंत्री मोदी के प्रति जनता के विश्वास की जीत है। -**अमित शाह**, केंद्रीय गृह मंत्री

> शतक के साथ हैट-ट्रिक! यह एक सत्ताधारी गठबंधन के लिए अभूतपूर्व जीत है। यह सरकार के अच्छे कामों और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस पूर्वोत्तर राज्य के विकास पर जोर का नतीजा है। - **हिमंत बिस्वा सरमा**, असम के मुख्यमंत्री

> मैंने अपने सार्वजनिक जीवन में कई जीत और हार देखी हैं। मैं जनता के फैसले के आगे नतमस्तक हूं। द्रमुक अब राज्य में अच्छे विपक्षी दल के तौर पर काम करेगी। **एमके स्टालिन**, द्रमुक अध्यक्ष व तमिलनाडु के सीएम

पुडुचेरी में फिर जीता राजग

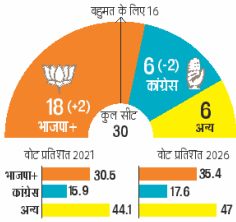

बंगाल में हिंसा के अंतहीन चक्र को खत्म करें : मोदी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

बंगाल में भाजपा की प्रचंड जीत के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सभी दलों से हिंसा के अंतहीन चक्र को हमेशा के लिए खत्म करने की अपील की। बंगाल में तृणमूल, तमिलनाडु में द्रमुक, केरलम में एलडीएफ की हार के लिए उनके महिला आरक्षण के विरोध को जिम्मेदार ठहराते हुए उन्होंने कहा कि आगामी चुनावों में कांग्रेस व सपा को भी माताओं व बेटियों के आक्रोश का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने पूरे देश से नकारे जा चुके वामपंथियों को अपनाने को लेकर कांग्रेस को आड़े हाथों भी लिया।

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणामों के बाद भाजपा मुख्यालय में पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने बंगाल की जनता को हिंसा मुक्त राजनीति का बड़ा संदेश दिया। उन्होंने साफ किया कि प्रचंड जीत के बावजूद भाजपा बदले की कार्रवाई के बजाय बदलाव और राज्य के विकास को तरजीह देगी। कहा कि किसने किसको वोट दिया है, यह देखने के बजाय सभी को मिलकर बंगाल की सेवा के लिए काम करना चाहिए। उन्होंने हिंसा, डर और निर्दोष लोगों की मौत से रहित चुनाव को अहम बताते हुए कहा कि पहली बार डर नहीं, लोकतंत्र जीता है।

मोदी ने उत्तराखंड के गंगोत्री से लेकर बंगाल के गंगासागर यानी गंगा के उद्गम से लेकर समुद्र में मिलने तक सभी राज्यों में भाजपा व राजग सरकार बनने को मां गंगा का आशीर्वाद बताया। असम में भाजपा की तीसरी बार और पुडुचेरी में राजग की दूसरी बार सरकार बनने के पीछे सुशासन की नीति को श्रेय दिया।

बंगाली शैली में धोती-कुर्ता पहन भाजपा मुख्यालय गए प्रधानमंत्री

नई दिल्ली, एएनआइ : बंगाल में भाजपा की जीत के बाद पीएम नरेन्द्र मोदी सोमवार की शाम भाजपा मुख्यालय पहुंचे। सामाजिक और राजनीतिक संदेश देने के लिए अपने पहनावे का उपयोग करने के लिए प्रसिद्ध मोदी पारंपरिक बंगाली परिधान में पार्टी मुख्यालय पहुंचे। इस दौरान उन्होंने मशहूर बंगाली परिधान धोती-कुर्ता पहन रखा था। यह पहनावा एक पोशाक से कहीं अधिक, सांस्कृतिक एकता का प्रतीक था।

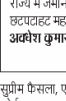

संपादकीय

राष्ट्रीय राजनीति को बदलने वाले नतीजे: पांच राज्यों के जनादेश से जहां भाजपा और मजबूत होगी, वहीं तृणमूल, द्रमुक और वाम दलों की हार से विपक्षी दलों का मोर्चा न केवल कमजोर होगा, बल्कि उसका संतुलन भी बदलेगा। **राहुल वर्मा** का विश्लेषण।

बंगाल में भाजपा ने किया कमाल: बंगाल के परिणाम से वही चकित हैं, जो राज्य में जमीनी सच्चाई और एक वर्ग की छटपटाहट महसूस नहीं कर रहे थे। **अवधेश कुमार** का दृष्टिकोण।

• पेज-8

सुप्रीम फैसला, एफआइआर के लिए सीधे हाई कोर्ट का रुख नहीं पेज>>10

डाक्टर की मौत के बाद कानूनी वारिसों पर चल सकता है लापरवाही का केस : सुप्रीम कोर्ट

- शीर्ष कोर्ट ने कहा, ये असाधारण मामला, ऐसे केस कम होने से इस कानून का न्यूनतम इस्तेमाल होता है

नई दिल्ली, प्रेट्र: सुप्रीम कोर्ट ने एक अहम फैसले में साफ किया है कि अगर किसी डाक्टर पर चिकित्सा लापरवाही का केस चल रहा हो तो उसकी मौत के बाद भी मामला खत्म नहीं होता। ऐसे में डाक्टर के परिवार (कानूनी वारिसों) को मुकदमे में शामिल कर सुनवाई जारी रखी जा सकती है। कोर्ट ने साफ किया कि इसका मतलब यह नहीं है कि परिवार को अपने आप दोषी मान लिया जाएगा, बल्कि उनकी जिम्मेदारी इस बात पर तय होगी कि केस में क्या सुबूत और तथ्य सामने आते हैं।

जस्टिस जेके माहेश्वरी और जस्टिस एएस चंदुरकर की पीठ ने इसे असाधारण मामला मानते हुए कहा कि 'मुकदमा करने का अधिकार' केवल व्यक्ति के साथ खत्म नहीं हो जाता। इसका मतलब है कि पीड़ित को न्याय पाने की प्रक्रिया जारी रखने का अधिकार बना रहता है, भले ही आरोपित डाक्टर का निधन हो चुका हो।

कोर्ट ने सीपीसी के आदेश 22, नियम चार और उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 व 2019 के प्रविधानों का हवाला देते हुए कहा कि डाक्टर की मृत्यु के बाद उसके कानूनी वारिसों को रिकार्ड में लाया जा सकता है। अदालत ने यह भी कहा कि भारत में ऐसे मामलों की संख्या कम होने के कारण यह कानून इतिहास के पन्नों में कहीं गुम सा हो गया था।

फैसले का असर सड़क हादसों व अन्य मुआवजा मामलों पर भी पड़ेगा

आपरेशन के बाद महिला की आंख की चली गई थी रोशनी पेज>>6

विमर्श

बंगाल की राजनीति का नवीन ध्रुवीकरण: बंगाल विधानसभा चुनाव परिणाम में भाजपा को लगभग दो-तिहाई बहुमत प्राप्त हुआ है। **प्रो. कुंवर प्रांजल सिंह** का विश्लेषण।

एआइ से आगे का चरण: तमाम क्षेत्रों में एआइ का प्रयोग सामान्य होने के बावजूद इसकी कई सीमाएं हैं। इसे आगे बढ़ाने के लिए एआइ के अगले चरण के तौर पर कंपनियां तकनीकी रणनीति बना रही हैं। **मनीश कुमार झा** का आलेख। • पेज-9

बदला लेने की साजिश में 12 को सजा

जामनगर : जामनगर के एक कोर्ट ने 1993 में हथियार तस्करी की साजिश से जुड़े एक मामले में 12 लोगों को सजा सुनाई। यह मामला अयोध्या के विवादित ढांचा विध्वंस का बदला लेने को रची गई साजिश से जुड़ा है। (**पेज-7**)

द्रविड़ राजनीति से हताशा, तमिलनाडु में विकल्प की 'विजय'

तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में मिली जीत के बाद सोमवार को चेन्नई में प्रसन्न मुद्रा में तमिलागा वेत्रि कषगम (टीवीके) समर्थक। एपी

जितेंद्र शर्मा • जागरण

- 59 वर्षों बाद द्रविड़ दलों की मुट्ठी से निकला तमिलनाडु, राजनीतिक परिपाटी पर टीवीके का 'ब्लाकबस्टर ब्रेक'
- एमजीआर, करुणानिधि व जयललिता जैसे दिग्गजों के बाद राजनीतिक शिखर पर फिर फिल्मी सितारा
- परिवारवाद पर भी कड़ा प्रहार है स्वयं सीएम स्टालिन की हार, अगले पांच वर्ष तय करेंगे भविष्य की राह

नई दिल्ली: द्रमुक गया तो अन्नाद्रमुक आया और अन्नाद्रमुक गया तो फिर द्रमुक के हाथ में सत्ता...। दक्षिण भारत के प्रमुख राज्य तमिलनाडु में लगभग छह दशकों से चली आ रही इस राजनीतिक परिपाटी पर आखिरकार अभिनेता से नेता बने जोसेफ विजय ने 'ब्लाकबस्टर ब्रेक' लगा दिया। स्पष्ट बहुमत से कुछ कदम पीछे रह जाने के बावजूद टीवीके की जीत ऐतिहासिक है, क्योंकि 59 वर्षों बाद पहली बार कथित द्रविड़ माडल पर राजनीति करने वाले दलों की मुट्ठी से राज्य बाहर निकला है। पहली बार चुनावी मैदान में उतरे विजय की सफलता उस उम्मीद भरे विकल्प की विजय है, जिसके लिए राज्य के मतदाताओं में छटपटाहट थी। स्वयं मुख्यमंत्री एमके स्टालिन सहित द्रमुक की हार और अन्नाद्रमुक को इस तरह खारिज कर दिया जाना उन राष्ट्रीय दलों के लिए भी भविष्य में संभावनाओं की राह खोल सकता है, जिन्हें द्रविड़ माडल में कदम रखने तक का अवसर इतने वर्षों में नहीं मिला। वर्ष 1967 में तमिलनाडु ने पहली बार द्रविड़ माडल के शिल्पकार पेरियार के अनुयायी और द्रमुक संस्थापक सीएन अन्नादुरई मुख्यमंत्री बने थे। उसके बाद न कांग्रेस लौटी और न ही भाजपा या कोई अन्य राष्ट्रीय दल अपनी जगह बना पाया।

तमिल राजनीति में द्रमुक और अन्नाद्रमुक बने रहे दो ध्रुव पेज>>5

सियासी समीकरण

राज्य की सत्ता के परिणाम ने राष्ट्रीय समीकरणों को झकझोरा, विपक्षी नेतृत्व, 2029 की रणनीति और पड़ोसी रिश्तों पर दूरगामी असर

बंगाल से दीदी की विदाई, राजनीति में नई अंगड़ाई

जयकृष्ण वाजपेयी, जागरण • कोलकाता

- ममता का किला दरकना विपक्ष के लिए बड़ा झटका, भाजपा को पूर्व में मिली नई ऊर्जा
- ढाका तक बंगाल चुनाव के नतीजे का अंतरराष्ट्रीय रिश्तों पर दिखेगा बड़ा प्रभाव

बंगाल की राजनीति में आए इस महाभूकंप ने केवल नवान्न (राज्य सचिवालय) का पता नहीं बदला है, बल्कि इसने दिल्ली के सत्ता गलियारों में भी नई इबारत लिख दी है। ममता बनर्जी, जो कल तक खुद को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सबसे मुखर और बड़ी राष्ट्रीय प्रतिद्वंद्वी के रूप में पेश कर रही थीं, आज अपनी सियासी जमीन बचाने के संघर्ष में पिछड़ गई हैं। बंगाल विधानसभा चुनाव 2026 के इन नतीजों ने यह साफ कर दिया है कि राष्ट्रीय राजनीति में अब ममता का कद वह नहीं रहेगा, जो 2021 विधानसभा और 2024 लोकसभा चुनाव में जीत के बाद बना था। यह हार केवल तृणमूल कांग्रेस की हार नहीं, बल्कि 'विपक्ष का चेहरा' बनने की उनकी महत्वाकांक्षा का भी अवसान है। सत्ता में आए बदलाव ने न केवल बंगाल की राजनीति को पुनर्परिभाषित किया है, बल्कि राष्ट्रीय विपक्ष की संरचना और उसकी दिशा पर भी निर्णायक प्रभाव डाला है।

कोलकाता में सोमवार को मतगणना को लेकर जारी वीडियो संदेश में बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी। आइएएनएस

अंतरराष्ट्रीय रिश्तों की नई पटकथा

बंगाल की जीत का असर सीमा पार बांग्लादेश तक महसूस किया जा रहा है। अभी एक्जिट पोल आने के बाद ही बांग्लादेश के संसद में चर्चा शुरू होने के साथ वहां के सांसद घुसपैठिये और मुस्लिमों के मुद्दे उठाने लगे थे। अब नतीजे आने के बाद वहां क्या स्थिति होगी यह समझा जा सकता है। अब तक ममता का 'क्षेत्रीय हित' तीस्ता जल समझौते और गंगा जल बंटवारे जैसे संवेदनशील मुद्दों में सबसे बड़ी बाधा बना हुआ था। केंद्र की भाजपा सरकार अब राज्य और केंद्र में एक ही दल की सरकार (डबल इंजन) होने के कारण बांग्लादेश के साथ इन लंबित समझौतों पर अधिक निर्णायक तरीके से आगे बढ़ सकेगी।

राहुल गांधी के लिए 'वरदान' बनी ममता की हार : अगर ममता इस चुनाव में चौथी बार जीत दर्ज करतीं तो राष्ट्रीय राजनीति में उनकी भूमिका और मजबूत होती। वह विपक्षी गठबंधन के भीतर एक वैकल्पिक नेतृत्व के रूप में फिर से उभर सकती थीं, जिससे राहुल गांधी के नेतृत्व पर सवाल और तीखे होते। अब तक ममता और उनके सिपहसालार बार-बार राहुल के नेतृत्व पर सवाल उठाते रहे हैं। परंतु, अब गठबंधन की बैठकों में ममता का बढ़ता दबाव और राहुल को आइएनडीआइए से किनारे करने की कोशिशें अब इतिहास का हिस्सा बनती दिख रही हैं। बंगाल में ममता बनर्जी के कमजोर होते ही राहुल गांधी के लिए विपक्षी नेतृत्व की राह में सबसे बड़ा रोड़ा हट गया है। अब सहयोगी दल राहुल गांधी को चुनौती देने की स्थिति में नहीं होंगे, जिससे कांग्रेस को विपक्षी धुरी बने रहने का मौका मिल गया है।

2029 का द्वार-भाजपा के लिए 'मिशन 42' हुआ आसान पेज>>3

4 मई को दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने एटीएम मशीनों को गैस कटर से काटकर कैश चोरी करने वाले एक अंतरराज्यीय गिरोह का भंडाफोड़ कर राबिन नाम के बदमाश को गिरफ्तार किया है। वह पलवल का रहने वाला है।

आज का मौसम

बादल छाए रहेंगे। 20 से 30 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चलने के साथ हल्की वर्षा होने के भी आसार हैं।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
दिल्ली		
5 मई	33.0	19.0
6 मई	36.0	21.0
नोएडा		
5 मई	33.0	21.0
6 मई	35.0	21.0
गुरुग्राम		
5 मई	38.0	25.0
6 मई	39.0	24.0

डिग्री सेल्सियस में

न्यूज गैलरी

आज भी दिल्ली में तेज हवा के साथ हल्की वर्षा के आसार

नई दिल्ली: मंगलवार को भी राजधानी में मौसम का मिजाज बदला रहेगा। गर्मी के तेवर भी हल्के ही रहेंगे। दिन भर बादल छाए रहेंगे। गर्जन वाले बादल बनने, बिजली चमकने और 20 से 30 किमी प्रति घंटे की गति से हवा चलने के साथ साथ हल्की वर्षा होने के भी आसार हैं। इससे तापमान भी कम ही रहेगा। अधिकतम तापमान 33 डिग्री और न्यूनतम 19 डिग्री के आसपास रह सकता है। (राब्यू)

एनसीआर से हटाए गए ग्रेप एक के प्रतिबंध

नई दिल्ली: वायु गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार के बाद दिल्ली समेत एनसीआर में ग्रेप-एक के सभी प्रतिबंध हटा दिए गए हैं। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने कहा कि अनुकूल मौसम स्थितियों के कारण सोमवार को राजधानी का एक्यूआइ महज 88 दर्ज किया गया। इसे संतोषजनक श्रेणी में रखा जाता है। (राब्यू)

महापौर कार्यालय को फिर मिली बम से उड़ाने की धमकी

नई दिल्ली: दिल्ली नगर निगम के महापौर कार्यालय को सोमवार को एक बार फिर बम उड़ाने की धमकी भरा ईमेल मिला। सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस के अलावा दमकल विभाग, बम स्क्वाड मौके पर पहुंची और गहन तलाशी अभियान चलाया। कुछ भी संदिग्ध वस्तु न मिलने पर इसे हाक्स करार दिया गया। सोमवार सुबह 09 :19 बजे अज्ञात स्रोत से ई-मेल के जरिये दोपहर 03 :11 बजे बम विस्फोट करने की धमकी दी गई। बता दें कि इससे पहले एक अप्रैल को भी महापौर कार्यालय को उड़ाने की धमकी भरा ईमेल मिला था। (जासं)

मेडिकल कालेजों में दाखिले के लिए ठगने वाला गिरोह पकड़ा

गिरोह के मास्टरमांइड और एक डाक्टर समेत चार आरोपित किए गिरफ्तार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

संतोष कुमार।

विनोद भाई पटेल।

संत प्रताप सिंह।

अखलाक आलम।

दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने एक ऐसे संगठित गिरोह का पर्दाफाश किया है जो नीट 2026 के अभ्यर्थियों और उनके अभिभावकों को मेडिकल कालेजों में दाखिला दिलाने का झांसा देकर ठग रहा था। पुलिस ने मास्टरमाइंड और डाक्टर समेत चार आरोपित को गिरफ्तार किया है। इनके नाम संतोष कुमार जायसवाल (मास्टरमाइंड), डा. अखलाक आलम उर्फ गोल्डन आलम, संत प्रताप सिंह और विनोद भाई पटेल हैं। इनके पास से 149 पेज के फर्जी प्रश्न-उत्तर दस्तावेज, पीड़ितों के हस्ताक्षरित ब्लैंक चेक और मूल शैक्षणिक प्रमाणपत्र बरामद किए गए हैं। साथ ही गिरोह के चंगुल से 18 छात्रों (जिनमें कुछ नाबालिग भी शामिल हैं) को सुरक्षित बचाया गया है।

डीसीपी क्राइम ब्रांच संजीव कुमार यादव के मुताबिक दो मई को सूरत के पुलिस कमिश्नर अनुपम सिंह गहलोत ने दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच को एक संदिग्ध मोबाइल नंबर के बारे में जानकारी दी। सूचना मिली थी कि एक व्यक्ति दिल्ली में रहकर नीट के जरिये एडमिशन दिलाने के नाम पर संदिग्ध गतिविधियां चला रहा है। इस पर एडिशनल पुलिस कमिश्नर (क्राइम, सूरत) करणराज वाघेला व एसीपी सतेंद्र मोहन के नेतृत्व में इंस्पेक्टर सुनील कालखंडे, यशेंद्र सिंह व महिपाल सिंह की टीम बनाई गई। टीम को एक आरोपित की लोकेशन महिपालपुर एक्सटेंशन में मिली। इसके बाद महिपालपुर के करीब 100 होटलों में सर्च आपरेशन चलाया गया। तब जाकर एक होटल से विनोद भाई पटेल को पकड़ लिया गया।

पूछताछ में पता चला कि उसने छात्रों को परीक्षा के जरूरी सवाल देने के बहाने उनके माता-पिता से दूर किसी अज्ञात जगह पर रखा हुआ है। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए गाजियाबाद के मनीपाल अस्पताल के पास से संतोष कुमार जायसवाल को गिरफ्तार कर उसके साथ रह रहे तीन छात्रों को बरामद किया। इसके बाद गाजियाबाद के एक फ्लैट पर छापा मारकर गया, जहां 15 और छात्र मिले। ये छात्र तीन मई को परीक्षा में बैठने वाले थे। पुलिस ने उनकी काउंसलिंग की और उन्हें परीक्षा देने की अनुमति दी। वहीं से संत प्रताप सिंह और डा. अखलाक आलम को भी दबोचा गया।

पूछताछ में पता चला कि मूलरूप से पटना का रहने वाला संतोष कुमार मास्टरमाइंड है। वह पटना में एक पैथोलाजी लैब चलाता था। डा. अखलाक आलम ने किर्गिस्तान से एमबीबीएस किया है और वर्तमान में भारत में प्रैक्टिस के लिए नेशनल मेडिकल काउंसिल की परीक्षा की तैयारी कर रहा था। वह कई वर्षों के सवालों और बड़े कोचिंग संस्थानों के नोट्स मिलाकर फर्जी प्रश्न पत्र तैयार करता था।

संत प्रताप सिंह पुणे से बीटेक पास है और उसने गाजियाबाद के अपने फ्लैट पर छात्रों के ठहरने और मीटिंग का इंतजाम किया था। विनोद भाई पटेल सूरत में ब्रोकर का काम करता था और गुजरात से भोले-भाले छात्रों और उनके परिवारों को 20 से 30 लाख रुपये में सीट दिलाने का लालच देकर दिल्ली लाता था। ये लोग टोकन मनी के तौर पर रुपये, 10वीं-12वीं की ओरिजिनल मार्कशीट और ब्लैंक चेक ले लेते थे।

घर बैठे कमाई का लालच देकर ठगने वाला वेटरनरी छात्र धरा

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- इंस्टाग्राम पर हैंडराइटिंग वर्क का विज्ञापन देखकर लोगों को फंसाते थे, आरोपित के फरार एक दोस्त की तलाश में पुलिस

घर बैठे कमाई करने का लालच देकर ठगी करने वाले एक गिरोह का मध्य जिला की साइबर सेल थाना पुलिस ने भंडाफोड़ कर एक आरोपित को गिरफ्तार किया है। उसे राजस्थान के करौली से गिरफ्तार किया गया है। वह वेटरनरी साइंस (पशु चिकित्सा) का छात्र है। यह गिरोह इंस्टाग्राम पर विज्ञापन देकर बेरोजगार युवाओं और घर से काम चाहने वाले लोगों को शिकार बनाता था।

डीसीपी मध्य जिला रोहित राजबीर सिंह के मुताबिक, सीताराम बाजार के रहने वाले युवक ने इंस्टाग्राम पर 'हैंडराइटिंग वर्क' (लिखाई का काम) का एक विज्ञापन देखा। घर बैठे पैसे कमाने की चाह में पीड़ित ने दिए गए नंबर पर संपर्क किया। जालसाजों ने उसे भरोसे में लेकर अलग-अलग शुल्कों के नाम पर पैसे ऐंठने शुरू कर दिए। पंजीकरण शुल्क के रूप में 500 रुपये, सामग्री शुल्क 1987, जीएसटी 1755 और खाता सत्यापन शुल्क 3788 रुपये वसूल लिए। जालसाज पीड़ित को फंसाने के लिए बार-बार पेमेंट फेल हो जाने की बात बताता रहा या '0.71 पैसे' जैसी मामूली राशि बकाया है, जिसके बिना आइडी एक्टिवेट नहीं होगी, ऐसे करके 4509.95 रुपये ठग लिए। शिकायत पर केस दर्ज कर साइबर थानाप्रभारी इंस्पेक्टर योगराज दलाल के नेतृत्व में टीम ने यूपीआइ आइडी का पता लगाया। इंस्टाग्राम आइडी और मोबाइल नंबरों की जांच कर पुलिस करौली जा पहुंची। वहां से छात्र अनुज मीणा को गिरफ्तार कर लिया। उसने दोस्त गणेश शर्मा के साथ मिलकर यह सेटअप बनाया था। ये लोग मेटा को पैसे देकर इंस्टाग्राम पर अपने फर्जी विज्ञापनों को बूस्ट करवाते थे, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसे देखें। गणेश आनलाइन प्रोफाइल व ठगी का काम संभालता था, जबकि अनुज ने अपने नाम पर सिम कार्ड लिया था और अपने बैंक खातों का इस्तेमाल ठगी की रकम मंगाने के लिए करता था। जांच में पता चला है कि आरोपित के खिलाफ बैंक आफ बड़ौदा खाते से सूरत में भी एक शिकायत दर्ज हुई थी। पुलिस गणेश शर्मा को तलाश रही है।

जीएसटी वसूली लक्ष्य से कम, नान-जीएसटी राजस्व बढ़ा

राज्य ब्यूरो, जागरण, नई दिल्ली: दिल्ली सरकार मौजूदा वित्त वर्ष में अपने नान-जीएसटी राजस्व को बढ़ाने में कामयाब रही है। स्टाम्प ड्यूटी, आबकारी और वाहन पंजीकरण वसूली ने 2025-26 में संशोधित अनुमानों में तय लक्ष्य को पार कर लिया। अधिकारियों के मुताबिक पिछले साल लक्ष्य आधारित रणनीति और साफ नीति निर्देशों की वजह से बढ़ा हुआ राजस्व हासिल किया गया।

दिल्ली सरकार की मौजूदा गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स (जीएसटी) वसूली 36,629.54 करोड़ रुपये रही है, जो लक्ष्य से कम है। जबकि 2025-26 का माडिफाइड रिवाइज्ड एस्टिमेट्स (एमआरई) 40,000 करोड़ रुपये था। यानी यह वसूली लक्ष्य का 91 प्रतिशत ही रही। एमआरई डेटा में वैट वसूली लक्ष्य के 7,500 करोड़ रुपये के मुकाबले 7,148.52 करोड़ रुपये रही। हालांकि अप्रैल की जीएसटी वसूली राशि पिछले साल की तुलना में 39 प्रतिशत बढ़ी है।

पिछले साल अप्रैल महीने में जीएसटी की वसूली करीब 3161 करोड़ रुपये थी, जो इस बार करीब 4379 करोड़ रुपये रही। ववहीं वित्त वर्ष 2026-27 के बजट में सरकार ने स्टाम्प ड्यूटी से 11,000 करोड़ रुपये, आबकारी से 7,200 करोड़ रुपये और वाहन टैक्स वसूली से 3,800 करोड़ रुपये का लक्ष्य रखा है।

शिक्षा निदेशालय ने बायोमीट्रिक हाजिरी अनिवार्य की, देर से आने पर कार्रवाई

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- शिक्षा निदेशालय के मुख्यालय, क्षेत्रीय व जिला कार्यालयों और सरकारी स्कूलों में लागू होगी यह व्यवस्था
- प्रधानाचार्यों को कर्मचारियों की उपस्थिति की निगरानी करने व समय की पाबंदी सुनिश्चित करने के निर्देश

शिक्षा निदेशालय ने कर्मचारियों की समयबद्धता और उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए बायोमीट्रिक हाजिरी प्रणाली को अनिवार्य कर दिया है। निदेशालय ने स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि अब सभी अधिकारी और कर्मचारी केवल बायोमीट्रिक हाजिरी के जरिये ही अपनी उपस्थिति दर्ज करेंगे। जो भी स्टाफ देर से आएगा, उसके खिलाफ कड़ी कारवाई की जाएगी।

निदेशालय ने कहा कि यह फैसला दिल्ली सरकार के उस आदेश के बाद लिया गया है, जिसमें सभी विभागों को बायोमीट्रिक हाजिरी प्रणाली लागू करने और उसे सुचारु रूप से चलाने के निर्देश दिए गए थे। अब यह व्यवस्था शिक्षा निदेशालय के मुख्यालय, क्षेत्रीय, जिला कार्यालयों और सरकारी स्कूलों में लागू होगी। निर्देश में कहा गया है कि सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का बायोमीट्रिक सिस्टम में पंजीकरण अनिवार्य होगा। इसके साथ ही अतिरिक्त मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव, सचिव और विभागाध्यक्ष समेत सभी को अपनी उपस्थिति इसी माध्यम से दर्ज करनी होगी। प्रधानाचार्यों को नियमित रूप से कर्मचारियों की उपस्थिति की निगरानी करने और समय की पाबंदी सुनिश्चित करने के लिए कहा गया है।

अब तक कोरोना काल और तकनीकी समस्याओं के चलते कई जगहों पर बायोमीट्रिक सिस्टम बंद या ढीले तरीके से लागू था। कई कार्यालयों में मैनुअल रजिस्टर या वैकल्पिक तरीकों से उपस्थिति दर्ज की जा रही थी, जिससे समय पर आने-जाने की सख्ती कम हो गई थी। निदेशालय के अधिकारियों के मुताबिक बायोमीट्रिक हाजिरी के दोबारा लागू होने से समय उपस्थिति बेहतर होगी।

घटना ने दी असहनीय पीड़ा, इस इमारत में अब नहीं रहेंगे

सौरभ पांडेय • जागरण

- विवेक विहार बी-13 में रहने वाले लोग बोले, नहीं आ रही रात को नींद
- आंखों में आ रहा भयावह मंजर, पीड़ित परिवारों ने ली रिश्तेदारों के घर शरण

विवेक विहार में आग से प्रभावित मकान से लोग बचा सामान निकाल कर ले जाते दिखे। पारस कुमार

नई दिल्ली : विवेक विहार की बी-13 इमारत के आसपास सोमवार को भी हवा में जलने की गंध आ रही थी। वहीं इमारत में रहने वाले लोगों के दिलों में अपनों को खोने का दर्द दिखाई दिया। हादसे में जान गंवाने वाले तीनों परिवारों के सदस्यों का अंतिम संस्कार होने के बाद सोमवार सुबह शोकसभा हुई। इसमें बड़ी संख्या में स्थानीय लोग शामिल हुए। इमारत में रहने वाले पीड़ित परिवारों के लोगों ने सीधे कहा, इस इमारत ने बहुत दर्द दिया है, यहां अब नहीं रहना है।

हादसे के बाद इमारत में रहने वाले अधिकांश लोगों ने घर छोड़ दिए हैं। कई लोग रिश्तेदारों के यहां शिफ्ट हो गए हैं, जबकि कुछ ने पास के होटलों में अस्थायी ठिकाना बनाया है। आगे के हिस्से में चौथी मंजिल पर बने फ्लैट में रहने वाले डा. सुधीर मित्तल ने कहा कि जो घटना कल हुई, वैसा मंजर कभी नहीं देखा। जिस इमारत में नौ लोगों की जान चली गई, वहां अब नहीं रहना है। उन्होंने यह भी बताया कि पिछले हिस्से की सुरक्षा के लिए बिल्डर ने ही ग्रिल लगाकर दीं थीं। वहां लोगों ने गार्डन बना रखा था। उन्होंने 2016 में फ्लैट खरीदा था और 2017 में बिल्डिंग का काम पूरा हुआ और बाकी लोग रहने आए थे।

दमकल विभाग की कार्यप्रणाली पर उठाए सवाल : अरविंद जैन की बहू सोनाली जैन ने दमकल विभाग की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाए हैं। उनका आरोप है कि दमकल की गाड़ियां एक-एक कर मौके पर पहुंचीं, जिससे आग बुझाने में देरी हुई। यदि एकसाथ पर्याप्त संसाधन पहुंचते, तो शायद कुछ जानें बचाई जा सकती थीं। सोनाली ने कहा कि उनके फ्लैट में डिजिटल लाक नहीं था, सामान्य लाक था लेकिन फंस गया था। डा. सुधीर ने भी बताया कि उन्हें, उनकी पत्नी, बेटे और परिवार के अन्य सदस्यों को उतारने में 40-45 मिनट का समय लग गया। उन्हें सीढ़ियों और ट्राली क्रेन से नीचे उतारा गया। आग लगते ही वह दरवाजे की ओर भागे, जैसे ही दरवाजा खोला, वह जलता हुआ टूटकर नीचे गिर गया। सीढ़ियों से आग की लपटें उठ रही थीं। इसके बाद बेडरूम से बालकनी की ओर भागे और दरवाजे बंद कर दिए जिससे आग की लपटें उनकी ओर न बढ़ें। पहली मंजिल पर रहनेवाले कमल गोयल ने बताया कि रातभर आग का मंजर आंखों के सामने आता रहा। उन्होंने बताया कि दमकल की पहली गाड़ी का पानी पांच मिनट में ही खत्म हो गया। दूसरी गाड़ी का पाइप फट गया।

बिजली काटी गई इमारत की : कारणों का पता लगाने के लिए फोरेंसिक टीम ने मौके से साक्ष्य जुटाए। बिजली आपूर्ति करने वाली बीएसईएस की टीम भी घटनास्थल पर पहुंची और एहतियातन पूरी इमारत की बिजली काट दी गई।

एयरपोर्ट से लापता कुत्तों के मामले में पुलिस लापरवाही पर कोर्ट ने लगाई फटकार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : अदालत ने आइजीआइ एयरपोर्ट से लापता दो आवारा कुत्तों कद्दू और ब्राउनी के गायब होने के मामले में दिल्ली पुलिस की जांच पर सवाल उठाए हैं। अदालत ने कहा कि पुलिस अधिकारियों ने मामले की गंभीरता को समझते हुए समग्र जांच नहीं की। पटियाला हाउस स्थित अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रणव जोशी ने पुलिस की कार्यप्रणाली को लापरवाही भरा बताते हुए संयुक्त पुलिस आयुक्त (ट्रांसपोर्ट रेंज) को दोनों घटनाओं की नए सिरे से जांच कर रिपोर्ट दाखिल करने के निर्देश दिए हैं।

कोर्ट के सामने पेश स्टेटस रिपोर्ट में बताया गया कि टर्मिनल-तीन के सीसीटीवी फुटेज में एक व्यक्ति एक कुत्ते को बहलाकर वाहन में ले जाता दिखा। जांच में सामने आया कि यह व्यक्ति जेके कांट्रैक्टर्स से जुड़ा था। टर्मिनल-एक और टर्मिनल-तीन की घटनाओं को जोड़कर समग्र जांच करने और दोनों जगहों के सीसीटीवी सुरक्षित रखने को कहा गया था, लेकिन पुलिस ने इन निर्देशों का पालन नहीं किया।

पानी उपलब्धता बढ़ाने को लगाए 520 ट्यूबवेल

राज्य ब्यूरो, जागरण • नई दिल्ली

- मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने अधिकारियों के साथ की जल प्रबंधन की समीक्षा
- 28 जल आपातकालीन केंद्र स्थापित किए, टैंकरों की संख्या भी बढ़ाई

रेखा गुप्ता। फाइल

गर्मी में पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करना जल बोर्ड के लिए बड़ी चुनौती रहती है। प्रत्येक वर्ष कई क्षेत्रों में लोगों को जल संकट का सामना करना पड़ता है। मांग के अनुरूप जल की उपलब्धता नहीं बढ़ती है। क्षतिग्रस्त पाइपलाइन से रिसाव से पानी की बर्बादी भी होती है। जल उपलब्धता बढ़ाने के लिए 520 अतिरिक्त ट्यूबवेल लगाए गए हैं और वर्ष 2025-26 में 172 किमी पुरानी पाइपलाइन को बदला गया है।

पिछले माह दिल्ली जल बोर्ड ने समर एक्शन प्लान घोषित किया था। सोमवार को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने जल मंत्री प्रवेश वर्मा, मुख्य सचिव राजीव वर्मा और दिल्ली जल बोर्ड के अधिकारियों के साथ जल प्रबंधन की समीक्षा की। उन्होंने जल आपूर्ति से संबंधित शिकायतों का त्वरित समाधान सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। लापरवाही करने पर अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बताया कि ट्यूबवेल की संख्या 5834 से बढ़ाकर 6200 कर दी गई है। पानी की कमी वाले क्षेत्रों में टैंकर से पानी उपलब्ध कराया जाएगा। इसके लिए टैंकरों की संख्या 1166 से बढ़ाकर 1210 की गई है। 100 अतिरिक्त टैंकर रखे गए हैं, जिससे कि जरूरत पड़ने पर इनका उपयोग हो सके। 8700 की जगह अब 13,000 स्थानों पर टैंकर उपलब्ध होंगे। टैंकर फिलिंग स्टेशन की संख्या 198 से बढ़ाकर 202 कर दी गई है। 100 टैंकर भी तैयार रखे गए हैं। नई क्षेत्रों में अधिक टैंकर लगाए गए हैं।

उन्होंने कहा कि दिल्ली के सभी जलशोधन संयंत्रों (डब्ल्यूटीपी) सोनिया विहार, भागीरथी, चंद्रावल, वजीराबाद, हैदरपुर, नांगलोई, ओखला, बावाना और द्वारका से अधिकतम पानी मिल सके इसके लिए जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं। हरियाणा के साथ समन्वय स्थापित कर कच्चे पानी में अमोनिया स्तर की निगरानी की जा रही है। प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में संबंधित अधिकारियों की जिम्मेदारी, कालोनीवार जल आपूर्ति का समय, टैंकरों का रूट प्लान और संसाधनों आदि की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। दर्ज शिकायतें सीधे संबंधित जूनियर इंजीनियर को भेजी जाती हैं। सभी शिकायतों का सौ प्रतिशत फीडबैक लिया जाता है। इसके अलावा सेंट्रल कंट्रोल रूम व चैटबाट आधारित प्रणाली भी शुरू की गई है। विभिन्न क्षेत्रों में पीपीपी मोड पर विशेष काल सेंटर भी संचालित किए जा रहे हैं। पूरे शहर में 28 जल आपातकालीन केंद्र स्थापित किए गए हैं, जो रणनीतिक स्थानों पर स्थित हैं और 24 घंटे कार्यरत रहते हैं। सीएम ने अधिकारियों को द्वारका स्थित दूसरे 50 मिलियन गैलन प्रतिदिन (एमजीडी) क्षमता वाले जल शोधन संयंत्र और बवाना डब्ल्यूटीपी में दो एमजीडी क्षमता के रीसाइक्लिंग संयंत्र को शीघ्र शुरू करने का निर्देश दिया।

नोएडा में तीसरी मंजिल से कूदे युवक-युवती, युवक की मौत

जागरण संवाददाता, नोएडा : सेक्टर 24 थाना क्षेत्र के चौड़ा रघुनाथपुर गांव में तीन मंजिल मकान की छत से सोमवार तड़के करीब पौने चार बजे युवक-युवती नीचे कूद गए। युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि युवती की हालत गंभीर है। दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में उपचार चल रहा है। पुलिस ने दिल्ली युवती से बातचीत कर घटना जानने का प्रयास किया, लेकिन युवती दोनों के ऊपर से कूदने की जानकारी ही दे सकी। युवक की पहचान मेरठ के उल्देपुर गांव के पुनीत चौहान और युवती नोएडा रसूलपुर नवादा गांव की विद्या दास के रूप में हुई है।

नोएडा के चौड़ा रघुनाथपुर गांव में गजराज का तीन मंजिला मकान है। पत्नी की तबीयत खराब है। वह और बेटा देर रात घर पहुंचे थे। तड़के करीब पौने चार बजे छत पर हलचल हुई। उनका बेटा छत पर गया। इसी बीच अनजान युवक-युवती झगड़ा कर रहे थे। वे एकाएक छत से कूद गए। पहले युवक सड़क पर गिरा, जबकि युवती बिजली के तार से टकराते हुए सड़क पर गिरी।

रैगिंग करते हुए जूनियर छात्रा से मारपीट, वीडियो प्रसारित

जागरण संवाददाता, ग्रेटर नोएडा

- बेनेट यूनिवर्सिटी का बताया जा रहा प्रसारित वीडियो

इंटरनेट मीडिया पर सीनियर छात्राओं द्वारा जूनियर छात्राओं के रैगिंग करने का वीडियो प्रसारित हो रहा है। प्रसारित वीडियो बेनेट विश्वविद्यालय का बताया जा रहा है। वहीं इस मामले में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के छात्रों ने विश्वविद्यालय प्रबंधन को ज्ञापन सौंपकर घटना पर चिंता व्यक्त की है और निष्पक्ष जांच की मांग की है। वीडियो प्रसारित होने के बाद छात्र सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंता जताई है। प्रसारित वीडियो में छात्राओं के साथ मारपीट एवं अनुचित व्यवहार किया जा रहा है।

प्रसारित वीडियो में दिखाई दे रहा है कि एक लड़की को बैठाकर उसके साथ कुछ लड़कियां बदतमीजी करने के साथ मारपीट कर गालियां दे रही हैं। पूरे मामले में एबीवीपी ग्रेटर नोएडा इकाई ने विश्वविद्यालय पहुंचकर कुलपति एवं प्रशासन को ज्ञापन सौंपा। संगठन ने मांग की है कि दोषियों की शीघ्र पहचान कर कड़ी कार्रवाई की जाए। एबीवीपी के राष्ट्रीय मंत्री कसमा शर्मा, प्रांत मंत्री गौरव गौर ने कहा कि विश्वविद्यालयों में सुरक्षित, सम्मानजनक और भयमुक्त वातावरण सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है। ऐसी घटनाएं छात्रों के मनोबल को प्रभावित करती हैं, इसलिए प्रशासन को त्वरित और प्रभावी कदम उठाने चाहिए। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि समय रहते उचित कार्रवाई नहीं की गई, तो संगठन इस मुद्दे को आगे बढ़ाने के लिए बाध्य होगा। प्रांत संयोजक साविष्कार विश्वविद्यालय इकाई की उपाध्यक्ष हिताक्षी ठकराल ने रजिस्ट्रार अजय यादव से मांग कि एंटी-रैगिंग तंत्र को और अधिक सशक्त बनाया जाए। निगरानी व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाए व छात्र-छात्राओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ठोस एवं दीर्घकालिक कदम उठाए जाएं। वहीं प्रसारित वीडियो के बारे में जानकारी लेने के लिए विवि के मीडिया प्रभारी यशील जैन से संपर्क किया गया, तो उन्होंने मामले पर कुछ भी बोलने से इन्कार कर दिया।

एम्स दिल्ली

'इम्यून सिग्नेचर' से क्रोहन की सटीक पहचान संभव

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

क्रोहन डिजीज। फाइल

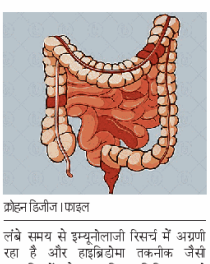

दिल्ली एम्स के शोध ने आंतों की टीबी और क्रोहन डिजीज के बीच अंतर और अलग पहचान को आसान कर दिया है। इसकी 'इम्यूनोलाजिकल सिग्नेचर' आधारित तकनीक ने अब जहां गलत पहचान का खतरा कम हुआ है, वहीं सही उपचार की उम्मीद बढ़ी है। विशेषज्ञों ने इसे क्लीनिकल डायग्नोसिस में उपयोगी बताया है।

विश्व इम्यूनोलाजी दिवस पर एम्स दिल्ली के गैस्ट्रोएंटेरोलाजी विभाग के प्रोफेसर विनीत आहूजा ने बताया कि दोनों बीमारियों के लक्षण अक्सर एक जैसे होते हैं, जिससे सही पहचान में दिक्कत आती है। इम्यून सिग्नेचर तकनीक से शरीर की इम्यून प्रतिक्रिया के पैटर्न को समझकर बीमारी की सटीक पहचान में मदद करती है, जिससे मरीजों को सही इलाज जल्दी मिल सकता है। बायोकेमिस्ट्री विभाग की विभागाध्यक्ष प्रोफेसर कल्पना लूथरा ने बताया कि संस्थान लंबे समय से इम्यूनोलाजी रिसर्च में अग्रणी रहा है और हाइब्रिडोमा तकनीक जैसी उपलब्धियों ने आधुनिक चिकित्सा को मजबूत आधार दिया है। अतिरिक्त प्रोफेसर प्रज्ञान आचार्य ने लिवर रोगों में इम्यून सिस्टम की भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

क्या होता क्रोहन : क्रोहन डिजीज आंतों की सूजन संबंधी बीमारी है, जिसमें शरीर का इम्यून सिस्टम पाचन तंत्र (खासकर छोटी और बड़ी आंत) पर हमला कर देता है। इससे आंतों में सूजन, दस्त, वजन कम होना व खून आना जैसी समस्याएं होती हैं।

आंतों की टीबी बनाम क्रोहन

आंतों की टीबी – क्रोहन

कारण : बैक्टीरिया (टीबी इन्फेक्शन) – इम्यून सिस्टम की गड़बड़ी

उपचार : एंटी-टीबी दवा – इम्यूनो-सप्रेसिव दवा

फैलाव : संक्रामक – संक्रामक नहीं

क्यों जरूरी है सही पहचान

गलत पहचान = गलत दवा

टीबी को क्रोहन समझना = इन्फेक्शन बढ़ा सकता है

क्रोहन को टीबी समझा = लंबा इलाज

'सुपर फैन' के इस्तेमाल से बचेगी बिजली, बिल हो जाएगा आधा

संजीव गुप्ता • जागरण

एनआरडीसी की 'सीलिंग फैन 2030' रिपोर्ट में रखा गर्मी से राहत के लिए विशेषज्ञों ने बड़ा 'ब्लूप्रिंट

- एनआरडीसी की 'सीलिंग फैन 2030' रिपोर्ट में रखा गर्मी से राहत के लिए विशेषज्ञों ने बड़ा 'ब्लूप्रिंट

नई दिल्ली: राष्ट्रीय राजधानी ही नहीं, देशभर में बढ़ते तापमान एवं बिजली की रिकार्ड मांग के बीच एक राहत भरी खबर सामने आई है। प्राकृतिक संसाधन रक्षा परिषद (एनआरडीसी) की नई रिपोर्ट 'सीलिंग फैन 2030' में एक विशेष माडल पेश किया गया है, जो न केवल मध्यवर्गीय परिवारों का बजट सुधारेगा बल्कि हीट एक्शन प्लान के बेहतर क्रियान्वयन में सहायता करेगा।

रिपोर्ट के मुताबिक, दिल्ली जैसे महानगरों में घरेलू बिजली की खपत का करीब 40 प्रतिशत हिस्सा केवल पंखों की भेंट चढ़ जाता है। 90 प्रतिशत घरों में इस्तेमाल हो रहे पुराने 70 वाट के पंखे बिजली का बिल बढ़ा रहे हैं। देश भर में हर साल करीब छह करोड़ नए पंखे बिकते हैं। अगर हम पारंपरिक 70 वाट के पंखों को 35 वाट या उससे कम वाट के सुपर-एफिशिएंट पंखों से बदल दें तो 2037-38 तक सालाना 20 टेरावाट प्रतिघंटा बिजली बचाई जा सकती है। रिपोर्ट में बताया गया कि यहां बीएसईएस और टीपीडीडीएल जैसी कंपनियां पुराने पंखों के बदले नए फाइव स्टार रेटिंग वाले पंखे देने पर 89 प्रतिशत तक की छूट दे रही हैं। दिल्ली के इस 'एक्सचेंज माडल' को अब देशभर में लागू किया जाए। केंद्रर के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की प्रमुख विज्ञानी डा. अनिता गुप्ता ने रिपोर्ट में स्पष्ट किया है कि दिल्ली जैसे शहरों में तापमान व शहरीकरण 'थर्मल कम्फर्ट' (किफायती ठंडक) की मांग बढ़ा रहा है।

मुठभेड़ के बाद कच्छा बनियान गिरोह के छह बदमाश गिरफ्तार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: मालवीय नगर थाना क्षेत्र स्थित सर्वोदय एन्क्लेव में दंपती के बंधक बनाकर लूटपाट करने वाले कच्छा बनियान गिरोह के छह बदमाशों को दक्षिण जिले के वाहन चोरी निरोधक दस्ते (एएटीएस) ने सोमवार तड़के मुठभेड़ के बाद अंबेडकर नगर से गिरफ्तार किया है। इनमें से तीन के पैरों में गोली लगी है। उन्हें एम्स के ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया गया है।

सर्वोदय एनक्लेव में लूट की यह वारदात गत गुरुवार की मध्यरात्रि को हुई थी। आरोपित पार्क की चारदीवारी से सटे पेड़ पर चढ़कर बालकनी से घर में घुसे थे। जब घर के लोग जाग गए तो बंधक बना लिया गया और एक कमरे के अंदर बंद कर दिया गया। आरोपितों ने करीब एक घंटे तक नकदी, आभूषण तथा अन्य सामान लेकर फरार हो गए।

15105 वोटों के बड़े अंतर से ममता बनर्जी को हराकर विजय हासिल की है सुवेंदु ने दिलचस्प मुकाबले में भवानीपुर में। सुवेंदु को कुल 73,917 वोट जबकि ममता को 58,812 वोट मिले।

बंगाल में 69 साल बाद बदली सियासत की धारा

जयकृष्ण वाजपेयी ● जागरण

भगवामय बंगाल

- श्यामा प्रसाद मुखर्जी की भूमि पर भाजपा का ऐतिहासिक उदय
- तुष्टीकरण और घुसपैठ के विरुद्ध 'बंगाली मानुष' ने चुना विकास और सुरक्षा का नया पथ
- उत्तर से दक्षिण तक बदला जनादेश,महिलाओं-युवाओं ने लिखा परिवर्तन का नया अध्याय
- बंगाल में 'दीदी' का दुर्ग ध्वस्त, भगवा लहर में बही बंगाली अस्मिता की राजनीति

बंगाल में दक्षिण दिनाजपुर जिले के बालुरघाट में जीत के उत्साहित भाजपा कार्यकर्ता। प्रेट्र

कोलकाता: बंगाल की राजनीति में सोमवार एक नए सूर्योदय का साक्षी पूरा देश बना है। दो दशकों के कांग्रेसी तथा 34 वर्षों के वामपंथी शासन के बाद 15 वर्षों के तृणमूल कांग्रेस के वर्चस्व को उखाड़ फेंकते हुए भाजपा ने बंगाल के राजनीतिक भूगोल को पूरी तरह बदल दिया है। यह केवल एक चुनावी जीत नहीं, बल्कि उस विचारधारा की घर-वापसी है, जिसकी नींव डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने रखी थी। उत्तर बंगाल की पहाड़ियों से लेकर सुंदरबन के मुहानों तक और जंगलमहल की पगडंडियों से लेकर कोलकाता की गलियों तक, जनता ने ममता बनर्जी के 'अस्मिता और एसआइआर वाला कार्ड' को नकारते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'भरोसे' पर मुहर लगा दी है।

अस्मिता बनाम अस्तित्वः क्यों फेल हुआ टीएमसी का नैरेटिव? : पिछले एक दशक से बंगाल की राजनीति 'बाहरी बनाम भीतरी' और 'बंगाली अस्मिता' के ईद-गिर्द घूमती रही है। ममता ने इस चुनाव में भी मछली, मांस और क्षेत्रीय गौरव के भावनात्मक मुद्दों को हवा दी, लेकिन धरातल पर जनता के मुद्दे कुछ और ही थे। एसआइआर यानी फर्जी और अवैध मतदाताओं के नाम हटाए जाने की प्रक्रिया को ममता नेतृत्व वाली तृणमूल ने एक बड़ा राजनीतिक हथियार बनाने की कोशिश की थी। आरोप लगाया कि यह बंगाली भाषियों के खिलाफ एक साजिश है, लेकिन चुनावी नतीजों ने साफ कर दिया कि यह जनता के लिए मुद्दा था ही नहीं।

मुस्लिम बहुल मुर्शिदाबाद, मालदा और उत्तर 24 परगना जैसे जिलों में, जहां सबसे अधिक नाम एसआइआर में कटे थे, वहां भाजपा की भारी बढ़त ने यह साबित कर दिया कि लोग अब पारदर्शी लोकतंत्र चाहते हैं, न कि वोट बैंक की राजनीति। कलिम्पोंग जहां सबसे कम मतदाता हटे वहां भी और जहां सर्वाधिक (मुर्शिदाबाद, उत्तर 24 परगना, मालदा) कटे वहां भी वोटरों ने भाजपा की झोली दोनों हाथों से भर दी। रात आठ बजे तक मुर्शिदाबाद में रूझानों/नतीजों में आठ सीटों पर भाजपा आगे थी। इस जिले के बेलडांगा, बहरमपुर जैसी सीटें भाजपा ने जीती है। इसी जिले में कांग्रेस और माकपा का भी खाता खुला है। बेलडांगा में ही हुमायूं कबीर ने बाबरी मस्जिद की नींव रखी है, यह सीट भाजपा के खाते में आना बड़ा संकेत हैं। यह सभी नतीजे बता रहे हैं कि भगवा खेमे का चुनावी प्रबंधन कैसा था। 2021 के चुनाव में भाजपा ने उत्तर बंगाल में तो अच्छा प्रदर्शन किया था, लेकिन दक्षिण बंगाल और ग्रेटर कोलकाता के शहरी क्षेत्रों में उसे हार का स्वाद चखना पड़ा था। इस बार कहानी बिल्कुल उलट गई। भाजपा के शीर्ष नेतृत्व और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के जमीनी कार्यकर्ताओं ने पिछले चार वर्षों में उत्पीड़न और हिंसा झेलने के बावजूद जो 'तिनका-तिनका' संगठन को मजबूत कर खड़ा किया, उसका परिणाम आज सबके सामने है।

महिलाओं की मौन क्रांति और मुस्लिम वोटों का बिखराव

मतदान केंद्रों पर पुरुषों से अधिक महिलाओं की लंबी कतारों ने यह संकेत दे दिया था कि 'लक्ष्मी भंडार' जैसी योजनाओं पर अब 'सुरक्षा और सम्मान' भारी पड़ रहा है। संदेशखाली, आरजी कर कांड जैसी घटनाओं से उपजा आक्रोश और महिला सुरक्षा का मुद्दा बंगाली समाज के अंतर्मन तक पहुंच गया। साथ ही, यह नतीजे दर्शाते हैं कि भाजपा की जीत में केवल हिंदू वोट ही नहीं, बल्कि ममता सरकार से नाराज मुस्लिम मतदाताओं का भी एक बड़ा हिस्सा शामिल है। मुस्लिम बहुल मालदा, उत्तर दिनाजपुर, बीरभूम में भाजपा का प्रदर्शन इस ओर इशारा करता है कि तुष्टीकरण के नाम पर पिछड़ों को अब और ठगा नहीं जा सकता।

नया बंगाल : विकास और रोजगार की आस

जनता ने घुसपैठ, जनसांख्यिकीय परिवर्तन और भ्रष्टाचार के खिलाफ कड़ा संदेश दिया है। भाजपा द्वारा रोजगार व महिलाओं को आर्थिक सुरक्षा के साथ-साथ एक 'निर्मम' नहीं बल्कि 'नियमबद्ध' सरकार देने का वादा बंगाली मानुष के दिल में उतर गया। आज जब जंगलमहल के तीन जिलों में तृणमूल शून्य पर सिमटी है, तो यह स्पष्ट है कि बंगाल अब अराजकता के अंधकार से निकल विकास की मुख्यधारा में शामिल होने को आतुर है। यह प्रचंड जीत बताती है कि जब परिवर्तन की आंधी चलती है, तो बड़े-बड़े सियासी दुर्ग ताश के पत्तों की तरह ढह जाते हैं।

भाजपा के लिए 'मिशन 42' हुआ आसान

प्रथम पृष्ठ से आगे

भाजपा के लिए बंगाल की यह जीत केवल एक राज्य की सत्ता हासिल करना नहीं है, बल्कि 2029 के लोकसभा चुनाव के लिए एक अभेद्य किला तैयार करना है। बंगाल में लोकसभा की 42 सीटें हैं। विधानसभा में इस प्रचंड प्रदर्शन ने भाजपा के लिए इन 42 सीटों पर क्लीन स्वीप का रास्ता साफ कर दिया है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि भाजपा बंगाल में इसी गति से आगे बढ़ती है, तो आने वाले आम चुनाव में दक्षिण भारत की भरपाई वह पूर्व के इस द्वार से कर लेगी।

चुनौतियों का नया पहाड़: जीत जितनी बड़ी है, चुनौतियां उतनी ही जटिल हैं। भाजपा की नई सरकार के सामने सबसे बड़ा धर्मसंकट 'पड़ोसी का साथ' और 'बंगाल का हित' के बीच संतुलन बनाना होगा। बांग्लादेश के साथ संबंध सुधारने के लिए जल साझा करना जरूरी है, लेकिन इसके लिए बंगाल के किसानों और लोगों के हितों की बलि न चढ़े, यह सुनिश्चित करना नई सरकार के लिए अग्निपरीक्षा होगी।

बंगाल ने भाजपा पर लुटाई 'ममता'

प्रचंड बहुमत के साथ बंगाल में पहली बार सरकार गठित करने की ओर भाजपा

राज्य ब्यूरो, जागरण ● कोलकाता

100 से कम सीटों पर सिमटी तृणमूल, आठ जिलों में खाता तक नहीं खुल पाया

- सरकार के एक दर्जन से अधिक मंत्री व तृणमूल के कई दिग्गज हारे, कांग्रेस व वामो का भी खुला खाता, नौशाद व हुमायूं भी जीते

बंगाल विधानसभा चुनाव में भवानीपुर सीट से तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ममता बनर्जी को हराने के बाद सोमवार को जीत का प्रमाणपत्र दिखाते भाजपा उम्मीदवार सुवेंदु अधिकारी। प्रेट्र

भाजपा ने जनसंघ के संस्थापक डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी की धरती पर कमल खिलाने का जो सपना देखा था, वह अंततः साकार हुआ। भगवा पार्टी प्रचंड बहुमत के साथ 15 वर्षों के तृणमूल सरकार का अंत कर बंगाल की सत्ता पर काबिज होने को तैयार है। सोमवार को घोषित हुए बंगाल विधानसभा चुनाव के नतीजे के रात 8.30 बजे तक के आंकड़े के अनुसार भाजपा 293 सीटों में से 146 सीटें जीत चुकी थी और 62 पर आगे चल रही थी जबकि तृणमूल 53 सीटें ही जीत पाई थी और मात्र 26 सीटों पर आगे चल रही थी। बंगाल में बहुमत का आंकड़ा 148 सीटों का है।

मालूम हो कि भाजपा ने 2021 के चुनाव में 77 सीटें जीती थीं जबकि तृणमूल ने 215 सीटों पर जीत दर्ज की थी। नेता प्रतिपक्ष सुवेंदु अधिकारी नंदीग्राम सीट नौ हजार से अधिक वोटों से जीत चुके हैं और खबर लिखे जाने तक वे भवानीपुर में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से 6,035 वोटों से आगे चल रहे थे। ममता सरकार के एक दर्जन से अधिक मंत्री व पार्टी के दिग्गज नेता भगवा आंधी के तेज थपेड़े नहीं सह पाए। हारने वाले मंत्रियों में शशि पांजा, ब्रात्य बसु, मानस भुइयां, सुजीत बोस, उदयन गुहा, बीरबाहा हांसदा, चंद्रिमा भट्टाचार्य, रथिन घोष, ज्योतिप्रिय मल्लिक, सिद्दीकुल्ला चौधरी, मलय घटक व अन्य शामिल हैं। तृणमूल आठ जिलों में खाता तक नहीं खोल पाई। मुस्लिमों के एक वर्ग ने भाजपा के पक्ष में मतदान किया। तृणमूल सिंगुर सीट भी हार गई, जहां वाममोर्चा के शासन में टाटा मोटर्स के नैनो कार कारखाने के लिए हुए भूमि अधिग्रहण के खिलाफ आंदोलन छेड़कर ममता बंगाल की गद्दी पर पहुंची थी। इसी तरह नदिया व उत्तर 24 परगना जिलों के नतीजों ने भी साफ कर दिया कि मतुआ समुदाय ने भी इस बार उसका खुलकर समर्थन किया है। तृणमूल को अपने सबसे मजबूत गढ़ ग्रेटर कोलकाता में भी जबर्दस्त झटका लगा है। भाजपा को प्रचंड बहुमत दर्शाता है कि उसे महिलाओं का भी भरपूर समर्थन मिला है, जिन्होंने 'लक्ष्मी भंडार' की जगह 'अन्नपूर्णा भंडार' पर भरोसा जताया। भाजपा के टिकट पर खड़ी हुई आरजी कर अस्पताल व मेडिकल कालेज में दुष्कर्म व हत्या की शिकार हुई डाक्टर की मां व संदेशखाली में महिलाओं के यौन उत्पीड़न के खिलाफ मुखर हुई रेखा पात्र की जीत ने भी साबित कर दिया कि महिलाओं की सुरक्षा बंगाल में प्रमुख मुद्दों में से एक था।

अपनी सीट भी हारीं ममता

बंगाल में भाजपा की आंधी में 15 साल से सत्ता पर काबिज रही तृणमूल कांग्रेस सरकार व सत्तारूढ़ पार्टी का प्रमुख चेहरा मुख्यमंत्री ममता बनर्जी खुद की अपनी घर की सीट तक नहीं बचा सकीं। 2021 के चुनाव में नंदीग्राम में धूल चटाने के बाद नेता प्रतिपक्ष सुवेंदु अधिकारी अब 2026 के चुनाव में ममता को उनके घर कोलकाता के भवानीपुर में भी करारी शिकस्त देकर बड़े ज्वाइंट किलर बनकर उभरे हैं। सुवेंदु ने दिलचस्प मुकाबले में वहां ममता को 15,105 वोटों के बड़े अंतर से हराकर विजय हासिल की हैं। भवानीपुर में सुवेंदु को कुल 73,917 वोट जबकि ममता को 58,812 वोट मिले। सुवेंदु ने नंदीग्राम से भी तृणमूल प्रत्याशी पवित्र कर को हराया।

भाजपा की जीत के प्रमुख कारण

- भाजपा बंगाल की जनता को यह भरोसा दिलाने में सफल रही कि घुसपैठ व डेमोग्राफी में बदलाव की समस्या का सिर्फ वह ही समाधान कर सकती है।
- लोगों को महसूस कराया कि तृणमूल सरकार की केंद्र के लगातार विरोध व असहयोग की नीति से बंगाल विकास के मामले में लगातार पिछड़ रहा है।
- मोदी ने चुनाव प्रचार के दौरान 'भय बनाम भरोसे' की जो गारंटी दी थी, बंगाल के लोगों ने उसे मान्यता प्रदान की।
- संदेशखाली में महिलाओं के यौन उत्पीड़न और आरजी कर मेडिकल कालेज व अस्पताल में जूनियर डाक्टर से दुष्कर्म व हत्या की घटना को लेकर असुरक्षा की भावना से ग्रस्त महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाजपा के पक्ष में मतदान किया।
- भाजपा की प्रचंड जीत एसआइआर को लेकर उसके प्रति बंगाल की जनता के समर्थन को दर्शाती है। मुस्लिमों के वर्ग का भी साथ मिला।
- भाजपा बंगाल के लोगों को यह समझाने में सफल रही कि वह 'बाहरी' नहीं बल्कि उनकी अपनी है।

तृणमूल की हार के प्रमुख कारण

- सरकार के विरुद्ध सत्ता विरोधी लहर
- ममता शासन में हुए शिक्षा, राशन, नगरपालिका घोटालों के प्रति जनाक्रोश
- ममता बनर्जी का एसआइआर का विरोध भी लोगों के एक बड़े वर्ग को रास नहीं आया।
- बंगाल में व्याप्त सिंडिकेट राज, कट मनी की संस्कृति के प्रति जनाक्रोश

'बंगाल का परिणाम भय, तुष्टीकरण व घुसपैठियों के संरक्षण को जनता का जवाब'

- गृह मंत्री ने कहा, यह जीत हमारे अनगिनत कार्यकर्ताओं के बलिदानों, संघर्षों और शहादतों का परिणाम
- भाजपा बंगाल की खोई हुई गरिमा को पुनर्स्थापित करने और 'सोनार बांग्ला' के सपने को साकार करेगी

सोमवार को नई दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय में अमित शाह। प्रेट्र

नई दिल्ली, प्रेट्र: बंगाल विधानसभा चुनाव में भाजपा की बड़ी जीत पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि लोगों ने घुसपैठियों को मुंहतोड़ जवाब दिया है। उन्होंने इस जनादेश को जनता की स्पष्ट इच्छा बताया। अमित शाह ने आगे कहा कि बंगाल की जनता ने घुसपैठ, तुष्टीकरण और हिंसा की राजनीति को नकारते हुए विकास, सुरक्षा और सुशासन की राह चुनी है। अमित शाह की ओर ये यह बयान ऐसे समय में आया है जब भाजपा ने बंगाल में अपनी सीटों में जबरदस्त वृद्धि की है, और पहली बार बंगाल में सरकार बनाने जा रही है।

इंटरनेट मीडिया एक्स पर पोस्ट कर अमित शाह ने बंगाल की जनता को धन्यवाद देते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व को जनादेश का मुख्य आधार बताया। उन्होंने लिखा कि बंगाल की जनता को लाखों सलाम। यह जोरदार जनमानस उन लोगों के प्रति करारा जवाब है जो भय फैलाते हैं, तुष्टीकरण करते हैं और घुसपैठियों को संरक्षण देते हैं। अमित शाह ने इसे टीएमसी के भय के मुकाबले प्रधानमंत्री मोदी में जनता के विश्वास की जीत बताया। भाजपा के संगठनात्मक विस्तार पर जोर देते हुए गृह मंत्री ने कहा कि मेरे जैसे हर भाजपा कार्यकर्ता के लिए यह गर्व का क्षण है कि गंगोत्री में गंगा माता के उद्गम स्थल से लेकर गंगासागर तक आज भाजपा का भगवा झंडा हर जगह शान से लहरा रहा है। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं के संघर्ष और बलिदान को याद करते हुए कहा कि बंगाल में भाजपा की यह ऐतिहासिक जीत हमारे अनगिनत कार्यकर्ताओं के बलिदानों, संघर्षों और शहादतों का परिणाम है। यह उन परिवारों के धैर्य की जीत है, जिन्होंने हिंसा सहते हुए भी भगवा झंडा कभी नहीं छोड़ा। उन्होंने आगे लिखा कि भाजपा के शून्य से आज के शानदार बहुमत तक के इस कठिन सफर में मैं उन सभी कार्यकर्ताओं को नमन करता हूं जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी, हिंसा सही, यातनाएं झेलीं और फिर भी विचारधारा के मार्ग से कभी विचलित नहीं हुए। उनके परिवारों को भी नमन।

भविष्य की दिशा स्पष्ट करते हुए शाह ने आश्वासन दिया कि बंगाल ने मोदी जी के नेतृत्व में जो आशा और आकांक्षा व्यक्त की है, हम उसे निश्चित रूप से पूरा करेंगे। भाजपा बंगाल की खोई हुई गरिमा को पुनर्स्थापित करने और 'सोनार बांग्ला' के सपने को साकार करने के लिए दिन-रात काम करेगी। उन्होंने कहा कि बंगाल चैतन्य महाप्रभु, स्वामी विवेकानंद, कवि गुरु टैगोर, नेताजी सुभाष चंद्र बोस और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे महान व्यक्तित्वों का घर रहा है।

निर्णायक रहीं मोदी-शाह की रैलियां, रोडशो

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- मोदी की झालमुड़ी ने ममता के बंगाली अस्मिता कार्ड को कर दिया ध्वस्त

नरेन्द्र मोदी और अमित शाह। फाइल

बंगाल में भाजपा की प्रचंड जीत में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की रैलियां व रोडशो निर्णायक साबित हुए। चुनाव अभियान का आगे बढ़कर नेतृत्व करते हुए प्रधानमंत्री ने कुल 19 रैलियों को संबोधित किया और दो रोडशो भी किए। वहीं शाह ने 30 जनसभाओं को संबोधित किया व 12 रोडशो किए। शाह ने कई प्रेस कांफ्रेंस के जरिये चुनावी मुद्दों को स्पष्ट कर आम जनता में भरोसा कायम करने का काम किया।

मोदी ने 19 रैलियों के सहारे बंगाल के हर हिस्से को साधने की कोशिश की। ये रैलियां तामलुक, कूचबिहार दक्षिण, आसनसोल, बीरभूम, कटवा, जांगीपुर, दक्षिण दीनाजपुर, सिलिगुरी, बिष्णुपुर, पुरुलिया झारग्राम, मेदनीपुर, कृष्णानगर, मथुरापुर, दमदम, जाधवपुर, बनगांव, आरामबाग और बैरकपुर में हुईं। झारग्राम में मोदी ने झालमुड़ी खाकर ममता बनर्जी के बंगाली अस्मिता के कार्ड को ध्वस्त कर दिया। इस अकेले वीडियो को एक दिन में 20 करोड़ से अधिक लोगों ने इंटरनेट मीडिया पर देखा। साथ ही उन्होंने भाजपा के लिए सबसे मुश्किल माने जाने वाले कोलकाता और हावड़ा में रोडशो कर जनता का दिल जीतने का काम किया।

बंगाल में कमल खिलाने के मिशन पर एक दशक से लगे अमित शाह की छाप भाजपा के पूरे अभियान पर दिखी। चुनाव प्रचार के दौरान शाह 15 दिनों तक बंगाल में डटे रहे। रैलियों, रोडशो और प्रेस कांफ्रेंस के अलावा उन्होंने बंगाल को पांच जोन में बांटकर चुनाव अभियान को संचालित किया। पांचों जोन में रात्रि विश्राम कर उन्होंने रात एक से दो बजे तक संगठन की बैठकें ली।

अभियान में अमित शाह की रणनीति स्पष्ट रही। एसआइआर में एक भी फर्जी वोटर नहीं बचना चाहिए, ताकि तृणमूल उनके नाम पर छापा वोट नहीं डाल सके। मतदान केंद्रों पर तृणमूल की ओर से हिंसा के पुराने पैटर्न से सीख लेते हुए उन्होंने भाजपा के 100 प्रतिशत वोट 11 बजे तक डालने का लक्ष्य दिया। पहले फेज की वोटिंग के दिन शाह खुद भाजपा के कंट्रोल रूम में बैठकर मतदान प्रक्रिया का जायजा लेते रहे। गृह मंत्री ने तृणमूल के गुंडों को स्पष्ट चेतावनी दी कि यदि उन्होंने बाहर आकर मतदान प्रक्रिया को प्रभावित करने की कोशिश की, तो उन्हें उल्टा लटकाकर सीधा कर देंगे। उन्होंने बंगाल को लोगों को ममता बनर्जी द्वारा पाले-पोसे गए घुसपैठियों को चुन-चुनकर बाहर निकालने का भरोसा दिया। घुसपैठ रोकने के लिए 45 दिन में सीमा पर फेंसिंग के लिए जमीन देने और बाबरी मस्जिद नहीं बनने देने का एलान किया। उन्होंने आरजी कर और संदेशखाली के मुद्दों को नीचे तक पहुंचाकर महिला सुरक्षा सुनिश्चित करने और महिलाओं को रात एक बजे तक घूमने का माहौल बनाने का भी वादा किया।

प्रमाणित रणनीतिकार के रूप में उभरे भूपेंद्र यादव व सुनील बंसल

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

2021 के परिणामों की समीक्षा कर बनाया चुनावी ब्लूप्रिंट

भूपेंद्र यादव और सुनील बंसल। फाइल

यह सही है कि बंगाल की ऐतिहासिक विजय में भी मोदी मैजिक बहुत बड़ा फैक्टर है, लेकिन इस राज्य की परिस्थितियां ऐसी थीं, जहां संगठन के जमीनी संघर्ष और परिश्रम की कड़ी परीक्षा थी। निस्संदेह रणनीति की मुख्य कमान अमित शाह ने अपने हाथ में रखी व बंगाल में डेरा डाले रहे और भूपेंद्र व सुनील जैसे सिपहसालारों से बखूबी काम करवाया। लेकिन इन दो नेताओं की जोड़ी पर भरोसा यूं ही नहीं जताया गया। दरअसल, इनका राजनीतिक ट्रैक रिकार्ड पार्टी नेतृत्व के उनमें विश्वास को मजबूत करता है। भूपेंद्र यादव 2022 में गुजरात, 2023 में मध्य प्रदेश और 2024 में महाराष्ट्र में सत्ता विरोधी लहर को असरहीन करके भाजपा की सत्ता वापसी में अहम भूमिका निभा चुके हैं, तो 2024 में पहली बार भाजपा को ओडिशा में सफलता का श्रेयांश इनके हिस्से में जाता है। इसी तरह प्रदेश महामंत्री संगठन के रूप में उत्तर प्रदेश में भाजपा के मजबूत दुर्ग निर्माण के शिल्पकारों में एक रहे सुनील बंसल को राष्ट्रीय महासचिव बनाने के साथ ही तेलंगाना, ओडिशा और बंगाल का प्रभारी बनाया गया। फिर बंगाल में इस जोड़ी ने कमाल कर दिया।

बताते हैं कि भूपेंद्र यादव और सुनील बंसल ने 2021 के चुनाव परिणामों की गहन समीक्षा करके हार के निष्कर्षों पर शाह के साथ चर्चा की और आगे की रणनीति बनाई। संगठन की गुटबाजी खत्म करके बूथ स्तर तक संगठन को खड़ा करने में जुटे।

अमित शाह ने असम की जनता को बधाई दी

शाह ने असम की जनता को ऐतिहासिक हैट्रिक जनादेश के लिए बधाई दी और इसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राजग सरकार द्वारा पिछले 10 वर्षों में एक सुरक्षित, शांतिपूर्ण और प्रगतिशील राज्य के निर्माण के लिए किए गए अथक प्रयासों का सशक्त समर्थन बताया। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, 'यह असीम स्नेह और सहयोग आपको और भी बेहतर सेवाएं प्रदान करने और आपकी आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने के हमारे संकल्प को मजबूत कर रहा है।" मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा के नेतृत्व में भाजपा की डबल इंजन सरकार में अटूट विश्वास का प्रमाण है, जिसने असम को अशांति की भूमि से आशा और विकास की भूमि में बदल दिया है। उन्होंने राजग को अधिक वोट शेयर देने के लिए केरल की जनता के प्रति भी आभार व्यक्त किया।

'पालटानो दरकार' ने पलटी ममता सरकार

विशाल श्रेष्ठ ● जागरण

- बंगाल में भाजपा की प्रचंड जीत में चुनावी नारे की भी अहम भूमिका

चुनाव परिणाम के बाद ममता। प्रेट्र

कोलकाता : 'पालटानो दरकार, चाई बीजेपी सरकार' (पलटना जरूरी है, भाजपा की सरकार चाहिए)। बंगाल में भाजपा की प्रचंड जीत में इस नारे ने भी अहम भूमिका निभाई। इसने सीधे लोगों के दिमाग पर स्ट्राइक किया। उन्हें परिवर्तन के बारे में सोचने को बाध्य किया।

मनोविज्ञानी अभिषेक हंस कहते हैं, आधुनिक दौर के चुनावों में, जहां बहुत कुछ 'नैरेटिव' पर निर्भर करता है, नारों की भूमिका और बढ़ गई है। नारे लोगों को पार्टी से जोड़ते हैं, उनके प्रति विश्वास जगाते हैं, वहीं विरोधियों के प्रति अविश्वास उत्पन्न करते हैं। 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 'अबकी बार, मोदी सरकार' का नारा दिया था, जो आकर्षक व धारा प्रवाह में होने के कारण बच्चे-बच्चे की जुबां पर चढ़ गया था। 'इसके व्यक्ति विशेष पर आधारित नहीं होने पर भी इसमें परिवर्तन की बात कही गई। यह नारा भी लोगों की जुबां पर फिट हो गया। जब कोई बात बार-बार कही जाती है तो वह दिमाग को उत्प्रेरित करती है और उससे भावनात्मक रूप से जोड़ती है। यह सोच बदलने का काम करती है और निर्णय लेने में महत्वपूर्ण साबित होती है, हालांकि यह भी मायने रखता है कि किसने इसे किस तरह से लिया क्योंकि हर व्यक्ति भिन्न होता है।

भाजपा के लिए महिला सुरक्षा का मुद्दा बना गेमचेंजर

इंद्रजीत सिंह ● जागरण

उत्तर 24 परगना में सोमवार को समर्थकों के साथ जीत का प्रमाणपत्र दिखातीं भाजपा उम्मीदवार और आरजी कर मेडिकल कालेज एवं हास्पिटल में दुष्कर्म और हत्या की शिकार महिला डाक्टर की मां रत्ना देवनाथ। आइएएनएस

- आरजी कर पीड़िता की मां को उम्मीदवार बनाने से उठी सहानुभूति की लहर
- महिला अत्याचार को लेकर ममता सरकार के खिलाफ फूटा जनाक्रोश

कोलकाता : बंगाल में भाजपा की प्रचंड जीत के पीछे महिला सुरक्षा का मुद्दा गेमचेंजर बनकर उभरा है। भाजपा ने इस संवेदनशील विषय को सिर्फ चुनावी भाषणों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे अपनी रणनीति का केंद्रीय आधार बनाया। इसका सबसे बड़ा उदाहरण रहा कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कालेज एवं हास्पिटल में दुष्कर्म और हत्या की शिकार महिला डाक्टर की मां को उत्तर 24 परगना जिले की पानीहाटी सीट से उम्मीदवार बनाना और संदेशखाली कांड की पीड़िता रेखा पात्र को जिले के हिंगलगंज से चुनाव मैदान में उतारना।

आरजी कर पीड़िता की मां की प्रचंड जीत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भाजपा की यह रणनीति केवल प्रतीकात्मक नहीं थी, बल्कि इसका सीधा असर मतदाताओं के मनोविज्ञान पर पड़ा।

आरजी कर और संदेशखाली में महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं ने पूरे देश को झकझोर दिया था। इन घटनाओं ने कानून-व्यवस्था, महिला सुरक्षा और शासन की जवाबदेही पर गंभीर सवाल खड़े किए थे।

पानीहाटी से जीत हासिल करने वाली महिला डाक्टर की मां का चुनाव लड़ना अपने आप में एक बड़ा प्रतीक बन गया। यह सिर्फ एक सीट की लड़ाई नहीं थी, बल्कि न्याय और सुरक्षा की मांग का प्रतिनिधित्व भी था।

इसी तरह हिंगलगंज से रेखा पात्र की जीत ने संदेशखाली की घटनाओं को राजनीतिक रूप से जीवित रखा और यह दिखाया कि स्थानीय स्तर पर भी यह मुद्दा कितना गहरा असर डाल चुका है।

कह कर रहेंगे

माधव जोशी

34 वर्षों तक चले वामपंथी शासन को उखाड़ने के लिए 2011 में ममता बनर्जी को भी कांग्रेस और एसयूसीआइ जैसे वाम दलों का हाथ थामना पड़ा था। ममता की परिवर्तन की लहर में भी गठबंधन की विवशता शामिल थी।

बंगाल में भाजपा तमिलनाडु में टीवीके ने तोड़ा तिलिस्म

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के नतीजे दिखाते हैं कि मतदाताओं ने बंगाल, तमिलनाडु और केरलम में बदलाव के लिए मतदान किया है वहीं असम और पुडुचेरी में सत्तारूढ़ दल की वापसी के लिए वोट दिया है। भाजपा ने बंगाल इस बार दो तिहाई बहुमत हासिल कर सत्तारूढ़ टीएमसी के तिलिस्म को तोड़ दिया। इसी तरह से विजय की पार्टी टीवीके ने तमिलनाडु में अप्रत्याशित प्रदर्शन करते हुए डीएमके को सत्ता से बाहर का रास्ता दिखा दिया है। कांग्रेस ने केरलम की सत्ता में मजबूत वापसी की है तो पुडुचेरी में राजग सरकार ने अपनी सत्ता को बनाए रखा है। 2021 की तुलना में इस बार के चुनाव के बाद पांच राज्यों का राजनीतिक नक्शा कुछ इस तरह दिख रहा है।

असम में भाजपा सरकार की हैट्रिक

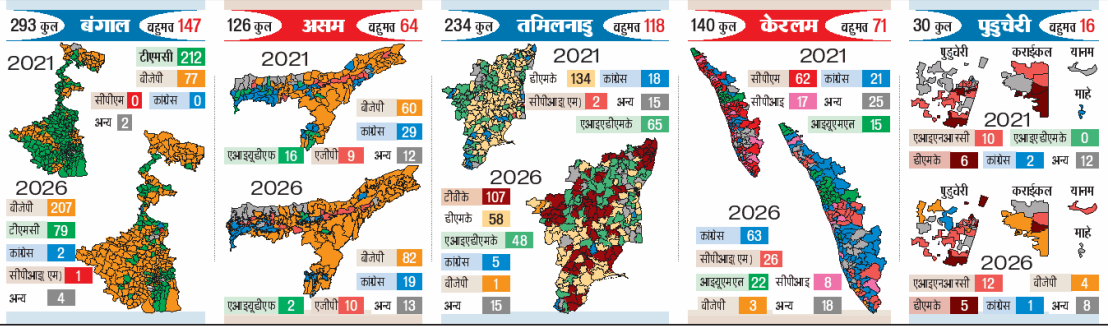

भाजपा के नेतृत्व वाले राजग को तीन–चौथाई बहुमत, 126 सदस्यीय विस में 101 सीटें जीतीं

असम विधानसभा चुनाव में मिली भारी जीत के बाद गुवाहाटी में सोमवार को समर्थकों के साथ प्रसन्न मुद्रा में मुख्यमंत्री और भाजपा उम्मीदवार हिमंत बिस्वा सरमा। प्रेट्र

गुवाहाटी, प्रेट्र : पूर्वोत्तर राज्य असम में हैट्रिक लगाने के साथ ही मुख्यमंत्री हिमंता बिस्व सरमा ने चुनावी जीत की शतक पार कर ली है। सत्तारूढ़ राजग ने असम में लगातार तीसरी बार सरकार बनाने के लिए दो-तिहाई बहुमत हासिल किया है। इसमें गठबंधन ने सोमवार को 126 सदस्यीय विधानसभा में 101 सीटें जीतीं हैं। खुद मुख्यमंत्री सरमा ने जलुकबाड़ी निर्वाचन क्षेत्र से लगातार छठी बार जीत हासिल की है। उन्होंने कांग्रेस के उम्मीदवार बिदिशा नेओग को 89,434 मतों से हराया।

सरमा अब भाजपा के एक प्रमुख प्रचारक के रूप में उभरे हैं, जो चुनावी राज्यों में पार्टी के मुख्य एजेंडे का आक्रामकता से समर्थन कर रहे हैं। 2015 में कांग्रेस से भाजपा में शामिल होने के बाद असम और पूर्वोत्तर में भाजपा के प्रभाव को बढ़ाने का श्रेय उन्हें दिया जाता है। भाजपा ने 82 सीटें जीतीं, जबकि उसके सहयोगी बीपीएफ और एजीपी ने 10-10 निर्वाचन क्षेत्रों में जीत हासिल की। विपक्षी खेमे में कांग्रेस ने 19 सीटें जीतीं, जबकि बदरुद्दीन अजमल के नेतृत्व वाले एआइयूडीएफ और अखिल गोगोई के नेतृत्व वाले रायजोर दल ने दो-दो सीटें जीतीं और तृणमूल ने एक जीता। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष गौरव गोगोई जोरहाट में भाजपा विधायक हितेंद्रनाथ गोस्वामी से 23,181 मतों से हार गए।

कांग्रेस के तीन पूर्व मुख्यमंत्रियों के बेटे चुनाव हारे: असम में तीन पूर्व मुख्यमंत्रियों के बेटे हार गए, जिनमें राज्य कांग्रेस अध्यक्ष और सांसद गौरव गोगोई और निवर्तमान विधानसभा में विपक्ष के नेता देबब्रत सैकिया शामिल हैं। गोगोई के पिता तरुण गोगोई, राज्य के सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे हैं और 15 वर्षों तक कांग्रेस सरकार का नेतृत्व कर चुके हैं। दो बार सीएम रहे हितेश्वर सैकिया के पुत्र देबब्रत नाजिरा सीट पर रहे। हार का सामना करने वाले तीसरे पूर्व मुख्यमंत्री के पुत्र दिगंता बर्मन है, जिनके पिता भूमिधर ने हितेश्वर के कार्यकाल में निधन होने पर कार्यवाहक सीएम के रूप में कार्यभार संभाला था।

असम में विकास, लाभकारी योजनाएं और हिंदुत्व के काकटेल का कमाल

नीलू रंजन • जागरण

- मियां मुसलमान के नारे के सहारे हिंदू वोटों को एकजुट करने में मिली सफलता,
- सत्तारूढ़ भाजपा ने लाभकारी योजनाओं के सहारे महिलाओं और मजदूरों को साधा

नई दिल्ली: असम में भाजपा की ऐतिहासिक जीत के लिए विकास, लाभकारी योजनाएं और हिंदुत्व के काकटेल को अहम माना जा रहा है। लाभकारी योजनाओं के सहारे भाजपा एक ओर महिलाओं और मजदूरों को साधने में सफल रही, तो विकास योजनाओं के सहारे युवाओं को उज्ज्वल भविष्य का सपना दिखाने में सफल रही। वहीं मियां मुसलमानों (बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठियों) के खिलाफ हिमंत बिस्वा सरमा की मुहिम ने नस्ल, क्षेत्र और भाषा में बंटे हिंदुओं को एकजुट करने में अहम भूमिका निभाई। दूसरी तरफ सरमा के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों पर आधारित कांग्रेस का अभियान परवान नहीं चढ़ सका और चुनाव के ठीक पहले बड़े नेताओं के पार्टी छोड़ने का असर सामान्य कार्यकर्ताओं के गिरे मनोबल के रूप में साफ-साफ देखा गया।

भाजपा पहली बार भरोसा दिलाने में सफल रही कि लंबे समय से अवैध बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठियों की समस्या से निजात भी मिल सकती है।

उनके अवैध कब्जे से 1.5 लाख बीघा जमीन खाली कराने से लेकर अवैध घुसपैठियों को तत्काल वापस भेजने के लिए 1950 के कानून को लागू कर हिमंत बिस्वा सरमा इससे निपटने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता साबित करने में सफल रहे। राज्य की 103 हिंदू बहुल सीटों में से 100 पर भाजपा की जीत हिंदू वोटों के ध्रुवीकरण का परिणाम है। इसके साथ ही भाजपा लाभकारी योजनाओं के सहारे महिलाओं को साधे रखने में सफल रही। चुनाव की घोषणा से ठीक पहले 40 लाख परिवारों में महिलाओं के खाते में अरुणोदय स्कीम के तहत नौ-नौ हजार रुपये ट्रांसफर किए गए।

कलह से जूझती रही कांग्रेस

अंदरूनी कलह से जूझ रही कांग्रेस पूरे चुनाव के दौरान कहीं भी लड़ाई में नजर नहीं आई। वहीं भाजपा कांग्रेस को बांग्लादेशी घुसपैठियों की हितैषी साबित करने और मुस्लिम बहुल सीटों तक सिमटाने में सफल रही। मुस्लिम बहुल सीटों पर बदरूद्दीन अजमल की आल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (एआइयूडीएफ) से सीधा मुकाबले के कारण कांग्रेस इसका तीखा प्रतिकार भी नहीं कर सकी। प्रदेश अध्यक्ष और लोकसभा में विपक्ष के उपनेता गौरव गोगोई की 23 हजार से अधिक वोटों से हार असम में कांग्रेस की स्थिति को स्पष्ट करती है।

भाजपा की जीत के बाद कूचबिहार में कई स्थानों पर हिंसा

जासं, कूचबिहार : बंगाल विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत के बाद कूचबिहार जिले में कई स्थानों पर हिंसा हुई है। जिले के माथाभांगा-दो ब्लाक में तृणमूल कांग्रेस के स्थानीय नेता परिमल मंडल के घर पर कथित भाजपा समर्थकों ने हमला कर दिया। हमलावरों ने घर में तोड़फोड़ की। घटना की सूचना मिलते ही घोक्साडांगा थाना की पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रित किया। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। इसी क्षेत्र के 11 माइल इलाके में जहांरुल मियां नामक एक व्यक्ति के घर और दुकान पर ईंट-पत्थर फेंके गए। उनके घर के सामने खड़ी अर्थ मूवर के शीशे भी तोड़ दिए गए।

इसके अलावा जिले के दिनहाटा क्षेत्र में भी अशांति फैली हुई है। मतगणना के दौरान जैसे-जैसे भाजपा उम्मीदवार की जीत का अंतर बढ़ा, वैसे-वैसे तृणमूल कांग्रेस के कई पार्टी कार्यालयों में तोड़फोड़ की गई। पुटिमारी में एक सेल्फी प्वाइंट में आग लगा दी गई, जिसे दमकल कर्मियों ने काबू में किया। सोमवार सुबह दिनहाटा के सीमावर्ती गांव से एक ताजा बम बरामद किया गया। दूसरी ओर, भाजपा ने सभी आरोपों को खारिज करते हुए कहा है कि तृणमूल अपनी हार से बौखला गई है और झूठे आरोप लगा रही है।

वह भाजपा समर्थकों ने जलपाईगुड़ी जिले के धूपगुड़ी में एक डाक्टर की पिटाई कर दी। परिणाम घोषित होने के बाद धूपगुड़ी सुपर मार्केट के पास भाजपा कार्यकर्ता और समर्थक जुलूस निकालकर अबीर खेल रहे थे। उसी दौरान डा. राज बर्मन अस्पताल की ओर जा रहे थे। आरोप है कि जुलूस में शामिल कुछ लोगों ने उन्हें जबरन अबीर लगाने की कोशिश की। उन्होंने इसका विरोध किया, तो पहले कहासुनी हुई और फिर मामला मारपीट में बदल गया।

भविष्य की राजनीति बयां करता चुनाव नतीजा

त्वरित टिप्पणी
आशुतोष झा

- भाजपा को सिर्फ चुनावी नहीं, वैचारिक जीत भी दे गया बंगाल, तमिलनाडु ने पारंपरिक द्रविड़ राजनीति को दिया झटका, वाम दलों का भविष्य खतरे में

नई दिल्ली : पांच राज्यों में से तीन बंगाल, असम और पुडुचेरी भाजपा के साथ, केरल में वैकल्पिक चुनाव के तहत कांग्रेस और तमिलनाडु में द्रविड़ राजनीति से परे पूर्ण बदलाव कर सत्ता दो वर्ष पहले राजनीति में आए एक सिने स्टार के हाथ। सोमवार को आया यह नतीजा राज्यों की सीमा से परे वोटरों की अपेक्षाओं-आकांक्षाओं और भविष्य की राष्ट्रीय राजनीति को खुल कर बयां करता है। यह स्पष्ट करता है कि किसी भी चुनाव के लिए विकास और सुशासन से ज्यादा प्रासंगिक कोई मुद्दा नहीं, चेहरे की विश्वसनीयता से ज्यादा बड़ी कोई गारंटी नहीं, और अगर कहीं इन दोनों विकल्प की कमी हो तो फिर ऐसे चेहरे के हाथ अपनी किस्मत से देने से परहेज नहीं, जिसके पास प्रशासनिक अनुभव की कमी हो, लेकिन पीठ पर भ्रष्टाचार की गठरी नहीं हो। पांच राज्यों के इस नतीजे ने आगामी विधानसभाओं और 2029 के लोकसभा चुनाव के लिए भी विमर्श सेट कर दिया है।

सोमवार को वोटों की गिनती शुरू होने से पहले ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पोस्ट किया और कहा, "कौशल, परिश्रम और करुणा हमारे जीवन की अद्भुत शक्तियां हैं। इनके माध्यम से हम केवल हर चुनौती को ही पार नहीं सकते हैं, बल्कि ये हमारे लक्ष्यों की प्राप्ति में भी मददगार हैं।" बंगाल के नतीजों पर पहले नजर डालें तो यह सौ प्रतिशत सही साबित होता है। प्रधानमंत्री मोदी के अथक परिश्रम, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के ठोस चुनावी प्रबंधन ने ऐसा माहौल तैयार किया, जिसमें बंगाल की जीत सिर्फ चुनावी न रहकर वैचारिक जीत के दावे को पूरा कर दिया। बंगाल का भाजपा के जीवन में खास महत्व है। जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी बंगाल से थे और उन्होंने अनुच्छेद-370 के खात्मे के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था। राष्ट्रवाद और भारत माता भाजपा के हर नारे में होते हैं और वंदे मातरम के रचयिता बंकिम चंद्र बंगाल से थे। अभी हाल ही में केंद्र सरकार ने सभी स्कूलों और विश्वविद्यालयों को निर्देश दिया है कि अब से बंकिम चंद्र के लिखे समग्र वंदे मातरम का गायन किया जाए। उस बंगाल ने भाजपा को प्रचंड जीत देकर एक तरह से उस विचारधारा को खुली बाहों से स्वीकार कर लिया जो भाजपा के लिए प्रिय था और विरोधी दल जिसे बंटवारे के नजरिये से देखते थे। इसीलिए मोदी और शाह बार-बार अंग, बंग और कलिंग की बात करते थे। राजनीतिक रूप से देखा जाए तो जिस तरह 2024 के चुनाव में ओडिशा भाजपा के लिए एक नई जमीन के रूप में उभरा था, उसी तरह बंगाल 2029 के चुनाव में भूमिका निभा सकता है। ध्यान रहे कि लोकसभा सीटों की संख्या के मामले में बंगाल, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के बाद सबसे बड़ा राज्य है। अगले तीन वर्षों में भाजपा अगर राज्य में कार्यसंस्कृति में बदलाव लाने में सफल रही और विकास का अनुभव लोगों तक पहुंचा तो लोकसभा चुनाव में यह राज्य अहम भूमिका निभाएगा। न सिर्फ इतना, बल्कि आगामी उत्तर प्रदेश समेत दूसरे चुनावों में कार्यकर्ताओं में नया जोश भर सकता है। ओडिशा में बीजद को हराने के बाद लगातार दूसरी बार भाजपा ने एक मजबूत क्षेत्रीय दल को हराया है। इससे पहले दिल्ली में उस आम आदमी पार्टी को पटखनी दे चुकी है, जिसके उदय ने सबको चौंकाया था।

असम के नतीजे तो आश्चर्यजनक हैं। कुल 126 सीटों वाली विधानसभा में 23 सीटें ऐसी हैं, जहां मुस्लिम वोटरों की संख्या 60 प्रतिशत से ज्यादा है। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा कहते रहे हैं कि वहां भाजपा वस्तुतः 103 सीटों पर ही चुनाव लड़ रही है। ऐसे में सौ के पार जाना विस्मयकारी है और कांग्रेस के लिए चिंता का विषय। कांग्रेस से मुख्यमंत्री पद के दावेदार और लोकसभा में उपनेता गौरव गोगोई भी 22 हजार से ज्यादा वोटों से हार गए। तो फिर नाव कौन चलाए। केरल में दस वर्ष के बाद वापसी जरूर कांग्रेस को थोड़ा संबल देगी, लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि वहां तमिलनाडु की तरह कोई तीसरा विकल्प नहीं था। केरल में भी वाम राजनीति के अंत की शुरुआत और भाजपा के भविष्य की शुरुआत पक्की हो गई तो कोई नहीं जानता कि अगले दस वर्षों में वहां भी कांग्रेस को भाजपा से ही सामना करना पड़े..। वैसे भी पार्टी तिरुअनंतपुरम में अपना मेयर बना चुकी है और गुजरात इसका उदाहरण है कि स्थानीय निकाय चुनाव की जीत भाजपा के लिए नींव की तरह काम करती है।

तमिलनाडु, जेन-जी चुनाव का एक उदाहरण है। 1967 से वहां जिस द्रविड़ राजनीति की शुरुआत हुई और द्रमुक व अन्नाद्रमुक के रूप में बारी बारी से सत्ता बांटते रहे, उस परंपरा को सिने स्टार विजय की लोकप्रियता ने रोक दिया। वस्तुतः राज्य की जनता दोनों दलों की घिसी पिटी द्रविड़ राजनीति से त्रस्त हो चुकी थी, जिसमें सनातन को गाली देना एक फैशन है। इन दलों को खुद को प्रासंगिक बनाना होगा। विजय बहुमत के मैजिक अंक से थोड़ा पीछे हैं जो दूसरों के समर्थन से हासिल करना मुश्किल नहीं है। लेकिन अगर वह कांग्रेस से भी दूर रहे, तो विजय भी भविष्य में एक ऐसे घटक के रूप में दिख सकते हैं जो किसी खेमे में न रहते हुए भी मुद्दों पर आधारित फैसला लें।

बंगाल सचिवालय से कोई फाइल न हटे, मुख्य सचिव का सख्त आदेश

राज्य ब्यूरो, जागरण • कोलकाता

- भाजपा की जीत के साथ छावनी में तब्दील सचिवालय व सरकारी कार्यालय

बंगाल के मुख्य सचिव दुष्यंत नारियाला ने सभी विभागीय सचिवों और कार्यालय प्रमुखों को कड़ा निर्देश जारी करते हुए कहा कि राज्य सचिवालय नवान्न समेत किसी भी सरकारी दफ्तर से कोई भी महत्वपूर्ण फाइल या दस्तावेज न तो हटाया जाए और न ही उसके साथ छेड़छाड़ की जाए। न ही बिना अनुमति के उसकी कापी या स्कैनिंग की जाए। यह आदेश दोपहर करीब तीन बजे जारी किया गया, जब यह साफ होने लगा कि भाजपा प्रचंड बहुमत के साथ सत्ता में आने की ओर बढ़ रही है। इस आदेश के तुरंत बाद राज्य सचिवालय के साथ विकास भवन, जलसंपद भवन, न्यू सेक्रेटेरिएट बिल्डिंग और अन्य महत्वपूर्ण प्रशासनिक दफ्तरों के बाहर केंद्रीय बलों की तैनाती कर दी गई। सुरक्षा इतनी सख्त कर दी गई कि ड्यूटी खत्म कर घर लौट रहे सरकारी कर्मचारियों की भी जांच की गई, ताकि कोई संवेदनशील दस्तावेज बाहर न ले जाया जा सके।

कोलकाता में सोमवार को मतगणना केंद्र के बाहर तैनात सुरक्षाबल के जवान। प्रेट्र

सूत्रों के मुताबिक, यह कदम राज्यपाल आरएन रवि के निर्देश पर उठाया गया है। राज्यपाल ने मुख्य सचिव को स्पष्ट निर्देश दिया था कि सरकार की सभी फाइलों और दस्तावेजों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। इसके बाद ही यह सर्कुलर जारी किया गया और सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि आजकल अधिकतर फाइलें डिजिटल फार्मेट में हैं, इसलिए उनके नष्ट होने की संभावना कम है, लेकिन एहतियात के तौर पर यह कदम उठाया गया है। वहीं, राज्य प्रशासन के एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि सत्ता परिवर्तन के दौरान अक्सर संवेदनशील फाइलों को हटाने या गायब करने की आशंका रहती है, खासकर वे फाइलें जो भ्रष्टाचार से जुड़े मामलों को उजागर कर सकती हैं।

बंगाल में एक दर्जन से अधिक हैवीवेट मंत्री भी हारे

राजीव कुमार झा • जागरण

कोलकाता : 2011 में जिस तरह ममता की आंधी में वाममोर्चा सरकार के तत्कालीन मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य समेत अधिकांश मंत्रियों का सफाया हो गया था, ठीक उसी तरह का इतिहास बंगाल में दोहराया है। ममता लगातार 34 साल के वाममोर्चा शासन का अंत कर 2011 में सत्ता पर काबिज हुई थीं।

हारने वाले हेवीवेट मंत्रियों में ममता के बेहद करीबी अरूप विश्वास से लेकर शिक्षा मंत्री ब्रात्य बसु तक शामिल हैं। इसके अलावा वित्त मंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्य, मंत्री शशि पांजा, वरिष्ठ मंत्री मलय घटक व डा मानस भुइयां, मंत्री शशि पांजा, मंत्री सुजीत बोस, मंत्री उदयन गुहा, वन मंत्री बीरबाहा हांसदा, मंत्री रथिन घोष (मध्यमग्राम में 15वें राउंड तक रात 10.30 बजे तक भाजपा प्रत्याशी से पीछे), मंत्री बंकिम चंद्र हाजरा, मंत्री बेचाराम मन्ना को करारी हार का सामना करना पड़ा है। विधानसभा उपाध्यक्ष आशीष बनर्जी को भी हार का सामना करना पड़ा। परिवहन मंत्री स्नेहाशीष चक्रवर्ती भी रात 10.30 बजे तक पीछे चल रहे थे। राशन घोटाले में आरोपित पूर्व वन मंत्री ज्योतिप्रिय मल्लिक और शिक्षक भर्ती घोटाले में बेटी को नौकरी दिलाने को लेकर विवादों में घिरे पूर्व शिक्षा राज्यमंत्री परेश चंद्र अधिकारी भी हारे।

तृणमूल के कई स्टार उम्मीदवार भी हारे: तृणमूल के कई स्टार उम्मीदवारों व मौजूदा विधायकों को भी हार का सामना करना पड़ा है। जिसमें बरानगर से अभिनेत्री सायंतिका बनर्जी, बैरकपुर से अभिनेता राज चक्रवर्ती, सोनारपुर दक्षिण से लवली मैत्रा, राजरहाट- गोपालपुर से गायिका अदिति मुंशी व अन्य शामिल हैं।

जागरण विशेष

बंगाल ने समग्र विकास की अनदेखी करने वालों को तीसरी बार सिखाया सबक

कांग्रेस,वाम मोर्चा और टीएमसी के शासनकाल में औद्योगिक पुनरुद्धार का इंतजार करता रहा राज्य

महेंद्र सिंह • जागरण

नई दिल्ली: बंगाल में सत्ता परिवर्तन की कहानी केवल राजनीतिक नारों की नहीं, बल्कि औद्योगिक पतन और समग्र विकास की अनदेखी करने की कहानी है। याद करिये पिछली सदी का छठा दशक जब बंगाल औद्योगिक रूप से विकसित राज्य था और पूर्वी भारत के विरह से भरे लोकगीतों में गूंजता था। कलकत्ता (अब कोलकाता) कमाने गए पति की विरह से पीड़ित पत्नी इन लोकगीतों के जरिये अपने पिया को याद करती थी, लेकिन बाद में आने वाली सरकारों की प्राथमिकताओं में राज्य का औद्योगिक विकास शामिल नहीं रहा और बंगाल विकास की दौड़ में दूसरे राज्यों की तुलना में बहुत पीछे रह गया। आज का चुनाव परिणाम इसी का नतीजा है। बड़ी संख्या में लोग कम आय वाले जीवनस्तर के साथ रोजगार के लिए पलायन के लिए मजबूर हैं। कांग्रेस, वाम मोर्चा और टीएमसी ने अपने लंबे शासनकाल में राज्य के समग्र विकास की अनदेखी की और मतदाताओं ने इनको सत्ता से बाहर करके सबक सिखाया है।

कांग्रेस का शासन और औद्योगिक पतन, 1960-77: 20वीं सदी के छठे दशक तक बंगाल देश का औद्योगिक केंद्र था, लेकिन कुछ आर्थिक नीतियों ने इसे पीछे धकेल दिया। ऐसी ही एक नीति है माल भाड़ा समानीकरण नीति। इसने बंगाल के कोयले और लोहे के भौगोलिक लाभ को खत्म कर दिया। अब देश के किसी भी हिस्से में फैक्ट्री लगाना उतना ही सस्ता था, जितना बंगाल में। दूसरी बड़ी बाधा बनी श्रमिक अशांति और घेराव। बार-बार होने वाली हड़तालों और उग्र श्रमिक आंदोलनों के कारण पूंजी का पलायन शुरू हुआ। इसका नतीजा यह हुआ कि शहरी बेरोजगारी और मध्यम वर्ग के गुस्से ने 1977 में कांग्रेस सरकार को उखाड़ फेंका और वाम मोर्चा के लिए रास्ता साफ कर दिया। 1960 से 1977 तक राज्य में कांग्रेस की सरकारें रहीं।

वाम मोर्चा का शासन, 1977-2011: वामपंथियों के 34 साल के शासन को दो चरणों में देखा जा सकता है। पहला है ग्रामीण सशक्तीकरण का। सरकार ने आपरेशन बर्गा के जरिये भूमि सुधार लागू किए। इससे भूमिहीन किसानों को अधिकार मिले और बंगाल चावल उत्पादन में अग्रणी बना। इसने वामपंथियों को एक मजबूत ग्रामीण वोट दिया। 20वीं सदी के नौवें दशक के अंत तक लोगों को भूमि सुधारों का लाभ मिलना बंद हो गया। छोटी जोत से बढ़ती आबादी का पेट भरना मुश्किल था। 1991 के बाद शेष भारत जहां उदारीकरण का लाभ उठा रहा था, वहीं बंगाल का औद्योगिक विकास ठप था। बंगाल साक्षरता में तो आगे रहा, लेकिन उच्च शिक्षा और निजी क्षेत्र की नौकरियों में पिछड़ गया। जब सरकार ने सिंगूर (टाटा नैनो) और नंदीग्राम में उद्योग के लिए जबरन जमीन अधिग्रहण की कोशिश की, तो वही किसान उनके खिलाफ हो गए, जिन्हें उन्होंने कभी सशक्त किया था। इसी आर्थिक तनाव ने 2011 में तृणमूल कांग्रेस को सत्ता में पहुंचाया।

टीएमसी का कल्याणकारी माडल, 2011-26: 2011 में ममता बनर्जी के नेतृत्व में टीएमसी सरकार ने भारी उद्योग के बजाय कल्याणकारी योजनाओं पर ध्यान केंद्रित किया और महिलाओं सहित समाज के कई वर्गों के लिए डायरेक्ट बेनेफिट ट्रांसफर स्कीमों के तहत कैश मुहैया कराया गया। इससे ममता बनर्जी को चुनावी सफलताएं भी मिलीं, लेकिन ढांचागत सुविधाओं और शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार सृजन के लिए निवेश न होने से राज्य आर्थिक मोर्चे पर पिछड़ता चला गया।

मानव विकास सूचकांक में ये है स्थिति

2024-2025 तक, बंगाल का मानव विकास सूचकांक (एचडीआइ) "उच्च" (लगभग 0.719) की श्रेणी में है, लेकिन देश के अन्य राज्यों की तुलना में इसकी स्थिति कमजोर है।

सफलता: शिशु मृत्यु दर में कमी, महिला स्वास्थ्य और ग्रामीण विद्युतीकरण में बंगाल ने अच्छा प्रदर्शन किया है।

चुनौतियां: बंगाल की प्रति व्यक्ति आय लगभग 1.71 लाख रुपये सालाना है, जो राष्ट्रीय औसत से कम बनी हुई है। देश की प्रति व्यक्ति आय सालाना करीब 2.10 लाख रुपये है।

पश्चिम मेदिनीपुर में सोमवार को भाजपा की जीत का जश्न मनाते कार्यकर्ता • आइएएनएस

आर्थिक मापदंड और चुनौतियां

जीडीपी में हिस्सेदारी: 1960 में भारत की जीडीपी में बंगाल की हिस्सेदारी 10.5 प्रतिशत थी, जो 2024 तक गिरकर लगभग 5.6 प्रतिशत रह गई।

ऋण का बोझ: राज्य पर कर्ज का भारी बोझ है (राज्य की जीडीपी का लगभग 37.98%), जो बड़े बुनियादी ढांचे में निवेश की क्षमता को सीमित करता है।

प्रतिभा पलायन : आइटी और मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर में बड़े निवेश की कमी के कारण बंगाल का युवा बेहतर अवसरों के लिए बेंगलुरु और हैदराबाद जैसे शहरों की ओर पलायन कर रहा है।

असम और बंगाल में भाजपा ने चुराए चुनाव : राहुल

नई दिल्ली, प्रेट्र : कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सोमवार को आरोप लगाया कि असम और बंगाल ऐसे स्पष्ट मामले हैं जहां भाजपा ने चुनाव आयोग की मदद से चुनाव "चुराए" हैं। राहुल ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, "असम और बंगाल ऐसे स्पष्ट मामले हैं जहां भाजपा ने चुनाव आयोग की मदद से चुनाव चुराए हैं। हम ममता जी से सहमत हैं। बंगाल में 100 से अधिक सीटें चुराई गई हैं।" लोकसभा में नेता विपक्ष ने कहा, "हमने यह तरीका पहले भी देखा है। मध्य प्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र और लोकसभा चुनाव 2024 आदि।" उन्होंने कहा, "चुनाव चोरी, संस्था चोरी- अब और चारा ही क्या है!" गौरतलब है कि ममता बनर्जी ने बंगाल चुनावों में भाजपा की भारी जीत को अनैतिक बताया और आरोप लगाया कि सौ से अधिक सीटों पर जनादेश "लूटा" गया है।

कुछ ही समय में सियासी 'स्टार्टअप' से 'यूनिकार्न' बनी टीवीके

तमिलनाडु में पहले ही चुनाव में सत्ता तक पहुंची टीवीके, सियासी पारी के आगाज से हैरान किया

तेदेपा, आप, अगप को पहले चुनाव में मिल चुकी है सफलता

नई दिल्ली, प्रेट्र : तमिल फिल्मों के सुपरस्टार विजय ने अपनी सियासी पारी के आगाज से न सिर्फ सबको हैरान कर दिया, बल्कि उनकी पार्टी तमिलागा वेत्रि कषगम (टीवीके) अपने गठन के दो साल के भीतर ही देश के उन चंद सियासी 'स्टार्टअप' में शामिल हो गई जो अपने पहले ही चुनाव में सत्ता तक पहुंचने में सफल रही। टीवीके कुछ ही समय में सियासी 'स्टार्टअप' यानी नई राजनीतिक पार्टी से सियासी 'यूनिकार्न' यानी एक बेहद सफल और बड़ी पार्टी का दर्जा प्राप्त किया है। बहुत कम सियासी स्टार्टअप यूनिकार्न बन पाए हैं, कुछ को समय लगा, जबकि अन्य अपनी छाप छोड़ने में असफल रहे।

गौरतलब है कि एक अरब डालर से अधिक मूल्यांकन वाली स्टार्टअप कंपनी को यूनिकार्न कहते हैं।

तेलुगु देसम पार्टी (टीडीपी), आम आदमी पार्टी (आप) और असम गण परिषद (एजीपी) के नक्शेकदम पर चलते हुए टीवीके अपने पहले ही चुनावी मुकाबले के बाद सरकार बनाने की दहलीज पर है।

चेन्नई स्थित अपने पिता के आवास से अपने प्रशंसकों का अभिवादन स्वीकारते विजय। विजय की पार्टी ने तमिलनाडु विस चुनाव में खबर लिखे जाने तक 107 सीटों पर विजय हासिल की थी। एएनआइ

तेदेपा ने 1983 में आंध्र प्रदेश विस चुनाव में हासिल की थी एकतरफा जीत : एनटी रामाराव के नेतृत्व में तेदेपा ने अपने गठन के एक साल बाद 1983 में आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनाव में 201 सीटें जीतकर एकतरफा जीत हासिल की थी, वहीं आप ने 2013 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में अपनी सियासी पारी की शुरुआत की थी।

आप ने 70 सदस्यीय विधानसभा चुनाव में 28 सीटें जीतकर कांग्रेस के समर्थन से सरकार बनाई थी, वहीं असम गण परिषद 1985 में अपने गठन के तुरंत बाद निर्दलीय विधायकों की मदद से सत्ता पर काबिज हुई थी।

कुछ नए दलों की चर्चाएं तो हुईं, लेकिन चुनावों में नहीं मिली सफलता : कई ऐसे भी दल भी रहे, जिनकी चर्चाएं तो खूब हुईं, लेकिन उन्हें चुनावों में सफलता नहीं मिल सकी। पिछले साल बिहार विधानसभा चुनाव में प्रशांत किशोर की 'जन सुराज पार्टी' चौतरफा चर्चाओं के बावजूद सफलता हासिल नहीं कर सकी। इसी तरह अभिनेता कमल हासन की पार्टी मक्कल निधि मय्यम 2021 को तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में एक भी सीट नहीं मिली।

दिलचस्प है कि खबरों के मुताबिक प्रशांत किशोर ने टीवीके को चुनाव रणनीति बनाने में मदद की थी। बिहार और उत्तर प्रदेश में पिछले कुछ वर्षों के दौरान कई राजनीतिक दल सियासी 'स्टार्टअप' के रूप में सामने आए, जिनमें कुछ नाकाम हुए और कुछ सीमित दायरे में कायम हैं।

बिहार में पुष्पम प्रिया चौधरी की 'प्लूरल्स पार्टी' भी चर्चा के बावजूद सफलता हासिल नहीं कर सकी।

जीतन राम मांझी की हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (सेक्युलर) और उपेंद्र कुशवाहा की राष्ट्रीय लोक मोर्चा बिहार में सीमित दायरे में अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। उत्तर प्रदेश में निषाद पार्टी, पीस पार्टी, अपना दल (सोनेलाल) और सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) जैसी कुछ ऐसे ही दल हैं।

खास विजय का आम तरीका तमिलनाडु के मुख्यमंत्री की कुर्सी तक ले आया

- अपनी पार्टी के लिए द्रविड़ विचारधारा और तमिल राष्ट्रवाद को जोड़ा
- बच्चों को अपने माता-पिता से टीवीके को वोट देने के लिए प्रेरित किया

चेन्नई, प्रेट्र : करीब 25-30 साल पहले यह सोचना भी असंभव था कि शर्मीले और सौम्य स्वभाव के फिल्मस्टार चंद्रशेखर जोसेफ विजय एक दिन एक राजनीतिक पार्टी लांच करेंगे और अपने पहले चुनाव में ही मुख्यमंत्री बनेंगे। अब 51 वर्षीय विजय 'थलाइवन' (नेता) और 'मुख्यमंत्री' के रूप में सफलतापूर्वक उभरे हैं।

ईसाई पिता और हिंदू मां की संतान विजय ने अपनी पार्टी की विचारधारा तैयार करने में द्रविड़ विचारधारा और तमिल राष्ट्रवाद के तत्वों को शानदार ढंग से जोड़ा। दक्षिण भारतीय अभिनेता विजय थलपति द्वारा फरवरी, 2024 में स्थापित टीवीके तमिलनाडु और पुडुचेरी में सक्रिय है। तमिलगा वेट्री कझागम का अर्थ है तमिलनाडु विजय पार्टी।

600 करोड़ रुपये की संपत्ति के मालिक विजय का वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण हो जाना चुनाव प्रचार के दौरान ही उजागर हुआ, लेकिन वह भी उनकी राजनीतिक सफलता में रुकावट नहीं बना और उनकी रैली में भगदड़ के हादसे को भी लोग भूल गए। विजय ने मुख्यधारा के राजनीतिक दलों और उनके पारंपरिक वोट मांगने के तरीकों से भिन्नता दिखाई।

विजय ने सभी निर्वाचन क्षेत्रों में उम्मीदवारों का परिचय नहीं दिया और ना ही सभी क्षेत्रों का दौरा किया या रैलियों को संबोधित किया। उन्होंने किशोरों, युवाओं और बच्चों को अपने माता-पिता को टीवीके के लिए वोट देने के लिए प्रेरित किया। उनके संदेश इंटरनेट मीडिया पर और उनके प्रशंसकों और अनुयायियों के जरिये साझा किए गए। उन्होंने न तो प्रेस से मुलाकात की और न ही साक्षात्कार दिए।

सोना देने के चुनावी वादे से मिली स्वर्णिम विजय

विजय ने अपने लोकलुभावन चुनावी वादों में महिलाओं का विशेष ध्यान रखा। इसमें उन्हें विवाह के लिए 22 कैरेट का आठ ग्राम सोना देने से लेकर 60 साल से कम आयु की महिलाओं को 2500 मासिक सहायता, प्रति परिवार छह मुफ्त रसोई गैस सिलिंडर देने का वादा शामिल है। गरीब दुल्हनों के लिए रेशमी साड़ी और महिलाओं द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूहों के लिए पांच लाख रुपये तक के ब्याज-मुक्त ऋण का आश्वासन दिया। उन्होंने अपनी पहली चुनावी लड़ाई में सत्ता में आने पर भ्रष्टाचार-मुक्त अच्छे शासन का आश्वासन दिया। घोषणापत्र में शिक्षा पर भी जोर दिया। वह स्कूल छोड़ने की रोकथाम के लिए सरकारी और राज्य सहायता प्राप्त स्कूलों के बच्चों की माताओं या अभिभावकों को वार्षिक 15,000 रुपये देंगे। बेरोजगार स्नातकों को 4,000 रुपये तक की मासिक सहायता देने, सरकारी कर्मचारियों के लिए पुरानी पेंशन योजना पर विचार करने का आश्वासन दिया।

तमिल राजनीति में द्रमुक और अन्नाद्रमुक बने रहे दो ध्रुव

प्रथम पृष्ठ से आगे

जातीय राजनीति करने वाले छोटे-छोटे राजनीतिक दल कई बने और सत्ता में भागीदारी भी करते रहे, लेकिन सत्ता के दो ही ध्रुव रहे-द्रमुक और अन्नाद्रमुक। मगर, इस बार चुनावी माहौल बदला हुआ था। मतदाता न तो सत्ताधारी द्रमुक के समर्थन में थे और न ही अन्नाद्रमुक के लिए मुखर थे। हां, टीवीके पार्टी बनाने वाले अभिनेता विजय जरूर पहले ही चुनाव में हर वर्ग के युवाओं में विशेष तौर पर चर्चा में थे। संभावना जताई जा रही थी कि वह इस बार चुनाव में एक्स फैक्टर साबित हो सकते हैं, लेकिन यह उम्मीद शायद ही किसी को रही हो कि उनका फिल्मी स्टारडम द्रविड़ राजनीति के किले को इस तरह ढहा सकता है। दरअसल, इससे पहले मेगा स्टार रजनीकांत ने भी 2017 में आरएमएम पार्टी बनाई, लेकिन 2021 में कदम वापस खींच लिए। कमल हासन 2018 में एमएनएम पार्टी बनाकर राजनीति में उतरे, लेकिन सफलता नहीं मिली। तमिल सिनेमा स्टार सरथकुमार हों या दिवंगत विजयकांत की पार्टी, कोई राजनीति में बड़ा फेरबदल नहीं कर सकी। ऐसे में माना जा रहा था कि हो सकता है कि मतदाता अभी विजय की राजनीतिक परिपक्वता को परखना चाहे, लेकिन परिणामों से स्पष्ट है कि द्रमुक और अन्नाद्रमुक से ऊब चुका मतदाता विकल्प के लिए व्याकुल था।

अभी सत्ता के सिंहासन से कुछ कदम दूरी पर खड़े टीवीके प्रमुख विजय किसके समर्थन से सरकार का गठन करेंगे, यह जल्द स्पष्ट हो जाएगा। इस तरह वह फिल्मी दुनिया से तमिलनाडु के मुख्यमंत्री तक का सफर तय करने वाले अन्नाद्रमुक संस्थापक एमजी रामचंद्रन, जयललिता और एम. करुणानिधि की सूची में अपना नाम लिखवाने जा रहे हैं। हालांकि, भविष्य की राजनीति के दृष्टिकोण से अगले पांच वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होंगे।

यदि विजय राज्य में विकास की राजनीति को आगे बढ़ाते हैं तो यहां से द्रविड़ राजनीति का अध्याय उपसंहार की ओर बढ़ जाएगा। इसके साथ ही अन्य राष्ट्रीय दलों के लिए प्रतिस्पर्धी जमीन यहां तैयार होने की संभावना बढ़ जाएगी।

बंगाल में एक्जिट पोल असल नतीजों के सबसे करीब रहे

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

- केरल में सभी सर्वेक्षण एजेंसियों ने कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ की जीत की संभावना जताई थी
- तमिलनाडु में अधिकतर सर्वेक्षणों ने द्रमुक के नेतृत्व वाले गठबंधन की जीत का अनुमान जताया था

चुनाव बाद जारी कई सर्वेक्षणों (एक्जिट पोल) में बंगाल, असम और केरल को लेकर किए गए ज्यादातर पूर्वानुमान असल नतीजों के करीब रहे तथा एक प्रमुख सर्वेक्षण एजेंसी द्वारा तमिलनाडु में टीवीके को लेकर किया गया आकलन तो पूरी तरह सटीक साबित हुआ। 'एक्सिस माय इंडिया' का अनुमान था कि अभिनेता विजय की पार्टी टीवीके अपने पहले ही चुनाव में 98 से 120 सीटों के साथ सरकार बनाने के करीब पहुंच सकती है। यह आकलन असल नतीजों में सही साबित हुआ। टीवीके फरवरी, 2024 में अस्तित्व में आई थी। वैसे, ज्यादातर एक्जिट पोल ने बंगाल और असम में भाजपा की जीत तथा केरल में यूडीएफ की जीत की संभावना जताई थी।

कुछ सर्वेक्षणों ने बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की जीत की संभावना भी जताई थी। 'पीपुल्स पल्स' के सर्वे में कहा गया था कि तृणमूल कांग्रेस 177 से 187 सीटें हासिल करके अपनी सत्ता बरकार रख सकती है। भाजपा को 95 से 110 सीटें मिलने का अनुमान लगाया था। कांग्रेस को एक से तीन सीट मिलने की संभावना जताई गई थी। 'जनमत पोल्स' के एक्जिट पोल में कहा गया था कि तृणमूल कांग्रेस को 195 से 205 सीटें मिल सकती हैं तो भाजपा को 80 से 90 सीटों से ही संतोष करना पड़ सकता है। 'पोल डायरी' के सर्वे का अनुमान था कि बंगाल में भाजपा 142 से 171 सीटों के साथ पहली बार सत्ता में आ सकती है।

प्रतीकात्मक

इस सर्वेक्षण में संभावना जताई गई थी कि तृणमूल कांग्रेस को 99 से 127 सीटों से ही संतोष करना पड़ सकता है। 'मैट्रिज' के सर्वेक्षण में कहा गया था कि बंगाल में भाजपा 146 से 161 सीटों के साथ सरकार बना सकती है और टीएमसी को 125 से 140 सीटें मिल सकती है तथा वह सत्ता से बाहर हो सकती है। 'पी-मार्क' के सर्वेक्षण में कहा गया था कि बंगाल में भाजपा को 150 से 175 सीटें मिल सकती हैं तो टीएमसी को 118-138 सीटें मिलने का अनुमान है। 'टुडेज चाणक्य' ने बंगाल में भाजपा को 192 सीटें और तृणमूल कांग्रेस को 100 सीटें मिलने का अनुमान लगाया था।

असम को लेकर सभी सर्वेक्षणों में भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन की जीत की संभावना जताई गई थी। 'एक्सिस माय इंडिया' के सर्वेक्षण में कहा गया था कि असम में भाजपा नीत राजग 88 से 100 सीटें जीत सकता है तथा कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन को 24 से 36 सीटें मिल सकती हैं। 'मैट्रिज' के एक्जिट पोल में कहा गया था कि असम में भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन को 85 से 95 सीटें के साथ प्रचंड बहुमत मिल सकता है, जबकि कांग्रेस नीत गठबंधन 25 से 32 सीटों पर ही सिमट सकता है। 'जनमत पोल्स' का अनुमान था कि असम में भाजपा नीत गठबंधन को 87 से 98 सीटें हासिल हो सकती हैं तथा कांग्रेस के नेतृत्व वाला गठबंधन 29 से 30 सीटों पर ही सिमट सकता है। 'जेवीसी' के एग्जिट पोल में कहा गया था कि असम में भाजपा की अगुवाई वाले गठबंधन को 88 से 101 सीटों के साथ प्रचंड बहुमत मिल सकता है, वहीं कांग्रेस नीत गठबंधन को सिर्फ 23 से 33 सीटें मिलने का अनुमान है। केरल को लेकर लगभग सभी सर्वेक्षण एजेंसियों ने सत्ता से एलडीएफ की विदाई और कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ की जीत की संभावना जताई थी।

अधिकतर सर्वेक्षणों ने द्रमुक गठबंधन का अनुमान जताया

तमिलनाडु में अधिकतर सर्वेक्षणों ने द्रमुक के नेतृत्व वाले गठबंधन की जीत का अनुमान जताया था। हालांकि 'एक्सिस माय इंडिया' ने टीवीके के पहले ही चुनाव में बहुमत के करीब पहुंचने का अनुमान लगाया था। उसका आकलन था कि विजय की पार्टी को 234 सदस्यीय विधानसभा में 108 से 120 सीटें मिल सकती हैं। 'एक्सिस माय इंडिया' के सर्वेक्षण में कहा गया था कि द्रमुक के नेतृत्व वाले गठबंधन को 92 से 110 सीटें मिलने तथा अन्नाद्रमुक की अगुवाई वाले राजग को सिर्फ 22 से 32 सीटें हासिल होने का अनुमान है। 'पीपुल्स पल्स' ने द्रमुक के नेतृत्व वाले गठबंधन को 125 से 145 सीटें मिलने का अनुमान लगाया था। उसका अनुमान था कि राजग को 65 से 80 तथा अभिनेता विजय की पार्टी टीवीके को 18 से 24 सीटें मिलेंगी। 'मैट्रिज' के सर्वेक्षण में कहा गया था कि द्रमुक के नेतृत्व वाला गठबंधन 122 से 132 सीटों के साथ सत्ता बरकरार रख सकता है तथा अन्नाद्रमुक के नेतृत्व वाले राजग को 87 से 100 सीटें मिलने का अनुमान है। टीवीके को 10 से 12 हासिल हो सकती हैं। पुडुचेरी को लेकर ज्यादातर सर्वेक्षण का अनुमान था कि आल इंडिया एनआर कांग्रेस (एआइएनआरसी) की अगुवाई वाले राजग गठबंधन को बहुमत मिल सकता है।

राहुल गांधी की 99वीं चुनावी हार

दो दशक से ज्यादा समय से कांग्रेस के प्रमुख नेता रहे राहुल गांधी 99 बार चुनावी हार देख चुके हैं (लोकसभा व विधानसभा चुनाव मिलाकर)

लोकसभा 2014, 2019, 2024

राज्य	साल
जम्मू-कश्मीर	2014
पंजाब	2007, 2012, 2022
हरियाणा	2014,2019, 2024
दिल्ली	2013, 2015, 2020, 2025
गुजरात	2007, 2012, 2017, 2022
महाराष्ट्र	2014, 2019, 2024
अरुणाचल	2019, 2024
कर्नाटक	2004, 2008, 2018
केरलम	2006, 2016, 2021
हिमाचल प्रदेश	2007, 2017
उत्तराखंड	2007, 2017, 2022
उत्तर प्रदेश	2007, 2012, 2017, 2022
बिहार	2005, 2010, 2020, 2025
सिक्किम	2004, 2009, 2014, 2019, 2024

राज्य	साल
गोवा	2012, 2017, 2022
असम	2016, 2021, 2026
नागालैंड	2008, 2013, 2018, 2023
मणिपुर	2017, 2022
मिजोरम	2018, 2023
त्रिपुरा	2008, 2013, 2018, 2023
मेघालय	2018, 2023
झारखंड	2005, 2009, 2014
बंगाल	2006, 2016, 2021, 2026
राजस्थान	2013, 2023
मध्य प्रदेश	2008, 2013, 2018, 2023
तेलंगाना	2014, 2018
आंध्र प्रदेश	2014, 2019, 2024
पुडुचेरी	2011, 2021, 2026
तमिलनाडु	2011, 2016, 2026

केरलम में हार के साथ पहली बार वामदलों की अब किसी भी राज्य में नहीं सरकार

- 'लाल' किले के ढहने से वामपंथी सरकार का हुआ ऐतिहासिक सूर्यास्त
- 1977 के बाद पहली बार किसी भी राज्य में वामपंथियों की नहीं होगी सरकार

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारतीय राजनीति के मानचित्र पर दशकों तक अपनी गहरी 'लाल' छाप छोड़ने वाला वामपंथ आज एक ऐसे मोड़ पर पहुंच चुका है, जहां उसके पैरों के नीचे से आखिरी जमीन भी खिसक चुकी है। केरलम विधानसभा चुनावों के परिणामों ने न केवल वाम लोकतांत्रिक मोर्चे (एलडीएफ) की हार सुनिश्चित कर दी, बल्कि पिछले पांच दशकों के उस गौरवशाली अध्याय पर भी विराम लगा दिया जिसमें कम्युनिस्टों के पास कम से कम एक राज्य की सत्ता सुरक्षित रहती थी। कभी राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीति में एक शक्तिशाली ताकत रहने वाले वामदल अब 50 वर्षों से अधिक समय में पहली बार सभी राज्यों में सत्ता से बेदखल हो चुके हैं। दस साल बाद राज्य में कांग्रेस नीत यूडीएफ सरकार बनाएगी। 1977 के बाद यह पहला अवसर होगा जब देश के किसी भी राज्य में वामपंथियों की सरकार नहीं होगी।

सत्ता का आखिरी गढ़ और ऐतिहासिक विरासत : इस क्षण की गंभीरता को समझने के लिए अतीत पर एक नजर डालना जरूरी है। केरलम सिर्फ एक राज्य नहीं, बल्कि संसदीय साम्यवाद की वैश्विक प्रयोगशाला रहा है। 1957 में ईएमएस नंबूदरीपाद के नेतृत्व में यहीं दुनिया की पहली लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई कम्युनिस्ट सरकार बनी थी। 2011 में बंगाल के 34 वर्षों के शासन के अंत और 2018 में त्रिपुरा के पतन के बाद, केरलम ही वह आखिरी किला था जिसने वामपंथ को राष्ट्रीय राजनीति में प्रासंगिक बनाए रखा था। 2021 में लगातार दूसरी बार जीत दर्ज कर इतिहास रचने वाली एलडीएफ के लिए यह हार केवल सत्ता का जाना नहीं, बल्कि उस सांगठनिक ऊर्जा का अंत है जो सरकारी संरक्षण से फलती-फूलती थी।

राष्ट्रीय राजनीति में सिकुड़ता प्रभाव: एक समय था जब केंद्र की राजनीति वामदलों के इशारों पर घूमती थी। 2004 के दौर को याद करें, जब 61 लोकसभा सीटों के साथ वामपंथियों ने संप्रग सरकार की नीतियों की दिशा तय की थी। 1996 में तो ज्योति बसु, जो पहले ही दो दशकों तक बंगाल के मुख्यमंत्री रह चुके थे, संयुक्त मोर्चा गठबंधन के हिस्से के रूप में प्रधानमंत्री पद के करीब पहुंच गए थे। बसु इस पद को स्वीकार करने के लिए तैयार थे, लेकिन उनकी पार्टी के पोलित ब्यूरो ने प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

2014 से अब तक 2 गुना से अधिक बढ़ी है देश में भाजपा विधायकों की संख्या

राज्य	सितंबर, 2013	मई, 2026
आंध्र प्रदेश	2	8
अरुणाचल प्रदेश	3	46
असम	5	82
बिहार	91	89
छत्तीसगढ़	50	54
दिल्ली	23	48
गोवा	21	27
गुजरात	115	161
हरियाणा	4	48
हिमाचल प्रदेश	26	25
जम्मू-कश्मीर	11	29
झारखंड	18	21
कर्नाटक	40	64
केरलम	0	3*
मध्यप्रदेश	143	165

राज्य	सितंबर, 2013	मई, 2026
महाराष्ट्र	46	131
मणिपुर	0	36
मेघालय	0	2
मिजोरम	0	2
नागालैंड	1	11
ओडिशा	6	79
पंजाब	12	2
पुडुचेरी	0	3*
राजस्थान	78	118
सिक्किम	0	0
तमिलनाडु	0	2*
तेलंगाना	–	7
त्रिपुरा	0	32
उत्तर प्रदेश	47	257
उत्तराखंड	31	47
बंगाल	0	199*
कुल	773	1798

जीत भी नहीं दूर कर पाई विपक्षी खेमे की मायूसी

अरविंद पांडेय ● जागरण

- बंगाल में तृणमूल और तमिलनाडु में द्रमुक की करारी हार के बाद विपक्षी खेमे में बढ़ेगा घमासान
- कांग्रेस ने असम में हार के पीछे परिसीमन, तो बंगाल में पार्टी के कमजोर संगठन को बताया जिम्मेदार

नई दिल्ली : पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में भले ही केरलम में कांग्रेस गठबंधन को जीत मिली है, लेकिन इसके बाद भी बंगाल, तमिलनाडु, असम व पुडुचेरी में जिस तरह से हार का सामना करना पड़ा है, उससे विपक्षी खेमे में भारी मायूसी दिखी। यह बात अलग है कि इन चुनावों में कांग्रेस ने कुछ खोया नहीं, बल्कि पाया ही है। केरलम में उसकी जीत के बड़े मायने हैं। वह भी तब जब बंगाल व तमिलनाडु में विपक्षी दल ढेर हो गए। ऐसे में कांग्रेस की जीत विपक्षी खेमे में उसकी बढ़त बनाए हुए है। यही वजह है कि हार पर अक्सर कड़ी प्रतिक्रिया देने वाली कांग्रेस नतीजों के बाद बेहद सधी प्रतिक्रिया दे रही है।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने केरलम की जीत पर राज्य के लोगों को धन्यवाद दिया है। वहीं कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि केरलम को छोड़ दें तो अन्य नतीजे हमारी उम्मीदों के अनुरूप नहीं हैं। लेकिन, हम न निराश हैं और न हताश। हम विचारधारा की लड़ाई लड़ रहे हैं। जल्द ही हम नतीजों का गहराई से विश्लेषण करेंगे। कांग्रेस असम में भी जीत की उम्मीद लगाए थी। हालांकि, नतीजों के बाद पार्टी नेताओं का कहना था कि परिसीमन के साथ राज्य में कमजोर संगठन व नेताओं के बीच आपसी गुटबाजी हार का बड़ा कारण है। बंगाल व तमिलनाडु में कांग्रेस कहीं लड़ाई में नहीं थी। ऐसे में वहां की जीत-हार का उस पर कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है। वैसे भी बंगाल में तृणमूल और कांग्रेस ने अलग-अलग ही चुनाव लड़ा था।

इन चुनावी नतीजों पर अभी भले ही विपक्षी खेमे में मायूसी है, लेकिन जल्द ही विपक्षी दलों के बीच इस करारी हार को लेकर घमासान देखने को मिल सकता है। राजनीतिक विश्लेषकों की मानें तो यह घमासान राष्ट्रीय स्तर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने को लेकर दिखेगा, वहीं पार्टी के भीतर अंदरूनी खींचतान भी दिखेगा। खासकर तमिलनाडु में द्रमुक के भीतर स्टालिन के वर्चस्व को लेकर परिवार के भीतर यह खींचतान दिख सकता है। वहीं तृणमूल के भीतर भी आपसी टकराव तेज हो सकता है। ममता बनर्जी भी राज्य में हार के बाद केंद्रीय राजनीति में सक्रिय हो सकती हैं। इसका असर केंद्र की राजनीति में देखने को मिल सकता है।

पुडुचेरी में राजग को मिला बहुमत

- यह गठबंधन 30 सदस्यीय विधानसभा में 17 सीटों पर या तो आगे चल रहा है या हासिल कर चुका है जीत

पुडुचेरी, एएनआइ : राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (राजग) केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में सत्ता बरकरार रखने के लिए तैयार है। मुख्यमंत्री एन रंगासामी के नेतृत्व वाले गठबंधन ने बहुमत का आंकड़ा पार कर लिया है। वर्तमान में यह गठबंधन 30 सदस्यीय विधानसभा में 17 सीटों पर या तो आगे चल रहा है या जीत हासिल कर चुका है। एआइएनआरसी गठबंधन की सबसे मजबूत पार्टी बनी हुई है। उसने 11 सीटें (9 जीत, 2 बढ़त) हासिल की है। बहुमत का आंकड़ा 16 है। डीएमके दो सीटें जीतने और तीन अन्य सीटों पर बढ़त के साथ कुल पांच सीटों पर दूसरे स्थान पर है। भाजपा ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए दो सीटें जीती हैं और दो अन्य सीटों पर बढ़त बनाए हुए है। इससे उसकी कुल सीटें चार हो गई हैं।

टीवीके हालांकि एक प्रमुख दावेदार नहीं है फिर भी उसने दो सीटें जीती हैं, जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक सीट हासिल की है। लच्छिया जननायक कत्ची (एलजेके) और एआइएडीएमके जैसी अन्य पार्टियों ने एक-एक सीट जीती हैं। नेयम मक्कल कजगम (एनवाईएमके) को कोई जीत नहीं मिली है, लेकिन वह एक सीट पर आगे रहते हुए मुकाबले में बनी हुई है। पुडुचेरी में राजग गठबंधन का नेतृत्व एआइएनआरसी कर रही है। इसमें भाजपा, एआइएडीएमके और एलजेके शामिल हैं। थट्टांचावडी निर्वाचन क्षेत्र में एआइएनआरसी के पुडुचेरी के मुख्यमंत्री एन. रंगासामी ने 10,024 वोट प्राप्त कर 4,441 वोटों की बढ़त के साथ जीत हासिल की। एनवाईएमके के ई. विनयगम 5,583 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे, जबकि निर्दलीय उम्मीदवार के. सेथु उर्फ सेथुसेल्वम को 3,984 वोट मिले।

अरियांकुप्पम में एआइएनआरसी के सी. अय्यप्पन उर्फ मौतायप्पन ने 14,210 वोट प्राप्त कर 603 वोटों की बढ़त के साथ जीत दर्ज की।

22 राज्यों में भाजपा और सहयोगियों की सरकार

पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा ने असम में सत्ता में वापसी की है तो पश्चिम बंगाल में पहली बार सरकार बनाने जा रही है। अब देश के 22 राज्यों में भाजपा व सहयोगियों की सरकार होगी।

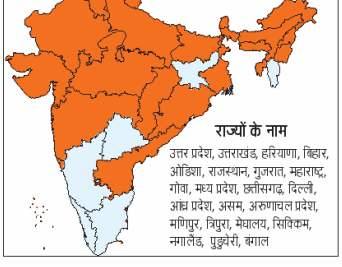

राज्यों के नाम

उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, बिहार, ओडिशा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, सिक्किम, नगालैंड, पुडुचेरी, बंगाल

15 हजार स्कालरशिप देने की घोषणा सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने मीडिया, एंटरटेनमेंट, गेमिंग और एनिमेशन जैसे क्षेत्रों में एआइ की ट्रेनिंग के लिए की है। इस पहल का मकसद युवाओं को नई तकनीक से लैस करना और उन्हें भविष्य के करियर के लिए तैयार करना है।

www.jagran.com
राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
मंगलवार, 5 मई, 2026

भारत का प्रतिशोध कहर बनकर बरपा, कांप उठा था दुश्मन

'आपरेशन सिंदूर' का एक वर्ष

पहली कड़ी

- छह-सात मई की मध्यरात्रि : पहलगाम के गुनहगारों को छिपने की जगह तक नहीं मिली
- पाकिस्तान और गुलाम जम्मू-कश्मीर में तबाह कर दिया गया आतंक का साम्राज्य
- दुश्मन ने नागरिक ठिकानों को निशाना बनाया तो हमारी स्वदेशी तकनीक आई काम

जम्मू के मढ़ क्षेत्र में भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा पर बसा गांव। इस गांव के ठीक सामने पाकिस्तान की सीमा है। जागरण >>

नवीन नवाज • जागरण

श्रीनगर : पहलगाम के बैसरन में निर्दोष 26 लोगों की निर्मम हत्या से धरती खून से लाल थी। इस कायरतापूर्ण हमले से पूरा देश आक्रोश में था। दुश्मन के घर में घुसकर बालाकोट एयरस्ट्राइक जैसा बदला लेने की मांग उठ रही थी। अग्रिम चौकियों पर तैनात जवान नियंत्रण रेखा (एलओसी) लांघने के लिए एक आदेश के इंतजार में थे। तभी छह-सात मई की मध्यरात्रि लगभग एक बजे गुलाम जम्मू-कश्मीर के मुजफ्फराबाद से लेकर पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद और लाहौर तक आतंकी ठिकानों पर जोरदार धमाकों से सबकुछ बदल गया। पहलगाम के गुनहगारों को छिपने की जगह तक नहीं मिली। यह सिर्फ धमाके नहीं थे, बल्कि भारत का प्रतिशोध था, जो आपरेशन सिंदूर के रूप में दुश्मन पर कहर बनकर बरपा था।

भारतीय सेनाओं ने बिना सीमा लांघे और बिना नागरिक ठिकाने को निशाना बनाए आतंकियों के साम्राज्य को तबाह कर दिया। भारत की इस कार्रवाई से दुश्मन कांप उठा। आपरेशन सिंदूर में भारत ने अपनी स्वदेशी तकनीक का उपयोग किया। 'आकाश' जैसी मिसाइल प्रणाली और आधुनिक ड्रोन तकनीक ने अहम भूमिका निभाई। एकीकृत कमांड प्रणाली ने सेना, नौसेना और वायुसेना में बेहतर तालमेल सुनिश्चित किया। भारत की ताकत का अहसास केवल पाकिस्तान को ही नहीं हुआ, बल्कि पूरी दुनिया ने लोहा माना।

हर कोई बोला-पाकिस्तान को सबक सिखाना जरूरी : जम्मू के सीमावर्ती अखनूर में चिनाब नदी के किनारे पहले गांव परगवाल के निवासी रोहित ने कहा, सात मई का जब सूरज निकला तो हमें पाकिस्तान की जवाबी कार्रवाई का डर नहीं, बल्कि उससे बदला पूरा करने का जोश था। हमें पता था कि हम पर भी गोले गिरेंगे, लेकिन गांव में सभी यही कह रहे थे कि इस बार पाकिस्तान को सबक सिखाना जरूरी है।

जवानों से कहा, जूते मत उतारना, एलओसी पार करेंगे : उड़ी में तैनात रहे कर्नल रैंक के एक अधिकारी ने बताया कि हमें कहा गया था कि दुश्मन पर टूट पड़ने के लिए तैयार रहो। हम अगले आदेश का इंतजार कर रहे थे। उम्मीद थी कि हमें एलओसी पार करने और हाजीपीर (गुलाम जम्मू-कश्मीर) में तिरंगा फहराने का मौका मिलेगा। उसी उत्साह में हमने अपने जवानों से कहा, जूते मत उतारना, आगे बढ़ने को तैयार रहो, लेकिन छह-सात मई की मध्यरात्रि को मुजफ्फराबाद में कार्रवाई हो गई।

ग्रामीणों ने ही दुश्मन का क्वाडकाप्टर गिरा दिया : राजवीर नामक एक युवक ने कहा कि अरनिया सेक्टर में एक जगह दुश्मन का क्वाडकाप्टर (ड्रोन) काफी नीचे आया तो लोगों ने उसे गिरा दिया। सभी पहलगाम का बदला चाहते थे। उस समय जो जिस तरह से सेना का सहयोग कर सकता था, कर रहा था।

चीनी मिसाइल और तुर्किये के ड्रोन पर भारी पड़ी भारतीय रक्षा प्रणाली

शौर्य चक्र, कीर्ति चक्र समेत विभिन्न वीरता पुरस्कारों से सम्मानित कर्नल (सेवानिवृत्त) आरके शर्मा ने कहा कि भारत ने जिस तरह से पाकिस्तान को सबक सिखाया, वह एक केस स्टडी है। छह-सात मई की मध्यरात्रि को हमने पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों को नष्ट किया और सात-आठ मई की रात पाकिस्तान ने जम्मू-कश्मीर, पंजाब, राजस्थान और गुजरात के कई सैन्य ठिकानों पर हमले की कोशिश की। भारत की वायु रक्षा प्रणाली ने उन हमलों को नाकाम किया। पाक द्वारा इस्तेमाल चीनी मिसाइल और तुर्किये का ड्रोन, भारतीय रक्षा प्रणाली के सामने निष्प्रभावी साबित हुए।

कर्नल (सेवानिवृत्त) आरके शर्मा। फाइल

दिल्ली में प्रस्तावित बातचीत से पहले लेह अपेक्स बाडी में फूट

- लेह अपेक्स बाडी ने छिवांग के 10 माह पहले दिए इस्तीफे को किया मंजूर
- कहा, बैठकों में कई बार उभरते थे मतभेद, अहम बैठकों में भी नहीं आते थे

राज्य ब्यूरो, जागरण • जम्मू

लद्दाख के मुद्दों को लेकर दिल्ली में 22 मई को प्रस्तावित सब कमेटी की बैठक से पहले लेह अपेक्स बाडी में फूट सतह पर आ गई है। राज्य के दर्जे और संविधान की छठी अनुसूची के लिए आंदोलन कर रहे लेह अपेक्स बाडी ने अध्यक्ष और पूर्व सांसद थुप्स्तन छिवांग के 10 माह पहले दिए गए इस्तीफे को मंजूर कर लिया है।

थुप्स्तन छिवांग ने अपेक्स बाडी के सदस्यों के बीच मतभेद उजागर होने के बाद जुलाई 2025 को इस्तीफा दे दिया था। इसके कुछ माह बाद छिवांग फिर से लेह अपेक्स बाडी में सक्रिय हो गए थे। अब सोमवार को लेह में संवाददाता सम्मेलन में लेह अपेक्स बाडी के सह अध्यक्ष छेरिंग दोरजे ने उनका इस्तीफा स्वीकार करने की घोषणा की।

उन्होंने कहा कि उपराज्यपाल व हाल ही में लेह के दौरे पर आए केंद्रीय गृह मंत्री के साथ बैठकों के दौरान भी उनके और अन्य सदस्यों के बीच कई बार मतभेद सामने आए हैं। स्वास्थ्य, निजी कारणों का हवाला देकर वह अहम बैठकों में भी नहीं आते हैं।

दोरजे ने बताया कि मौजूदा हालात को देखते हुए लेह अपेक्स बाडी के सदस्यों ने विचार-विमर्श करने के बाद यह तय किया है कि उनके द्वारा छह जुलाई 2025 को दिए गए इस्तीफे को मंजूर किया जाए।

उन्होंने कहा कि इसके साथ सभी सदस्यों का छिवांग से यह आग्रह भी है कि वह लद्दाख के लिए अपने योगदान को ध्यान में रखते हुए लेह अपेक्स बाडी के सक्रिय सदस्य बने रहें। इस संवाददाता सम्मेलन में दोरजे के साथ हाल ही में जोधपुर जेल से रिहा किए गए पर्यावरणविद्ध सोनम वांगचुक और लेह अपेक्स बाडी के अन्य कई सदस्य भी मौजूद रहे। अब अपेक्स बाडी के अगले कदम पर नजर रहेगी।

आपरेशन सिंदूर ने आतंकी समूहों और उनके संरक्षकों को दिया बड़ा झटका

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह बोले-आपरेशन सिंदूर ने दुनिया को दिखाई भारतीय सेना की क्षमता

सशस्त्र बल ने 'धैर्य' दिखाते हुए आतंकी ढांचे को नष्ट करने में दिखाई दक्षता

- भारतीय सेना अब भविष्य की आधुनिक लड़ाई के लिए भी पूरी तरह तैयार
- भारत का लक्ष्य अब 'सरप्राइज एलिमेंट' विकसित करना

प्रयागराज में सोमवार को नार्थ टेक सिंपोजियम 'रक्षा त्रिवेणी संगम' के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह। प्रेट्र

जागरण संवाददाता, प्रयागराज

'आपरेशन सिंदूर' की पहली वर्षगांठ (6-7 मई की मध्यरात्रि) से पहले रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इसे भारतीय सैन्य इतिहास का अनूठा उदाहरण बताया कि कैसे सेना ने आतंकी समूहों और उनके आकाओं को करारा झटका देने के लिए अत्याधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया। आपरेशन सिंदूर ने आतंकी समूहों व उनके संरक्षकों को निर्णायक झटका दिया। कोबरा आडिटोरियम में तीन दिवसीय नार्थ टेक सिंपोजियम 'रक्षा त्रिवेणी संगम' के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे रक्षा मंत्री ने भारतीय सेना के शौर्य और तकनीकी कौशल की जमकर सराहना की।

भारत ने पिछले वर्ष पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले के जवाब में आपरेशन सिंदूर शुरू किया था। इस आपरेशन का लक्ष्य पाकिस्तान के नियंत्रण वाले क्षेत्रों में मौजूद आतंकी ढांचे को नष्ट करना था। रक्षा मंत्री ने कहा कि आपरेशन सिंदूर इस बात का प्रमाण है कि भारतीय सेना अब केवल परंपरागत युद्ध ही नहीं, बल्कि भविष्य की आधुनिक लड़ाई के लिए भी पूरी तरह तैयार है। हमारे सशस्त्र बलों ने अद्भुत धैर्य का परिचय दिया। हमने आतंकी ढांचे को पूरी सटीकता के साथ नष्ट किया। दुनिया जानती है कि यदि हमने धैर्य न दिखाया होता तो सेना क्या कर सकने में सक्षम थी। इस आपरेशन में आकाश और ब्रह्मोस जैसी उन्नत मिसाइल प्रणालियों और अत्याधुनिक उपकरणों का उपयोग किया गया। उन्होंने जोर देकर कहा कि तकनीक अब युद्ध का चेहरा बदल रहा है। आज के दौर में सेंसर और ड्रोन गेम चेंजर साबित हो रहे हैं। आज यह अंदाजा लगाना मुश्किल है कि कब किस उपकरण को हथियार बना दिया जाए। भारत का लक्ष्य अब 'सरप्राइज एलिमेंट' (चौंकाने वाला हथियार) विकसित करना है, ताकि दुश्मन को उस तरीके से चोट दी जा सके, जिसकी उसने कभी कल्पना भी न की हो। युद्ध में निर्णायक बढ़त उसी की होती है, जिसके पास सरप्राइज एलिमेंट हो। सरकार ने डीआरडीओ के माध्यम से अनुसंधान का 25 प्रतिशत हिस्सा निजी उद्योगों, स्टार्टअप और शिक्षण संस्थानों के लिए खोल दिया है। स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए टेक्नोलाजी ट्रांसफर की 20 प्रतिशत फीस को भी पूरी तरह खत्म कर दिया है। समारोह में थल सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी, प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता 'नंदी', मध्य कमान के जीओसी-इन-सी लेफ्टिनेंट जनरल अनिंद्य सेनगुप्ता, उत्तरी कमान के जीओसी-इन-सी लेफ्टिनेंट जनरल प्रतीक शर्मा आदि मौजूद रहे। वहीं, 284 कंपनियों ने अपने 'मेक इन इंडिया' हथियारों और उपकरणों का प्रदर्शन किया। रक्षामंत्री ने उपकरणों का डेमो देखा और फिर दिल्ली रवाना हो गए।

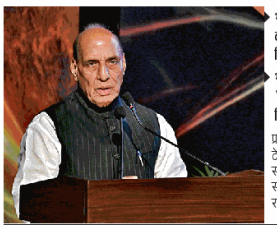

एसिड अटैक मामलों में सजा बढ़ाने पर विचार करे केंद्र: सुप्रीम कोर्ट

- कोर्ट ने तेजाब के हमलों में वृद्धि पर चिंता जताई, कहा-सजा और कठोर होनी चाहिए
- कहा-बलपूर्वक एसिड पिलाने पर पीड़ितों को 2016 के दिव्यांग अधिकार अधिनियम श्रेणी में रखें

नई दिल्ली, प्रेट्र : "बर्बर" एसिड अटैक के मामलों में "चिंताजनक वृद्धि" को उजागर करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने सुझाव दिया कि केंद्र को ऐसे अपराधों के लिए सजा बढ़ाने पर विचार करना चाहिए। साथ ही आरोपित पर यह साबित करने की जिम्मेदारी डालनी चाहिए कि वह निर्दोष है। आपराधिक न्यायशास्त्र के तहत आरोपित के खिलाफ दोष साबित करने की जिम्मेदारी अभियोजन पक्ष पर होती है, जब तक कि कानून में इसका प्रविधान नहीं हो।

मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और जस्टिस जायमाल्या बागची की पीठ ने सोमवार को निर्देश दिया कि जब तक उपयुक्त संशोधन नहीं किया जाता, उन व्यक्तियों को जिन्हें बलपूर्वक एसिड पीने के लिए मजबूर किया गया या जिनके आंतरिक अंगों को बिना किसी बाहरी विकृति के चोटें आई हैं, उन्हें 2016 के दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम के तहत एसिड अटैक पीड़ितों की श्रेणी में रखा जाएगा।

पीठ ने कहा कि यह स्पष्टीकरण तब से लागू माना जाएगा जब 2016 का अधिनियम लागू हुआ था। यदि संबंधित मंत्रालय इस अधिनियम को औपचारिक रूप से अधिसूचित करता है, तो इसकी सराहना की जाएगी। सर्वोच्च न्यायालय ने यह आदेश उस जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान पारित किया, जो एसिड अटैक की पीड़िता शाहीन मलिक द्वारा दायर की गई थी, जिन्होंने मांग की थी कि ऐसे पीड़ितों को दिव्यांग व्यक्तियों के रूप में वर्गीकृत किया जाए ताकि कल्याणकारी योजनाओं तक उनकी पहुंच सुनिश्चित हो सके।

सुनवाई के दौरान सीजेआइ ने माना कि एसिड अटैक के लिए निर्धारित सजा रोकथाम में बेकार साबित हो रही है। सीजेआइ ने कहा, "क्या आपको नहीं लगता कि सजा और कठोर होनी चाहिए? मामलों की संख्या बढ़ी है। बर्बर और क्रूर एसिड अटैक किए गए हैं।" मामले में अगली सुनवाई दो सप्ताह बाद होगी।

पीठ ने कहा कि 2013 से एसिड अटैक के मामलों में "चिंताजनक वृद्धि" हुई है, जो एक गंभीर विचार का मुद्दा है। सुझाव दिया कि सरकार को ऐसे अपराधों के लिए सजा को पर्याप्त रूप से बढ़ाने पर विचार करना चाहिए। साथ ही आरोपित पर यह साबित करने की जिम्मेदारी डालनी चाहिए कि वह निर्दोष है। पीठ ने यह भी सुझाव दिया कि ऐसे घातक मामलों में दोषी व्यक्तियों की संपत्तियों को पीड़ितों को मुआवजा देने के लिए जब्त किया जाए। सालिसिटर जनरल तुषार मेहता ने पीठ को सूचित किया कि नोडल मंत्रालय ने पहले ही 2016 के अधिनियम के साथ संलग्न अनुसूची में संशोधन का प्रस्ताव दिया है।

आपरेशन के बाद महिला की आंख की चली गई थी रोशनी

प्रथम पृष्ठ से आगे

बता दें कि यह मामला बिहार के मुंगेर से जुड़ा है। 1990 में एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी के आंख के आपरेशन में लापरवाही का आरोप लगाते हुए डाक्टर पीबी लाल के खिलाफ शिकायत की थी। आरोप था कि आपरेशन और बाद के इलाज में कमी के कारण उनकी पत्नी की एक आंख की रोशनी चली गई और दूसरी आंख भी प्रभावित हुई।

इलाज के लिए उन्हें भागलपुर, अलीगढ़ और फिर चेन्नई तक जाना पड़ा। अंततः 1997 में उन्होंने 4.5 लाख रुपये मुआवजे की मांग के साथ उपभोक्ता फोरम में शिकायत दर्ज कराई। मामला लंबित रहने के दौरान 2009 में डाक्टर और 2014 में शिकायतकर्ता-दोनों का निधन हो गया। इसी के बाद यह सवाल उठा कि क्या मुकदमा आगे चल सकता है, जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने अब स्पष्ट फैसला दिया है। बता दें कि इस तरह के मामलों के पीड़ितों को अब न्याय पाने का एक अतिरिक्त अवसर मिलेगा।

सेवानिवृत्त मेजर की पेंशन रोकने पर रक्षा सचिव और थल सेना प्रमुख पर दो लाख रुपये जुर्माना

- 24 सर्जरी झेल चुके सेवानिवृत्त अफसर को दिव्यांगता पेंशन न देने का मामला, अफसरों के वेतन से होगी कटौती

दिया दूरगामी असर वाला फैसला।

राज्य ब्यूरो, जागरण • चंडीगढ़

देश की सेवा के दौरान गंभीर स्वास्थ्य संकट झेलने वाले एक पूर्व सेना अधिकारी को दिव्यांगता पेंशन से वंचित रखने पर केंद्र सरकार के शीर्ष रक्षा प्रशासन पर जुर्माना लगाया गया है। पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट ने सेवानिवृत्त मेजर राजदीप दिनकर पांडरे को राहत देने संबंधी न्यायिक आदेशों की लगातार अवहेलना पर रक्षा सचिव और थल सेना प्रमुख पर संयुक्त रूप से दो लाख रुपये जुर्माना लगाकर सख्त प्रशासनिक जवाबदेही तय की है।

अदालत ने स्पष्ट किया कि न्यायालय के आदेश केवल औपचारिक दस्तावेज नहीं, बल्कि बाध्यकारी निर्देश हैं, जिनकी अनदेखी स्वीकार नहीं की जा सकती। पुणे निवासी मेजर पांडरे वर्ष 2012 में पूरी तरह स्वस्थ अवस्था में भारतीय सेना में कमीशंड अधिकारी बने थे। सेवा के दौरान वर्ष 2017 में उन्हें गंभीर चिकित्सीय समस्या हुई। दिल्ली कैंट बेस अस्पताल में जांच के बाद उनकी स्थिति जटिल पाई गई और समय के साथ उन्हें 24 सर्जरी से गुजरना पड़ा। बाद में किडनी संबंधी बीमारी भी हो गई। अनेक मेडिकल बोर्ड के समक्ष पेश होने के बावजूद रिलीज मेडिकल बोर्ड ने उनकी 15 प्रतिशत स्थायी दिव्यांगता को सैन्य सेवा से न जुड़ा बताते हुए पेंशन से वंचित कर दिया।

इसके बाद मेजर पांडरे ने सशस्त्र बल अधिकरण का दरवाजा खटखटाया। अधिकरण ने अक्टूबर 2024 में मेडिकल रिकार्ड, सर्जरी इतिहास और सैन्य पेंशन नियमावली का परीक्षण करते हुए माना कि दिव्यांगता सेवा से संबंधित है। अधिकरण ने उनकी दिव्यांगता 40 प्रतिशत मानते हुए सुप्रीम कोर्ट के दिशा-निर्देशों के अनुरूप 50 प्रतिशत तक राउंड आफ कर आजीवन दिव्यांगता पेंशन देने का आदेश दिया।

केंद्र सरकार की चुनौती को पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट ने जुलाई 2025 में खारिज करते हुए कहा कि याची की पात्रता पर कोई संदेह नहीं हो सकता। इसके बावजूद आदेश लागू नहीं हुआ। मजबूर होकर पूर्व मेजर को फिर हाई कोर्ट आना पड़ा। अदालत ने पूर्व में अनुपालन हलफनामा दाखिल करने का अंतिम अवसर दिया था, साथ ही चेतावनी दी थी कि उल्लंघन पर जुर्माना लगाया जाएगा। जस्टिस सुदीप्ति शर्मा ने पाया कि निर्धारित समय में आदेश का अनुपालन नहीं किया गया। परिणामस्वरूप अदालत ने रक्षा सचिव और थल सेना प्रमुख के वेतन से समान रूप से राशि काटकर दो लाख रुपये डिमांड ड्राफ्ट के माध्यम से याची को देने का आदेश दिया, जबकि एक अंतिम अवसर और दिया गया।

सुप्रीम कोर्ट की रजिस्ट्री अधिकारियों को फटकार, कहा-खुद को समझते हैं 'सुपर चीफ जस्टिस'

- सुप्रीम कोर्ट ने अपने ही विभाग की कड़ी निंदा करते हुए रजिस्ट्री के आचरण को घटिया बताया
- निवेश धोखाधड़ी मामले में आरोपित आयुषी मित्तल की जमानत पर सुनवाई के दौरान की टिप्पणी

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने अपने ही रजिस्ट्री कार्यालय की कड़ी निंदा करते हुए उसके आचरण को घटिया करार दिया और कहा कि उसके अधिकारी खुद को 'सुपर सीजेआइ' समझते हैं। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और जस्टिस जोयमाल्या बागची की पीठ ने 37 हजार करोड़ रुपये से अधिक की निवेश धोखाधड़ी के मामले में आरोपित आयुषी मित्तल उर्फ आयुषी अग्रवाल द्वारा दायर जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए यह टिप्पणी की।

प्रधान न्यायाधीश ने याचिका पर 23 मार्च को पारित एक आदेश का हवाला दिया और आश्चर्य जताया कि रजिस्ट्री अधिकारियों ने यह कैसे मान लिया कि पीठ ने याचिका पर ईडी और अन्य प्रतिवादियों को नोटिस जारी नहीं किया। रजिस्ट्री बहुत घटिया तरीके से काम कर रही है। रजिस्ट्री का यह रवैया बिल्कुल ठीक नहीं है। यहां बैठा हर व्यक्ति खुद को 'सुपर चीफ जस्टिस' समझता है।

पीठ ने अपने नए आदेश में कहा-ईडी निदेशक को यह बताते हुए कोई नोटिस जारी नहीं किया गया है कि ऐसा कोई आदेश पारित नहीं किया गया था। (शीर्ष अदालत के) न्यायिक रजिस्ट्रार इस बात का तथ्यान्वेषण करें कि 23 मार्च के हमारे आदेश का अर्थ ईडी को नोटिस जारी नहीं करना कैसे है। ईडी को नोटिस भेजा जाए। उल्लेखनीय है कि इस प्रकरण का दूरगामी असर होगा और सुप्रीम कोर्ट रजिस्ट्री के कामकाज में सुधार की संभावना बनेगी।

याचिकाकर्ता आयुषी मित्तल, उनके पति और उनकी कंपनी पर बड़े पैमाने पर निवेश संबंधी धोखाधड़ी करने का आरोप है। बचाव पक्ष का दावा है कि निवेशकों को धनराशि का एक बड़ा हिस्सा लौटा दिया गया है, लेकिन फिलहाल ईडी द्वारा फ्रीज किए गए बैंक खातों में कई सौ करोड़ रुपये फंसे हुए हैं।

विधायी दखल से ही मिलेगी आधार बनाने संबंधी सख्ती मामले में राहत

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि छह वर्ष तक की उम्र के नागरिकों को ही नए आधार कार्ड जारी करने के लिए विधायी हस्तक्षेप और मौजूदा कानूनी ढांचे में उचित संशोधनों की आवश्यकता है। इन मुद्दों को संसद और सरकार के सामने उठाएं। वे इनका ध्यान रखेंगे।

प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और जस्टिस जायमाल्या बागची की पीठ सोमवार को एक जनहित याचिका की सुनवाई कर रही थी, जिसमें यूनिक आइडेंटिफिकेशन अथारिटी आफ इंडिया (यूआइडीएआइ) को निर्देश देने की मांग की गई है कि नए आधार कार्ड केवल छह वर्ष तक के नागरिकों को ही जारी किए जाएं। पीठ ने मेरिट पर कोई राय व्यक्त किए बिना याचिका को याचिकाकर्ता की ओर से एक प्रतिनिधित्व के रूप में स्वीकार करते हुए निपटाया। पीठ ने कहा कि याची के लिए उचित उपाय यह होगा कि वह इन सभी मुद्दों को राज्य और अन्य हितधारकों के ध्यान में लाए, ताकि वे इन पर संज्ञान ले सकें। याचिका में किशोरों और वयस्कों को आधार जारी करने के कड़े दिशा-निर्देश बनाने की मांग है, ताकि घुसपैठियों को भारतीय नागरिकों के रूप में पहचान प्राप्त करने से रोका जा सके।

बड़ा फैसला

प्रीपेड मोड में तकनीकी दिक्कतों से परेशान उपभोक्ताओं को योगी सरकार ने दी बड़ी राहत, पोस्टपेड मोड में ही रहेंगे बिजली कनेक्शन, 75 लाख प्रीपेड स्मार्ट मीटर को पूर्व की भांति पोस्टपेड मोड में बदलेगा पावर कारपोरेशन

उत्तर प्रदेश में स्मार्ट प्रीपेड बिजली मीटर की अनिवार्यता समाप्त

- पुराने मीटर को भी स्मार्ट प्रीपेड मोड में बदलने का कार्य स्थगित रहेगा
- बकाएदार बिजली उपभोक्ताओं को राहत, 10 किस्तों में बिल के भुगतान की मिलेगी सुविधा

प्रतीकात्मक

राज्य ब्यूरो, जागरण • लखनऊ

तकनीकी दिक्कतों के चलते स्मार्ट प्रीपेड मीटर को लेकर महीनों से परेशान बिजली उपभोक्ताओं को राज्य सरकार ने बड़ी राहत दी है। बिजली कनेक्शन में प्रीपेड स्मार्ट मीटर की अनिवार्यता समाप्त कर दी गई है। अब पहले की तरह सभी बिजली कनेक्शन पोस्टपेड मोड में ही रहेंगे। ऐसे में उपभोक्ताओं को पूर्व की भांति किसी भी महीने में उपभोग की गई बिजली के बिल का भुगतान अगले महीने करने की सुविधा रहेगी। नए कनेक्शन तो अब पोस्टपेड स्मार्ट मीटर के माध्यम से दिए ही जाएंगे। पिछले वर्ष से अब तक प्रीपेड मोड में किए गए 75 लाख से अधिक बिजली कनेक्शन भी पोस्टपेड मोड में किए जाएंगे। पुराने मीटर को भी स्मार्ट प्रीपेड मोड में बदलने का कार्य स्थगित रहेगा। बकाएदार बिजली उपभोक्ताओं को 10 किस्तों में बिल के भुगतान की सुविधा भी मिलेगी।

स्मार्ट प्रीपेड मीटर को रिचार्ज कराए जाने के बाद भी घंटों बिजली का कनेक्शन स्वतः न जुड़ने, अप्रत्याशित तौर पर ज्यादा लोड और बिजली बिल अधिक आने से बिजली उपभोक्ताओं में आक्रोश था। आए दिन बिजली कार्यालयों पर धरना-प्रदर्शन किया जा रहा था, लेकिन ऊर्जा मंत्री एके शर्मा सहित पावर कारपोरेशन प्रबंधन स्मार्ट प्रीपेड मीटर में किसी तरह की खामियों को सदैव खारिज करते रहे। हालांकि, चुनावी वर्ष में जनता की नाराजगी को गंभीरता से लेते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पिछले दिनों उच्च स्तरीय समिति गठित कर जांच के निर्देश पावर कारपोरेशन प्रबंधन को दिए थे। इस बीच उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद ने भी स्मार्ट प्रीपेड मीटर में तमाम तकनीकी खामियां गिनाते हुए विद्युत नियामक आयोग में याचिका दाखिल कर प्रीपेड मीटर की अनिवार्यता समाप्त करने की मांग की।

अंततः बैकफुट पर आते हुए ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने सोमवार देर शाम एक्स पर 'उपभोक्ता देवो भवः' बताते हुए लिखा कि प्रीपेड जैसी व्यवस्था समाप्त की जा रही है। उपभोक्ताओं को अब एक से 30 तारीख तक का बिल अगले दस दिन में एसएमएस या वाट्सएप से भेजा जाएगा। उपभोक्ताओं से आह्वान किया कि अपने मोबाइल नंबर को कनेक्शन के रिकार्ड में दर्ज करा दें ताकि मैसेज मिल सके। पुराने मीटरों को स्मार्ट-प्रीपेड मीटर से बदलने का कार्य स्थगित रहेगा। शक्तिभवन में आयोजित बैठक में अधिकारियों को हिदायत दी कि उपभोक्ताओं को बिजली संबंधी समस्या से न जूझना पड़े। किसी भी स्थिति में महीने के अंदर बिजली कनेक्शन न कटे। पिछला बकाया हो तो 10 किस्तों में जमा करने की सुविधा दी जाए। उल्लेखनीय है कि बिजली कनेक्शन में लगाए जा रहे स्मार्ट मीटर को एक कमांड के जरिये किसी भी मोड में बदलने की सुविधा रहती है। जिस तरह से पोस्टपेड को प्रीपेड में किया गया उसी तरह से अब सरकार के निर्देश पर उन्हें प्रीपेड से पोस्टपेड में बदलने लिए सिर्फ कमांड देना होगा।

छह राज्यों के विस अध्यक्ष समितियों को सशक्त बनाने पर मंथन करेंगे

- सात राज्यों के समूह में शामिल बंगाल विस के मौजूदा अध्यक्ष बैठक में नहीं होंगे शामिल

जागरण संवाददाता,जयपुर

विधानमंडलों की समितियों को सशक्त बनाने के लिए समिति प्रणाली की समीक्षा के लिए गठित छह राज्यों के विधानसभा अध्यक्षों की मंगलवार को जयपुर में बैठक होगी। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने समिति प्रणाली को सशक्त बनाने के लिए वर्तमान व्यवस्था की समीक्षा करने एवं सुझाव देने के लिए मध्य प्रदेश के विधानसभा अध्यक्ष की अध्यक्षता में सात राज्यों की विधानसभा अध्यक्षों की समिति गठित की है। विधानसभा की विभिन्न समितियों के कामकाज को प्रभावी बनाने एवं उनकी सिफारिशों को सही तरह से क्रियान्वित किए जाने पर भी मंथन करेंगे। इनमें पश्चिम बंगाल भी शामिल है। इस राज्य में विधानसभा चुनाव परिणाम सोमवार को ही आया है। ऐसे में वर्तमान में पश्चिम बंगाल विधानसभा में अध्यक्ष नहीं होने के कारण छह अन्य राज्यों के विधानसभा अध्यक्ष बैठक में शामिल होंगे।

इनके अलावा मध्य प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर, राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी,उत्तर प्रदेश के विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना, हिमाचल प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष कुलदीप सिंह पठानिया, ओडिशा विधानसभा के अध्यक्ष सूरमा पाढ़ी एवं सिक्किम विधानसभा के अध्यक्ष मिंगमा नोर्बू शामिल हैं। बैठक में शामिल होने के लिए सभी विधानसभा अध्यक्ष सोमवार को जयपुर पहुंच गए।

30 बैंक खातों में सटोरियों के जमा दो करोड़ रुपये से अधिक की रकम फ्रीज करा दी गई है, जबकि 40 से अधिक अन्य बैंक खाते पुलिस की रडार पर हैं। झांसी पुलिस जांच में अब तक 70 से अधिक ऐसे बैंक खाते सामने आए हैं, जिनसे करोड़ों रुपये का लेन-देन हुआ है।

बिहार में विक्रमशिला सेतु का 34 मीटर हिस्सा गंगा में समाया, आवागमन ठप

पूर्व और उत्तर बिहार को भागलपुर से जोड़ता है यह सेतु, रविवार देर रात की घटना

जागरण संवाददाता, भागलपुर

पूर्व और उत्तर बिहार को भागलपुर से जोड़ने वाले विक्रमशिला सेतु का 34 मीटर हिस्सा टूटकर रविवार देर रात 12.50 बजे गंगा में समा गया। रात 11.50 बजे पुल को नुकसान पहुंचने की सूचना मिलने के बाद से दोनों ओर आवागमन रोक दिया गया था। जांच चल ही रही थी कि पोल नंबर-133 के पास यह हादसा हो गया। गनीमत रही कि आवागमन रुके होने के कारण जानमाल का कोई नुकसान नहीं हुआ। डीएम नवल किशोर चौधरी और एसएसपी प्रमोद कुमार यादव ने कहा कि तत्काल सेतु पर परिचालन बंद कर दिया गया है। हादसे में पिलरों को हुए नुकसान के लिए उच्चस्तरीय टीम मामले की जांच कर रही है। मामले में एनएच व पुल निर्माण निगम एक-दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं।

बिहार के भागलपुर में टूटा विक्रमशिला पुल। जागरण

एनएच के कार्यपालक अभियंता साकेत कुमार रौशन को निलंबित कर दिया गया है। यह कार्रवाई पिछले महीने आइआइटी, पटना की रिपोर्ट के आधार पर मरम्मत कार्य होने तक सेतु पर भारी वाहनों का परिचालन नहीं रोकने पर की गई है। उन्होंने इसका ठीकरा पुल निर्माण निगम पर फोड़ते हुए कहा कि यह कार्य उसे करना था।

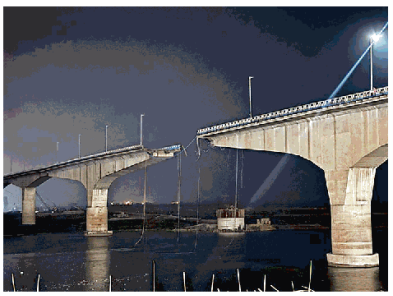

बिहार राज्य पुल निर्माण निगम के अध्यक्ष डा. चंद्रशेखर सिंह ने कहा कि अगले तीन महीने के अंदर ध्वस्त हुए सेतु के हिस्से को दुरुस्त कर लिया जाएगा। इस कार्य में आइआइटी, पटना का सहयोग लिया जा रहा। पुल के समानांतर बन रहे पुल पर इसी वर्ष दिसंबर में परिचालन आरंभ कर लिए जाने का लक्ष्य है। फिलहाल स्टीमर सेवा भी शुरू की जा रही है। उल्लेखनीय है कि 4.7 किलोमीटर लंबे इस सेतु का 2001 में तत्कालीन मुख्यमंत्री राबड़ी देवी ने उद्घाटन किया था। उस समय इसकी अनुमानित लागत 167.58 करोड़ थी। इस पुल से रोजाना एक लाख से अधिक लोग और वाहन गुजरते हैं।

वीते वर्ष पुल टूटने की की घटनाएं: मालूम हो कि इसके पूर्व भी बीते वर्ष बिहार में कई पुलों के क्षतिग्रस्त होने या फिर धंसने की घटनाएं हो चुकी हैं। दो अप्रैल 2026 को मधेपुरा जिले में भारी वाहन के गुजरने से 25 वर्ष पुराना पुल धंस गया था। कटिहार जिले में बाढ़ के समय में वर्ष 2017 में पुल ध्वस्त हुआ था। अररिया जिले में बकरा नदी पर बना पुल 18 जून 2024 को ध्वस्त हो गया था।

मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से बात कर पुल को तीन माह के अंदर दुरुस्त करने के लिए रक्षा मंत्रालय के बार्डर रोड आर्गेनाइजेशन की मदद मांगी है। बताया जा रहा है कि पिछले करीब आठ वर्षों से इस सेतु की मरम्मत नहीं कराई गई थी। 2018 में 16 करोड़ की लागत से पुल की मरम्मत कराई गई थी।

पत्नी की हत्या कर दो वर्ष के बेटे को जंगल में छोड़ा, 20 घंटे अकेले भटकता रहा

नईदुनिया प्रतिनिधि, रायसेन

- रातभर खोजने के बाद मध्य प्रदेश में रायसेन के जंगल में सुबह बदहवास मिला मासूम
- युवक गिरफ्तार, अवैध संबंध के संदेह में सिर पर पत्थर मार कर दी पत्नी की हत्या

मध्य प्रदेश के विदिशा जिले में अवैध संबंध के संदेह में एक युवक ने सिर पर पत्थर मारकर अपनी पत्नी की हत्या कर दी। उसके बाद वह घटना के एकमात्र प्रत्यक्षदर्शी अपने दो वर्ष के बेटे को विदिशा और रायसेन जिले की सीमा पर स्थित झिरिया के जंगल में मरने के लिए छोड़ आया। पुलिस रात भर जंगल और खेतों में बच्चे को तलाश करती रही। करीब 20 घंटे तलाश के बाद बच्चा बदहवास हालत में सुबह एक नाले के पास मिला। आरोपित युवक को गिरफ्तार कर लिया गया है।

युवक का कहना है कि गुस्से में आकर उसने बच्चे को जंगल में छोड़ दिया था। विदिशा जिले के हैदरगढ़ थाना क्षेत्र स्थित हिनोतिया गांव का 29 वर्षीय राजेंद्र अहिरवार शनिवार सुबह लगभग 11 बजे अपनी पत्नी 27 वर्षीय ज्योति और दो वर्ष के बेटे को मोटरसाइकिल पर बैठाकर खरीदारी के बहाने घर से निकला था। रास्ते में सेमरी गांव के पास कथित अवैध संबंध को लेकर उसका पत्नी से विवाद हो गया। गुस्से में राजेंद्र ने वहां पड़ा भारी पत्थर उठाकर ज्योति के सिर पर दे मारा, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पत्नी के शव को छोड़ वह बेटे को मोटरसाइकिल से करीब 12 किमी दूर झिरिया के जंगल में सुनसान एक झोपड़ी के पास छोड़ गया।

रायसेन के जंगल में 20 घंटे भटकने के बाद मिले दो वर्ष के बच्चे को अस्पताल लाए पुलिस कर्मी। यहा उसकी जांच और उपचार कराया गया। -नईदुनिया

नाना-नानी के सुपुर्द किया गया

एसडीओपी सोनाली गुप्ता ने बताया कि तलाश के दौरान बच्चा रोता-बिलखता पैदल ही एक तरफ चला जा रहा था। उसने पैंट नहीं पहनी थी और पैर में जूते-चप्पल भी नहीं थे। शनिवार दोपहर लगभग 11 बजे से जंगल में छोड़े जाने के बाद अकेले रहने के कारण वह बुरी तरह थक चुका था। भूख-प्यास और डर की वजह से वह बेहद सहमा हुआ था। पुलिस ने पहले उसे पानी पिलाया, बिस्किट खिलाया। उसके बाद अस्पताल में उसका उपचार किया गया। बच्चे को उसके नाना-नानी को सुपुर्द कर दिया गया है।

हैदरगढ़ थाना पुलिस ने उसी दिन दोपहर में महिला के शव को बरामद कर संदेह के आधार पर राजेंद्र को पकड़ा तो उसने हत्या की बात स्वीकार कर ली। रात्रि 10 बजे उसने पुलिस को बेटे को जंगल में छोड़ आने की जानकारी भी दी। इस पर पुलिस ने जंगली जानवरों से खतरे की आशंका में रात को ही बच्चे की तलाशी शुरू कर दी। बच्चे को जहां छोड़ा गया, वहां वह नहीं मिला। आसपास खेतों, पगडंडियों और नालों में टार्च के सहारे आधी रात के बाद तक तलाश की गई। रविवार सुबह पांच बजे तलाश फिर शुरू हुई। करीब नौ बजे पुलिस को जंगल में स्थित झिरिया मंदिर स्थित गहरे नाले के पास बच्चा रोते-बिलखते मिला।

अयोध्या के विवादित ढांचा विध्वंस का बदला लेने की साजिश में 12 को सजा

जामनगर, प्रेट्र : गुजरात के जामनगर की एक विशेष अदालत ने सोमवार को 1993 में समुद्र तट से हथियार तस्करी की साजिश से जुड़े एक मामले में 12 आरोपितों को सजा सुनाई। जबकि, 17 अन्य को बरी कर दिया। इसमें अंडरवर्ल्ड डान दाऊद इब्राहिम का हाथ था। यह मामला दाऊद इब्राहिम और उसके सहयोगियों द्वारा अयोध्या के विवादित ढांचा विध्वंस का बदला लेने के लिए रची गई साजिश से संबंधित है। हथियारों और विस्फोटकों के जरिये विवादित ढांचे के विध्वंस का बदला लेने की साजिश रची गई थी।

विशेष आतंकवादी और विघटनकारी गतिविधियां अधिनियम के न्यायाधीश आरपी मोगेरा ने 12 आरोपितों को दोषी ठहराया। उनमें से 10 को पांच साल के कठोर कारावास और दो को सात साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई।

यह मामला दाऊद इब्राहिम और उसके सहयोगियों द्वारा अयोध्या के विवादित ढांचा विध्वंस का बदला लेने के लिए रची गई साजिश से संबंधित है। इस साजिश के तहत भारी मात्रा में हथियार और विस्फोटक समुद्र के रास्ते भारत में तस्करी कर लाए गए थे। विस्फोटक में आरडीएक्स भी शामिल था। गोकानी ने बताया कि जुलाई 1993 में जामनगर बी-डिवीजन पुलिस स्टेशन में एफआइआर दर्ज की गई थी।

दाऊद इब्राहिम समेत अन्य आरोपितों पर टाडा अधिनियम, भारतीय दंड संहिता, शस्त्र अधिनियम और विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया था। इस मामले की जांच 1993 से 2018 तक चली।

- दाऊद इब्राहिम ने विवादित ढांचे के विध्वंस का बदला लेने के लिए रची थी गहरी साजिश

प्रतीकात्मक।

भारी मात्रा में हथियार और विस्फोटक समुद्र के रास्ते भारत में तस्करी कर लाए गए थे

'सुरक्षा की याचिका लेकर पटना हाई कोर्ट जाएं पप्पू यादव'

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को लोकसभा के सदस्य राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव को अनुमति दी कि वह अपनी सुरक्षा 'वाई' से 'जेड' श्रेणी में अपग्रेड करने के अनुरोध वाली लंबित याचिका सूचीबद्ध करने के लिए पटना हाई कोर्ट से संपर्क करें। पूर्णिया से सांसद पप्पू ने गैंगस्टर लारेंस के गिरोह से कथित खतरे का हवाला देते हुए सुरक्षा बढ़ाने का अनुरोध किया है।

पप्पू के वकील ने बताया कि हाई कोर्ट ने 19 नवंबर, 2024 को पप्पू की सुरक्षा बढ़ाने के अनुरोध वाली याचिका पर नोटिस जारी किया था, लेकिन वह आदेश न तो अपलोड किया गया और न ही मामले को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया गया। हाई कोर्ट में बार-बार अनुरोध करने के बावजूद उनकी याचिका नवंबर 2024 के बाद सुनवाई के लिए सूचीबद्ध नहीं की गई है। पीठ ने उन्हें अपनी लंबित याचिका को सूचीबद्ध करने के अनुरोध के साथ हाई कोर्ट में औपचारिक आवेदन दाखिल करने की अनुमति दी।

नशे के भारतीय बाजार को मेफेड्रोन से पाट देना चाहता था दाऊद का सहयोगी सलीम डोला

नई दिल्ली, आइएएनएस : भारतीय खुफिया एजेंसियों ने अंडरवर्ल्ड डान दाऊद इब्राहिम के करीबी सहयोगी सलीम डोला को गिरफ्तार कर ड्रग्स सिंडिकेट की कमर तोड़ दी है। यह गिरफ्तारी केवल एक अपराधी की पकड़ नहीं, बल्कि भारत के भविष्य को 'मेफेड्रोन' जैसी जानलेवा लत से बचाने की दिशा में एक बड़ी जीत है। डोला की साजिश भारतीय बाजारों में नशे की ऐसी बाढ़ लाने की थी, जिससे देश की युवा पीढ़ी पूरी तरह तबाह हो जाए। 'व्हाइट मैजिक', 'म्याऊ-म्याऊ' और 'बबल' जैसे नामों से मशहूर मेफेड्रोन का बाजार पिछले कई वर्षों में भारत में तेजी से फैला है।

सलीम डोला ने इस सिंथेटिक ड्रग को विशेष रूप से युवाओं के बीच इसलिए लोकप्रिय बनाया क्योंकि यह कोकीन के मुकाबले बेहद सस्ती है। जहां कोकीन की कीमत लगभग तीन हजार रुपये प्रति ग्राम है, वहीं मेफेड्रोन मात्र 160 रुपये प्रति ग्राम में उपलब्ध हो जाती है। इसी कम कीमत के कारण यह जहर गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में महामारी की तरह फैल गया। आंकड़ों के मुताबिक, अकेले मुंबई में 10 में से आठ नशा करने वाले युवा इसी ड्रग की गिरफ्त में हैं।

डोला का सिंडिकेट पारंपरिक तरीकों के बजाय बेहद शातिर ढंग से काम कर रहा था। पुलिस से बचने के लिए उन्होंने पोल्ट्री फार्मों और सड़क किनारे बने ढाबों को अपनी गुप्त लैब बना रखा था।

चौंकाने वाली बात यह है कि ये अपराधी 'डार्क वेब' के जरिये युवाओं को ड्रग्स बनाने की ट्रेनिंग दे रहे थे। डोला का जाल केवल भारत तक ही सीमित नहीं था, बल्कि पश्चिम एशिया, अफ्रीका और यूरोप तक फैला हुआ था। वह भारत में दवा विक्रेताओं और केमिस्टों का एक ऐसा नेटवर्क तैयार कर रहा था, जो देश के कोने-कोने में इस जहर की निर्बाध सप्लाई सुनिश्चित कर सके। इंटेलिजेंस ब्यूरो के अनुसार, डोला की गिरफ्तारी दाऊद इब्राहिम और पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आइएसआइ के लिए एक बड़ा झटका है। दरअसल, आइएसआइ इस ड्रग व्यापार से होने वाली कमाई का इस्तेमाल लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे आतंकी संगठनों को पालने के लिए करना चाहती थी।

- दाऊद इब्राहिम के करीबी सहयोगी सलीम डोला की गिरफ्तारी से टूटी ड्रग्स सिंडिकेट की कमर
- पुलिस से बचने के लिए यह सिंडिकेट पोल्ट्री फार्मों व सड़क किनारे बने ढाबों को अपनी गुप्त लैब बना रखा था

सलीम डोला। फाइल

सुप्रीम कोर्ट ने ओडिशा अदालतों की 'घिनौनी' जमानत शर्तों को किया रद

नई दिल्ली, प्रेट्र : सर्वोच्च न्यायालय ने ओडिशा की अदालतों द्वारा आदिवासियों और दलितों पर थोपी गई 'अपमानजनक' और "घृणित" जमानत शर्तों पर कड़ी नाराजगी व्यक्त की है। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जोयमाल्या बागची की पीठ ने इन शर्तों को 'अमान्य' घोषित करते हुए स्पष्ट किया कि न्यायपालिका का काम नागरिकों की गरिमा की रक्षा करना है, न कि जातिगत पूर्वाग्रहों को बढ़ावा देना।

जातिगत पूर्वाग्रह और मानवाधिकारों का हनन यह मामला तब सामने आया जब ओडिशा उच्च न्यायालय और ट्रायल कोर्ट्स ने भूमि अधिग्रहण के खिलाफ प्रदर्शन करने वाले आदिवासी समुदाय के लोगों को जमानत देते समय 'थानों की सफाई' करने जैसी शर्त रखी थी। कोर्ट ने इसे 'घिनौना' करार देते हुए कहा कि आजादी के 76 साल बाद भी ऐसी मानसिकता का अस्तित्व में होना हृदयविदारक है। शीर्ष अदालत ने तीखी टिप्पणी करते हुए कहा कि ऐसी शर्तें केवल हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए ही क्यों रखी जाती हैं।

अंबेडकरनगर में मां व चार बच्चों का हत्यारोपित मुठभेड़ में ढेर, दारोगा और सिपाही घायल

जागरण संवाददाता, अंबेडकरनगर

उप्र के अंबेडकनगर में महिला और उसके चार बच्चों की शनिवार रात हुई हत्या के आरोपित बदमाश आमिर को पुलिस ने सोमवार सुबह मुठभेड़ में मार गिराया। गोली लगने से एक दारोगा और सिपाही घायल हो गए हैं। आरोपित के पास से महिला के कान का कुंडल, पाजेब के अलावा पिस्टल और बाइक बरामद हुई है। मारे गए बदमाश के भाई ने मुठभेड़ पर सवाल उठाया है। महिला के घरवाले एक से अधिक लोगों के घटना में शामिल होने की आशंका जता रहे हैं।

मृतक, मोहम्मद आमिर

शनिवार को मुरादाबाद मुहल्ले में सऊदी अरब में रहने वाले मोहम्मद नियाज के घर से उसके चार बच्चों के शव बरामद हुए थे। तब बच्चों की मां गासिया खातून पर ही हत्या का संदेह जताया गया था, लेकिन रविवार को उसका भी शव पास के नाले से बरामद हुआ, तो पुलिस की थ्योरी बदल गई। गासिया का पति नियाज सऊदी अरब में चाय-काफी की दुकान चलाता है। उसने तीन साल पहले सऊदी अरब में एक पाकिस्तानी महिला से निकाह कर लिया था। वहीं, गासिया अपने तीन बेटों सफीक, सऊद, उमर और बेटी सादिया के साथ मुरादाबाद मुहल्ले में रहती थी। रविवार को गासिया का शव मिलने के बाद पुलिस ने पड़ताल शुरू की तो सोनू और उससे मीरानपुर के आमिर के बारे पता चला जो गासिया के घर आता था। आमिर की नजर गासिया के मकान पर थी। उसे लगता था कि नियाज से अलग रहने के कारण गासिया उससे निकाह कर लेगी, लेकिन गासिया इन्कार करती रही। सुबह पांच बजे एक मुखबिर ने अफजलपुर गांव के निकट आमिर के होने की सूचना दी।

- महिला पर निकाह का दबाव बना रहा था आमिर, संपत्ति पर भी थी नजर
- पुलिस ने कहा, साइको था आमिर, दुष्कर्म व हत्या समेत चार केस थे दर्ज

अकबरपुर के सुझरी गांव के निकट हुई मुठभेड़ के बाद घटना स्थल पर गिरी बाइक के पास खड़े पुलिस कर्मी -जागरण

राबड़ी देवी समेत पूर्व मंत्रियों को आवास खाली करने का नोटिस

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : भवन निर्माण विभाग ने बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी समेत कई पूर्व मंत्रियों को सरकारी आवास खाली करने का नोटिस जारी किया है।

भवन निर्माण निगम ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि जो मंत्री अब पद पर नहीं हैं, वे 15 दिनों के भीतर सेंट्रल पूल के तहत आवंटित अपने सरकारी आवास खाली कर दें। भवन निर्माण विभाग के सूत्रों के अनुसार, यह कार्रवाई नियमों के तहत की जा रही है।

विभाग ने कहा है कि मंत्री पद समाप्त होने के बाद निर्धारित समय सीमा के भीतर सरकारी आवास खाली करना अनिवार्य होता है। इसके बावजूद कई पूर्व मंत्री अब तक सरकारी आवास में रह रहे हैं, जिस कारण यह नोटिस जारी करना पड़ा।

नोटिस में कहा गया है कि 15 दिनों की मोहलत अंतिम है। यदि तय समय सीमा के भीतर आवास खाली नहीं किया जाता है, तो मामला सक्षम अधिकारी के पास भेजा जाएगा।

नाम बदलकर टीसीएस पीड़िता को मलेशिया भेजना चाहती थी निदा खान

मुंबई, प्रेट्र : नासिक की एक अदालत ने यौन उत्पीड़न और मतांतरण से जुड़े मामले में टीसीएस कर्मचारी निदा खान की अग्रिम जमानत याचिका खारिज करते हुए कहा कि पीड़िता का "सुनियोजित तरीके से" बहला-फुसलाकर ब्रेन वाश करना उसे मलेशिया भेजने की "साजिश" प्रतीत होती है। निदा की याचिका को खारिज करते हुए कहा कि अपराध की गंभीरता वास्तव में बहुआयामी है। इस मामले की तह तक जाने के लिए हिरासत में पूछताछ आवश्यक है। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश केजी जोशी का आदेश सोमवार को उपलब्ध हुआ। इसमें कहा गया है कि रिकार्ड में मौजूद सामग्री से पता चलता है कि पीड़िता का नाम बदलने के बाद निदा खान उसे मलेशिया भेजना चाहती थी। अभियोजन पक्ष द्वारा हिरासत में पूछताछ की आवश्यकता पर जोर देने के बाद अदालत ने दो मई को खान की याचिका खारिज कर दी थी।

एफआइआर के अनुसार, खान ने महिला कर्मचारियों को इस्लामी परंपराओं के अनुसार कपड़े पहनने और व्यवहार करने की सलाह दी थी। उसने अपनी गर्भावस्था का हवाला देते हुए अग्रिम जमानत मांगी थी। पुलिस ने बताया था कि महाराष्ट्र के विभिन्न हिस्सों में खान की तलाश जारी है।

आदेश में कहा गया है कि आवेदक की भूमिका का उल्लेख एफआइआर में स्पष्ट रूप से किया गया है। इसमें उसकी संलिप्तता दिखाई देती है। न्यायाधीश ने इस बात पर जोर दिया कि पीड़िता को किसी भी धर्म को मानने और अपनी पसंद का नाम रखने का संवैधानिक अधिकार है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि उसे इसके लिए बहकाया जाए और वह भी एक सुनियोजित साजिश के तहत।

देओलाली पुलिस स्टेशन में दर्ज इस मामले में निदा खान और दो अन्य सह-आरोपितों दानिश शेख और तौसीफ पर विवाह का झूठा वादा कर यौन संबंध बनाने और धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने आदि के आरोप में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस के अनुसार, दानिश शेख ने विवाह का झूठा वादा कर पीड़िता का यौन उत्पीड़न किया, जबकि तौसीफ ने बार-बार उससे यौन संबंध बनाने की मांग करते हुए और शेख के साथ उसके कथित संबंध को परिवार के सामने उजागर करने की धमकी देते हुए उसका यौन शोषण किया।

- अदालत ने आरोपित निदा खान की अग्रिम जमानत याचिका खारिज करते हुए व्यक्त की आशंका
- कहा, इस मामले की तह तक जाने के लिए आरोपित से हिरासत में पूछताछ आवश्यक

निदा खान। फाइल

भोजशाला विवाद

हाई कोर्ट में एएसआइ ने रखे तर्क, कहा- वर्ष 1902-03 के सर्वे से ही स्पष्ट हो गया था कि भोजशाला मंदिर है, वर्ष 1935 की अधिसूचना पर कहा- धार दरबार को अधिसूचना जारी करने का अधिकार ही नहीं था

मंदिर से निकाली सामग्री से ही किया गया मस्जिद का निर्माण

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) का कहना है कि मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित ऐतिहासिक भोजशाला में मस्जिद का निर्माण वहां स्थित मंदिर से निकाली गई सामग्री से ही किया गया था। यही कारण है कि यहां पत्थरों पर संस्कृत में लिखे श्लोक मिले हैं। वर्ष 1902-03 में हुए सर्वे में ही यह बात स्पष्ट हो गई थी कि भोजशाला मंदिर है। इसका उल्लेख समय-समय पर धार आए कई पर्यटकों ने भी अपने अनुभवों को लिपिबद्ध करते हुए किया है। वे भी यह सिद्ध करते हैं कि मुस्लिम राजाओं ने मंदिर को मस्जिद में बदला था, जबकि मूल रूप से यह सरस्वती देवी का मंदिर ही है।

भोजशाला के धार्मिक स्वरूप के विवाद की सुनवाई में मध्य प्रदेश हाई कोर्ट की इंदौर खंडपीठ में सोमवार को करीब दो घंटे तक चली सुनवाई के दौरान एएसआइ की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता सुनील जैन ने सर्वे के समर्थन में तर्क रखे। उन्होंने मस्जिद पक्ष की ओर से उठाई गईं आपत्तियों का बिंदुवार जवाब दिया। मस्जिद पक्ष के तर्कों को खारिज करते हुए कहा कि धार दरबार ने वर्ष 1935 में एक अधिसूचना जारी कर इसे मस्जिद बताया था, लेकिन अधिनियम के प्रविधान से स्पष्ट है कि धार दरबार को अधिसूचना जारी करने का अधिकार ही नहीं था। उन्होंने भोजशाला को लेकर तत्कालीन ब्रिटिश अधिकारियों के बीच हुए पत्राचार का संदर्भ भी दिया। कोर्ट को बताया कि तत्कालीन ब्रिटिश अधिकारी भोजशाला को लेकर सजग थे और इसके रखरखाव को लेकर बहुत चिंता करते थे। उन्होंने इस संबंध में 13 जुलाई 1935 के दस्तावेजों का हवाला भी दिया। अधिवक्ता जैन ने कहा कि वर्ष 1904 से ही भोजशाला राष्ट्रीय महत्व की संरक्षित धरोहर घोषित है और एएसआइ भोजशाला का स्वामी नहीं, बल्कि अभिभावक है। उसने समय-समय पर इसका रखरखाव भी किया। वर्ष 1935 में भोजशाला के रखरखाव पर 50 हजार रुपये खर्च किए गए थे। एएसआइ की ओर से मंगलवार को भी तर्क रखे जाएंगे।

भोजशाला परिसर। फाइल

हम सुनवाई पूरी करने के करीब हैं : कोर्ट

सुनवाई के दौरान हिंदू फ्रंट फार जस्टिस के वकील विष्णु शंकर जैन ने कहा कि वह मस्जिद पक्ष की ओर से रखे गए तर्कों पर 13 और 14 मई को रिजाइंडर देना चाहते हैं। उन्हें इसकी अनुमति दी जाए। इस पर हाई कोर्ट ने कहा कि हम इस मामले में सुनवाई पूरी करने के करीब हैं। याचिकाकर्ता, प्रतिवादी और इंटरविनर अपनी-अपनी बात रख चुके हैं और एएसआइ के वकील अपनी बात रख रहे हैं। अगर आप रिजाइंडर ही देना चाहते हैं तो इसे जल्द से जल्द दे दें। कोर्ट की इस मौखिक टिप्पणी से मामले में ग्रीष्मावकाश से पहले फैसला आने की संभावना बढ़ गई है।

मस्जिद पक्ष ने कहा- अब तक नहीं मिली वीडियोग्राफी : सोमवार को सुनवाई शुरू होते ही मस्जिद पक्ष की ओर से कहा गया कि कोर्ट के आदेश के बावजूद भोजशाला में एएसआइ द्वारा किए गए सर्वे की वीडियोग्राफी उनको उपलब्ध नहीं कराई गई है। एएसआइ ने इसे गूगल ड्राइव पर अपलोड किया है, लेकिन फाइलें इतनी बड़ी हैं कि इसे देख पाना संभव नहीं है।

सम्राट मंत्रिमंडल का विस्तार सात मई को, शपथ ग्रहण गांधी मैदान में

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना

बिहार में सम्राट चौधरी के नेतृत्व वाले मंत्रिमंडल का विस्तार सात मई को होगा। शपथ ग्रहण समारोह पटना के गांधी मैदान में आयोजित करने की तैयारी है। सम्राट के नेतृत्व में बिहार में नई सरकार का गठन पिछले महीने की 16 तारीख को हुआ था। उस समय जदयू कोटे से दो उपमुख्यमंत्री विजय चौधरी व बिजेंद्र प्रसाद यादव ने शपथ ली थी। उसी दिन भाजपा और जदयू कोटे में कौन-कौन से विभाग रहेंगे, यह तय हो गया था। यह माना जा रहा था कि बंगाल सहित अन्य राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणाम के बाद मंत्रिमंडल का विस्तार किया जाएगा।

वर्ष 2025 के विधानसभा चुनाव के बाद जब नीतीश के नेतृत्व में बिहार में एनडीए सरकार का गठन हुआ था, तब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित कई केंद्रीय मंत्री और भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्री गांधी मैदान में आयोजित नई सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए थे। इस बार भी गांधी मैदान में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह को भव्य बनाए जाने की तैयारी है।

- पटना के गांधी मैदान में शपथ ग्रहण की तैयारी

सम्राट चौधरी। फाइल

दैनिक जागरण

निरंतर प्रयास ही सफलता का सूत्र है

अपेक्षित और अप्रत्याशित

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में से जहां असम, केरलम और केंद्रशासित प्रदेश पुडुचेरी के परिणाम अपेक्षा के अनुरूप सिद्ध हुए, वहीं पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु के नतीजे अप्रत्याशित रहे। बंगाल और तमिलनाडु के नतीजों ने इसलिए चौंकाया, क्योंकि जहां बंगाल में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस के सत्ता विरोधी माहौल का सामना करने के बाद भी इसकी आशा शायद ही किसी को रही हो कि उसके लिए सौ सीटों तक पहुंचना भी कठिन हो जाएगा और भाजपा दो सौ सीटों के निकट पहुंच जाएगी, वहीं तमिलनाडु में नए बने दल टीवीके के बारे में कम ही लोगों ने कमजोर सा अनुमान लगाया था कि वह सत्ता के निकट पहुंच जाएगी। बंगाल में ममता बनर्जी और तमिलनाडु में स्टालिन की पराजय यह बताती है कि जो क्षेत्रीय नेता अपनी सत्ता को खुद की निजी जागीर में बदल लेते हैं, उन्हें जनता अधिक समय तक सहन नहीं करती। तमिलनाडु में टीवीके के जोसेफ विजय ने वह कर दिखाया, जो एक समय आंध्र में एनटी रामाराव और दिल्ली में अरविंद केजरीवाल ने किया था-पहली बार में ही बंपर जीत। विजय की जीत का महत्व इसलिए भी है कि उन्होंने छह दशक बाद द्रविड़ दलों को तमिलनाडु की सत्ता से बाहर कर दिया। बंगाल में भी भाजपा ने कांग्रेस, वाम दलों के लंबे शासन के बाद 15 वर्षों तक शासन करने वाली तृणमूल कांग्रेस को बाहर का दरवाजा दिखा दिया। बंगाल में प्रचंड जीत के साथ ही भाजपा ने पूर्वोत्तर के साथ पूर्वी भारत पर बढ़त हासिल कर ली। बंगाल में जो राजनीतिक लड़ाई कांटे की मानी जा रही थी, उसमें भाजपा की इतनी बड़ी जीत यह बताती है कि ममता का शासन कुशासन का पर्याय बन गया था और मुस्लिम तुष्टीकरण की उनकी राजनीति एवं बांग्लादेश से होने वाली घुसपैठ की गंभीर समस्या की अनदेखी ने बहुसंख्यक समुदाय को भाजपा के पक्ष में एकजुट करने का काम किया। भाजपा के पूर्व संस्करण जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी के गृह राज्य में भाजपा की जीत ने यह भी रेखांकित किया कि उसके विस्तार और बढ़ते प्रभाव का सिलसिला तेज होने वाला है। इस जीत ने प्रधानमंत्री मोदी के साथ गृहमंत्री अमित शाह के कद को और अधिक बढ़ाने का काम किया है।

> 2026 की भाजपा वह नहीं, जो 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद निस्तेज दिखने लगी थी और विपक्षी दल यह प्रतीति कराने लगे कि अब उनका नंबर आएगा

2026 की भाजपा वह नहीं, जो 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद निस्तेज दिखने लगी थी और कांग्रेस समेत अन्य विपक्षी दल यह प्रतीति कराने लगे कि अब उनका नंबर आएगा। निःसंदेह अब बंगाल में भी डबल इंजन सरकार होगी, लेकिन इसके साथ ही भाजपा के सामने यह चुनौती भी आ खड़ी हुई है कि वह राज्य की जनता से किए गए अपने वादों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करे और इस राज्य को राजनीतिक हिंसा एवं घुसपैठियों से मुक्त करने के साथ फिर से पटरी पर लाए। पांच राज्यों के चुनाव नतीजे इसलिए भाजपा का अतिरिक्त उत्साहवर्धन करने वाले हैं, क्योंकि उसने असम में तीसरी बार कहीं बड़े अंतर से जीत हासिल की। इसके साथ ही केरलम और तमिलनाडु में भी अपने लिए कुछ जगह बनाई। पुडुचेरी में उसके समर्थन वाली सरकार का फिर से बनना भी कम महत्वपूर्ण नहीं, क्योंकि वह असम के साथ यहां भी सत्ता विरोधी माहौल को दरकिनार करने में सफल रही। ऐसा न तो बंगाल में ममता कर सकीं, न केरलम में विजयन और न ही तमिलनाडु में स्टालिन। कांग्रेस इससे प्रसन्न हो सकती है कि केरलम के रूप में एक और राज्य उसके हाथ आ गया, पर असम में वह जिस तरह पराजित हुई और यहां तक कि उसके सबसे प्रमुख नेता गौरव गोगोई भी हार गए, वह उसके लिए गहन आत्मचिंतन का विषय बनना चाहिए। वह भले ही केरलम में अपने सहयोगी दलों के साथ सरकार बनाने जा रही हो, लेकिन पांच राज्यों के नतीजे यही कह रहे हैं कि उसके नेतृत्व वाला गठबंधन आइएनडीआइए और कमजोर हो गया है।

राष्ट्रीय राजनीति को बदलने वाले नतीजे

राहुल वर्मा

पांच राज्यों के जनादेश से जहां भाजपा और मजबूत होगी, वहीं तृणमूल, द्रमुक और वाम दलों की हार से विपक्षी दलों का मोर्चा न केवल कमजोर होगा, बल्कि उसका संतुलन भी बदलेगा

चार राज्यों और एक केंद्रशासित प्रदेश के विधानसभा चुनाव परिणाम मिले-जुले रहे। असम, केरलम और पुडुचेरी के परिणाम अनुमानों के अनुरूप रहे तो पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु के नतीजे अप्रत्याशित एवं नाटकीय राजनीतिक परिवर्तन को रेखांकित कर रहे हैं। असम के बारे में माना जा रहा था कि भाजपा सत्ता में वापसी करने में सफल रहेगी तो केरलम में कांग्रेस को कामयाबी मिलेगी। पुडुचेरी में भी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की राह में कोई मुश्किल नहीं दिख रही थी। दो बड़े चुनावी राज्यों में से एक तमिलनाडु में नई-नवेली पार्टी टीवीके की भारी जीत ने राजनीतिक पंडितों को भी हैरान किया तो बंगाल में भाजपा की जीत ने लंबे समय से कायम ममता बनर्जी को सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाया। इन दोनों बड़े राज्यों में भारी राजनीतिक उलटफेर हुआ है।

पिछले कुछ वर्षों में असम भाजपा के राजनीतिक वर्चस्व वाले राज्य के रूप में उभरा है। लगातार सत्ता में रहने के बावजूद उसकी सीटों में बढ़ोतरी दर्शाती है कि जनता सरकार के कामकाज से काफी संतुष्ट है। 2023 में विधानसभा क्षेत्रों के नए सिरे से परिसीमन ने भी भाजपा की राजनीतिक ताकत बढ़ाई है। बोडोलैंड में सहयोगी दलों और असम गण परिषद के साथ ने भी पार्टी को मजबूती दी। कल्याणकारी योजनाओं और मुख्यमंत्री हिमंत की लोकप्रियता भी उसके पक्ष में जाती है। कांग्रेस सांगठनिक स्तर पर एकदम लुंज-पुंज हो गई है। चुनावों के दौरान ही उसकी राज्य इकाई के पूर्व अध्यक्ष के अलावा प्रचार अभियान समिति के प्रमुख जैसे दो दिग्गज नेता भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए। यह दर्शाता है कि राज्य की राजनीतिक हवा कांग्रेस के कितने विपरीत रही, जिसकी पुष्टि न केवल घटी हुई सीटों, बल्कि गौरव गोगोई जैसे नेता की हार में भी झलकती है, जिनके चेहरे पर पार्टी चुनाव लड़ रही थी।

केरलम में दस साल से वामपंथी सरकार सत्ता में थी, जिसने पिछले विधानसभा चुनाव में हर पांच साल में सरकार बदलने वाले राज्य के राजनीतिक रुझान को धता बताते हुए सत्ता में वापसी की थी। इसलिए यहां राजनीतिक परिवर्तन अवश्यंभावी माना जा रहा था। भाजपा यहां राजनीतिक पैठ बढ़ाने के प्रयास तो भरपूर कर रही है, पर वे फलीभूत नहीं हो पा रहे। वैसे भाजपा के इन प्रयासों की कीमत वाम दलों को चुकानी पड़ी, क्योंकि वह दक्षिण केरल और हिंदुओं विशेषकर एझावा जैसे उन समुदायों को साधने की जुगत में है, जो पारंपरिक रूप से वाम समर्थक माने जाते हैं। इसीलिए, केरलम की राजनीतिक लड़ाई में कांग्रेस के लिए कोई खास मुश्किल नहीं थी। केरलम से विदाई के बाद अब किसी भी राज्य में वामपंथी दलों की सरकार नहीं रह गई है।

अवधेश राजपूत

बंगाल में भाजपा की ऐतिहासिक जीत पर भले ही कुछ राजनीतिक प्रेक्षक हैरानी जताएं, लेकिन राज्य की सत्ता तक उसकी पहुंच बस समय की ही बात थी। वर्ष 2019 से हो रहे चुनावों के समय से ही भाजपा करीब 40 प्रतिशत मतों के स्तर पर अटकी थी और इसमें पांच प्रतिशत तक की बढ़ोतरी उसे राज्य की कमान दिलाने को पर्याप्त थी। यह चुनाव उसके सत्तारोहण का पड़ाव बनकर उभरा। मतदाता सूचियों के गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर की भूमिका को भी भाजपा की चुनावी जीत में एक कारक माना जा सकता है, लेकिन यही इकलौता कारण नहीं रहा। राज्य की ममता बनर्जी सरकार लंबे समय से कायम सत्ता से उपजे असंतोष से भी जूझ रही थी। विभिन्न योजनाओं को लेकर केंद्र के साथ उनका टकराव भी एक वर्ग को अखर रहा था कि राज्य को इसके चलते अपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहे हैं। ममता बनर्जी की निजी लोकप्रियता के बावजूद उन्हें सबसे अधिक दुष्परिणाम अपने स्थानीय कार्यकर्ताओं के मनमानेपन और बड़बोलेपन का ही भुगतना पड़ा, जो लोगों को आतंकित करने के साथ ही उनके दैनंदिन जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप भी करते थे। चुनाव आयोग द्वारा मुहैया व्यापक सुरक्षा छत्र राज्य सरकार से कुपित मतदाताओं को आश्वस्त करने वाला साबित हुआ और मतदान के रुझान से लेकर परिणाम भी इस पहलू को पुष्ट करते हुए प्रतीत होते हैं। भाजपा ने भी पिछले विधानसभा चुनाव में की गई गलतियों से सबक लेते हुए सकारात्मक अभियान पर ध्यान केंद्रित किया, जिसका भी उसे लाभ मिला।

चुनाव परिणामों को लेकर सबसे हैरान करने का काम तमिलनाडु ने किया है, जहां 1967 के बाद पहली बार द्रविड़ केंद्रित राजनीति से इतर कोई दल सत्ता के शिखर पर उभरा है। तमिलनाडु की राजनीति पर फिल्म जगत का प्रभाव हमेशा से रहा है और देश में पहले भी बड़े राजनीतिक उलटफेर हुए हैं, लेकिन अभिनेता से नेता बने विजय की जीत कई मायनों में अप्रत्याशित रही है। एक समय एनटीआर ने समूचे आंध्र प्रदेश का दौरा कर अपनी सिनेमाई छवि को राजनीतिक स्वरूप दिया था, लेकिन उसकी तुलना में विजय ने ऐसा कुछ नहीं किया। आम आदमी पार्टी और असम गण परिषद जैसे एकाएक सफल हुए राजनीतिक प्रयोगों की पृष्ठभूमि भी कहीं न कहीं किसी सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों से जुड़ी रही, लेकिन विजय की टीवीके के साथ ऐसा भी कुछ नहीं रहा। इसलिए उनकी जीत वाकई चौंकाने वाली है।

इन चुनावों से भाजपा को बड़ा राजनीतिक संबल मिलेगा। केरलम और तमिलनाडु में असफलता के बावजूद असम में मजबूती और बंगाल के प्रचंड जनादेश से उसका 'मिशन ईस्ट' लगभग पूरा हो गया है। इससे उत्साहित पार्टी दक्षिण में और मजबूती के साथ अपनी ताकत लगाएगी। तृणमूल कांग्रेस और द्रमुक की ऐसी जबरदस्त हार विपक्षी दलों के मोर्चे आइएनडीआइए के लिए तगड़ा झटका है, क्योंकि ये इस गठबंधन के प्रमुख स्तंभ रहे हैं। उनकी हार से इस गठबंधन का संतुलन भी बदलेगा। कांग्रेस का दो राज्यों में दांव लगा था, जिसमें केरलम की जीत से उसे दम तो मिलेगा, लेकिन असम उसके लिए जिस तरह विषम होता जा रहा है, उसकी टीस उसे सालती रहेगी। लोकसभा सीटों के लिहाज से बड़े राज्यों में निरंतर हाशिए पर पहुंचना भी उसके लिए चिंतित करने वाला पहलू बनता जा रहा है।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं सेंटर फार पालिसी रिसर्च में फेलो हैं)

response@jagran.com

बंगाल में भाजपा ने किया कमाल

यदि पांच राज्यों-पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरलम, असम और पुडुचेरी के चुनाव परिणामों को समग्र रूप में देखा जाए, तो एक व्यापक तस्वीर उभरती है। इस तस्वीर में दो घटनाएं विशेष रूप से ऐतिहासिक प्रतीत होती हैं-बंगाल में भाजपा की उल्लेखनीय बढ़त और तमिलनाडु में थलापति विजय की पार्टी टीवीके का प्रभावशाली प्रदर्शन। हालांकि असम में भाजपा की लगातार तीसरी जीत भी महत्वपूर्ण है, लेकिन बंगाल और तमिलनाडु की घटनाएं राजनीतिक दृष्टि से अधिक दूरगामी प्रभाव वाली हैं। बंगाल में एक बड़े मुस्लिम मतदाता वर्ग के तृणमूल कांग्रेस के संगठित समर्थन के बावजूद भाजपा की बढ़त सामान्य घटना नहीं। वैसे तो असम में भी उल्लेखनीय मुस्लिम आबादी के बावजूद भाजपा की जीत ने कई स्थापित राजनीतिक मिथकों को तोड़ा है, पर असम और बंगाल की राजनीति के स्वरूप और सत्ता संरचना में मौलिक अंतर है। बंगाल में ममता बनर्जी ने जिस प्रकार का राजनीतिक माहौल और सत्ता संरचना विकसित की थी, उसमें किसी अन्य दल के लिए प्रभावी चुनौती पेश करना कठिन था। ऐसे में भाजपा की यह सफलता केवल चुनावी उपलब्धि नहीं, बल्कि एक बड़े परिवर्तन का संकेत है कि बंगाल की राजनीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।

पिछले एक दशक से चुनावी रुझानों का यह एक प्रमुख पहलू लगभग हर राज्य में दिखाई देता है कि हिंदुत्व, संस्कृति और धार्मिक पहचान के प्रति हिंदुओं के एक व्यापक पुनर्जागरण ने एक स्थायी मतदाता आधार का निर्माण किया है। यह आधार ऐसा है, जो संतुष्टि, असंतोष या आंशिक नाराजगी के बावजूद किसी न किसी रूप में भाजपा या उसके सहयोगी दलों के पक्ष में झुकाव बनाए रखता है और कई बार उसकी अनुपस्थिति में वैचारिक रूप से निकट दलों की ओर भी स्थानांतरित हो जाता है। यह प्रवृत्ति पांचों राज्यों के चुनावों में भी देखने को मिली। भाजपा स्थानीय और क्षेत्रीय मुद्दों को उठाने के साथ-साथ चुनावी विमर्श को राष्ट्रीय विषयों से जोड़ने की रणनीति अपनाती रही है। इससे मतदाताओं के साथ उसका सीधा भावनात्मक संवाद स्थापित होता है। भाजपा ने बंगाल, असम में राष्ट्रीय सुरक्षा, जनसांख्यिकीय संतुलन जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उभारा, जो चुनावी एजेंडे के केंद्र में रहे। मोदी सरकार द्वारा महिलाओं के सशक्तीकरण से जुड़े कार्यक्रमों ने भी चुनावी माहौल को प्रभावित किया।

अवधेश कुमार

बंगाल के परिणाम से वही चकित हैं, जो राज्य में जमीनी सच्चाई और एक वर्ग की छटपटाहट महसूस नहीं कर रहे थे

सीएम आवास के पास से निकलते भाजपा कार्यकर्ता। प्रेट्र

वास्तव में बंगाल के परिणाम ने केवल उन्हें ही चौंकाया है, जो जमीनी सच्चाई के साथ मतदाताओं और विशेष रूप से हिंदुओं के बड़े वर्ग के अंदर बदलाव की छटपटाहट को महसूस नहीं कर रहे थे। तृणमूल कांग्रेस ने बंगाल की सत्ता और पूरी राजनीति को निहित स्वार्थी तत्वों के हाथों में सौंप दिया था। इससे कट्टरपंथी तत्वों को मिले प्रत्यक्ष-परोक्ष संरक्षण और प्रोत्साहन के कारण पूरे प्रदेश में सांप्रदायिक भय और तनाव की स्थिति में कायम हो गई थी। वे कहने लगे थे कि मतदाता अपनी इच्छा से नहीं, तृणमूल कांग्रेस के नेताओं की चाहत से मतदान करें या घर बैठें, अन्यथा हिंसा, दमन, उत्पीड़न और पलायन का दंश झेलें। 'साइलेंट रिगिंग' बंगाल की मुख्य चुनावी प्रवृत्ति रही है। पहले इसी रास्ते वाम मोर्चा ने लगातार जीत सुनिश्चित की और फिर ममता ने भी अपनी पूरी पार्टी को उससे ज्यादा हिंसक और दमनकारी तत्वों में परिणत कर दिया। पलायन या हिंसा की सर्वाधिक शिकार महिलाएं होती हैं। इसी कारण इनका बहुत बड़ा मत तृणमूल के बजाय भाजपा को गया। जो लोग भाजपा पर हिंदुओं के ध्रुवीकरण का आरोप लगा रहे हैं, वे सतही विश्लेषण कर रहे हैं। वास्तव में बंगाल में राजनीतिक संघर्ष वास्तविक लोकतंत्र की पुनर्स्थापना तथा सत्ता संस्कृति को सर्वसमावेशी बनाने का था। यह जिम्मेदारी मुख्यतः प्रदेश के हिंदुओं को ही लेनी थी। हिंदुओं के अंदर अगर यह भाव पैदा हुआ कि इस सरकार के रहते हमारा अस्तित्व संकट में है, तो इसके कारण अत्यंत गहरे हैं। बांग्लादेश की हिंसक घटनाओं ने हिंदुओं के इस मनोविज्ञान को सशक्त किया कि हमें कुछ हद तक जान की बाजी लगानी होगी। इसके अलावा एसआइआर में मृत, संदिग्ध और स्थानांतरित मतदाताओं के नाम हटाने के कारण फर्जी मतदाताओं का खेल खत्म हो गया। केंद्रीय बलों की उपस्थिति, चुनाव के बाद भी सुरक्षा बलों के बने रहने की घोषणा, दूसरे राज्यों के अधिकारियों की चुनाव पर्यवेक्षक के रूप में नियुक्ति, प्रदेश के अधिकारियों का व्यापक पैमाने पर स्थानांतरण या चुनाव प्रक्रिया तक कार्य मुक्ति तथा चुनावी हिंसा वाले चिह्नित व्यक्तित्वों के विरुद्ध कार्रवाई एवं सतर्क दृष्टि आदि ने भय और संशयग्रस्त मतदाताओं के अंदर सुरक्षा को लेकर आश्वस्त किया, जिससे चुनावी माहौल में बड़ा परिवर्तन आया। भाजपा ने प्रधानमंत्री मोदी एवं गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में मतदाताओं को पहले दिन से यह विश्वास दिलाने की रणनीति अपनाई कि हम सत्ता में आ रहे हैं तथा किसी के साथ अन्याय हुआ तो पूरी पार्टी खड़ी रहेगी। इन सबके कारण ही बंगाल में यह असंभव-सा लगने वाला सत्ता परिवर्तन हुआ है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

सहिष्णुता का मार्ग

आज के समय में परिवारों के भीतर बढ़ती हुई हिंसा, आपसी तनाव, द्वेष और कटुता एक गंभीर सामाजिक चुनौती बनती जा रही है। छोटी-छोटी बातों पर विवाद, अहंकार और संवादहीनता के कारण परिवार, जो शांति और स्नेह का केंद्र होना चाहिए, वह संघर्ष का स्थल बनता जा रहा है। ऐसे समय में आवश्यक है कि हम अपने परिवार को अहिंसा की प्रयोगशाला बनाएं, जहां विचार, व्यवहार और संबंधों में सौम्यता और संतुलन का अभ्यास हो।

अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा से बचना नहीं है, बल्कि यह मन, वचन और कर्म की कोमलता का नाम है। मानसिक हिंसा-जैसे कटु शब्द, उपेक्षा, तिरस्कार और ईर्ष्या अक्सर शारीरिक हिंसा से भी अधिक गहरी चोट पहुंचाती है। इसलिए परिवार में शांति स्थापित करने के लिए सबसे पहले हमें अपनी मानसिक वृत्तियों को शुद्ध करना होगा। इस दिशा में मैत्री भावना का विशेष महत्व है। मैत्री का अर्थ है-हर सदस्य के प्रति अपनत्व और सद्भाव का भाव रखना। जब हम अपने परिवार के सदस्यों को प्रतिस्पर्धी या विरोधी नहीं, बल्कि सहयोगी और शुभचिंतक के रूप में देखने लगते हैं, तब आपसी तनाव स्वतः कम होने लगता है। मैत्री भावना से संवाद के द्वार खुलते हैं और गलतफहमियां दूर होती हैं। इसी प्रकार प्रमोद की भावना भी अत्यंत आवश्यक है। प्रमोद का अर्थ है-दूसरों की प्रगति, सफलता और गुणों में आनंदित होना। परिवारों में अक्सर ईर्ष्या और तुलना के कारण द्वेष उत्पन्न होता है। यदि हम एक-दूसरे की उपलब्धियों में हर्ष अनुभव करें, तो यह सकारात्मक ऊर्जा पूरे परिवार के परिवेश को बदल सकती है। प्रमोद भावना रिश्तों में मधुरता और सहयोग का संचार करती है। विरोध से तनाव बढ़ता है, जबकि धैर्य और संयम से प्रतिक्रिया देने पर विवाद शांत हो सकता है।

ललित गर्ग

आपदा में जान बचाएगी नई चेतावनी प्रणाली

योगेश कुमार गोयल

> सेल ब्राडकास्ट तकनीक केवल एक संदेश सेवा नहीं है, बल्कि यह डिजिटल युग का सुरक्षा कवच है

गत दिनों देशभर में लाखों स्मार्टफोन अचानक तेज अलार्म जैसी आवाज के साथ गूंज उठे, जिसने सभी को चौंका दिया। यह कोई साधारण नोटिफिकेशन नहीं था, बल्कि एक तीखी 'एसओएस' जैसी ध्वनि थी, जिसके साथ स्क्रीन पर एक सरकारी अलर्ट प्रदर्शित हो रहा था। यह भारत सरकार द्वारा विकसित स्वदेशी 'सेल ब्राडकास्ट सिस्टम' का परीक्षण था, जो आपदा प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत देता है। इस परीक्षण ने यह स्पष्ट कर दिया कि भविष्य में आपदाओं के दौरान सूचना प्रसारण का तरीका पूरी तरह बदलने वाला है। दूरसंचार विभाग और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) द्वारा विकसित यह तकनीक भूकंप, बाढ़ और चक्रवात जैसी आपदाओं के समय 'लाइफ-सेवर' साबित होगी।

सेल ब्राडकास्ट सिस्टम (सीबीएस) एक मोबाइल संचार तकनीक है, जो किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र में मौजूद सभी मोबाइल उपकरणों पर एक साथ संदेश भेज सकती है। इसे 'डिजिटल लाउडस्पीकर' के रूप में समझा जा सकता है। यह पारंपरिक एसएमएस की तरह नहीं है, जहां संदेश एक-एक नंबर पर भेजा जाता है। सेल ब्राडकास्ट सीधे मोबाइल टावर से पूरे क्षेत्र में 'पुश' किया जाता है, जिससे हजारों लोग एक साथ अलर्ट प्राप्त कर लेते हैं। यदि आप उस टावर की सीमा में हैं, तो संदेश तुरंत मिलेगा, चाहे नेटवर्क व्यस्त हो या इंटरनेट काम न कर रहा हो। जब कोई आपातकालीन संदेश जारी किया जाता है, तो वह किसी विशेष मोबाइल नंबर पर नहीं, बल्कि एक पूरे क्षेत्र में प्रसारित होता है। भारतीय मौसम विभाग या एनडीएमए संभावित खतरे की पहचान करते हैं और संबंधित क्षेत्र को चिह्नित करते हैं। फिर आपदा से जुड़ा संदेश दूरसंचार आपरेटरों के माध्यम से उस क्षेत्र के मोबाइल टावरों को भेजा जाता है। फिर टावर की रेंज में मौजूद हर मोबाइल, चाहे उसमें सिम हो या न हो, एक तेज बीप और वाइब्रेशन के साथ संदेश प्रदर्शित करता है।

सेल ब्राडकास्ट तकनीक कई विकसित देशों में पहले से उपयोग में है। उदाहरण के लिए, इजरायल में यह प्रणाली नागरिकों को मिसाइल हमलों के दौरान तुरंत चेतावनी देती है। अमेरिका, जापान और यूरोप के कई देशों में भी इसी तरह के अलर्ट सिस्टम सक्रिय हैं। भारत के लिए यह तकनीक अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह आपदा-संवेदनशील देश है। समय पर चेतावनी देना हजारों जानें बचा सकता है। यदि आपका फोन ऐसे क्षेत्र में है, जहां मोबाइल टावर का कोई सिग्नल नहीं है, तो अलर्ट नहीं मिलेगा। भारत सरकार का लक्ष्य इस तकनीक को देश के कोने-कोने तक पहुंचाना है। सेल ब्राडकास्ट तकनीक केवल एक संदेश सेवा नहीं है, बल्कि यह डिजिटल युग का सुरक्षा कवच है, जो जान-माल के नुकसान को कम कर सकता है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

बैंकिंग कार्यप्रणाली में सुधार जरूरी

'नागरिकों की समस्या बढ़ाते जटिल नियम' शीर्षक से प्रकाशित डा. ब्रजेश कुमार तिवारी का आलेख पढ़ा। लेखक द्वारा बैंकिंग प्रणाली में खामियों के समाधान के लिए जो उपाय सुझाए गए हैं, सराहनीय हैं। इन पर बैंक अथारिटी को गंभीरता से विचार करना चाहिए। इस अव्यवस्था के शिकार केवल सुदूर गांव में रहने वाले आदिवासी, अशिक्षित और वरिष्ठ नागरिक ही नहीं हैं, बल्कि शहरी शिक्षित नागरिक भी हैं। इसका एक उदाहरण मेरा व्यक्तिगत अनुभव है। मेरा और मेरी पत्नी का सार्वजनिक क्षेत्र के एक बैंक में खाता था। कुछ साल पहले मैंने इसी खाते के आधार पर एक फिक्स्ड डिपाजिट (एफडी) भी केवल अपने हस्ताक्षर से खुलवाया। उस समय बैंक ने न तो कोई आपत्ति जताई और न ही मेरी पत्नी के हस्ताक्षर आवश्यक बताए। दुर्भाग्यवश, नवंबर 2024 में मेरी पत्नी का निधन हो गया। कुछ महीनों बाद जब मैं एफडी को अपने नाम कराने और उत्तराधिकारी का नाम दर्ज कराने बैंक गया, तो बैंक ने यह कहते हुए मना कर दिया कि खाता दोनों हस्ताक्षरों से नहीं खोला गया है। इसके लिए मुझसे लीगल सर्टिफिकेट और सभी उत्तराधिकारियों का अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) मांगा गया, जिसकी प्रक्रिया अत्यंत जटिल है। मैंने बैंक को लिखित शिकायत दी और यह स्पष्ट किया कि इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। बैंक ने भी भारतीय रिजर्व बैंक के 2011 और उसके बाद जारी निर्देशों का पालन नहीं किया, जिनके अनुसार ई या एस मोड में खाते खोलते समय ग्राहकों की उचित काउंसिलिंग और दोनों खाताधारकों के हस्ताक्षर सुनिश्चित किए जाने चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसी समस्या उत्पन्न न हो। यह दर्शाता है कि बैंकिंग प्रणाली में नियमों के साथ-साथ उनकी कार्यप्रणाली में भी सुधार की आवश्यकता है।

श्रीभगवान भारद्वाज, बहादुरगढ़, हरियाणा

सकारात्मक बदलाव की उम्मीद

बंगाल में राजनीतिक हिंसा, कटुता और ध्रुवीकरण जैसे मुद्दे लंबे समय से चर्चा में रहे हैं। यदि चुनावों के बाद भी यह प्रवृत्ति बनी रहती है, तो यह केवल सत्ता परिवर्तन तक सीमित प्रक्रिया बनकर रह जाएगी। भाजपा ने अपने चुनावी अभियान में राजनीतिक हिंसा को समाप्त करने का वादा किया था। ऐसे में उस पर यह जिम्मेदारी और दबाव स्वाभाविक रूप से बढ़ जाता है कि वह राज्य की राजनीतिक संस्कृति में सकारात्मक बदलाव लाए। दरअसल किसी भी राज्य के विकास की दिशा काफी हद तक उसकी राजनीतिक संस्कृति पर निर्भर करती है। यदि माहौल भय, हिंसा और अविश्वास से भरा हो, तो विकास की गति प्रभावित होती है। अब देखने वाली बात यह होगी कि क्या बंगाल की राजनीति एक अधिक शांत, संवादपरक और लोकतांत्रिक दिशा में आगे बढ़ती है या नहीं। यह भी महत्वपूर्ण है कि केंद्र में सत्तारूढ़ दल होने के कारण भाजपा के पास संसाधन और अवसर अधिक हैं, जिनका उपयोग वह सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए कर सकती है।

मुकेश कुमार मनन, पटना

खतरे में उपभोक्ताओं की सुरक्षा

गर्मियों के आगमन के साथ आग लगने की घटनाओं में तेजी आना चिंताजनक है। विशेष रूप से एसी ब्लास्ट और शार्ट सर्किट जैसी घटनाएं बार-बार सामने आ रही हैं, जिनसे जान-माल का भारी नुकसान हो रहा है। बिजली उपकरणों की घटती गुणवत्ता और सुरक्षा मानकों की अनदेखी का परिणाम है। इस स्थिति का मुख्य कारण निम्न गुणवत्ता वाले उत्पादों का निर्माण और उनका बिना पर्याप्त जांच के बाजार में आना है। नियम-कानून मौजूद होने के बावजूद उनका प्रभावी क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा है। इससे उपभोक्ताओं की सुरक्षा खतरे में पड़ रही है। आवश्यकता है कि गुणवत्ता मानकों का सख्ती से पालन सुनिश्चित किया जाए, संबंधित संस्थाएं अधिक सक्रिय हों और कंपनियों की जवाबदेही तय की जाए। आम लोगों को भी बिजली उपकरणों के उपयोग में सावधानी बरतनी चाहिए।

हिमांशु शेखर, केसपा, गयाजी

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :

दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : response@jagran.com

संस्थापक- स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा-201309 से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

राष्ट्रीय संस्करण www.jagran.com
दैनिक जागरण
मंगलवार, 5 मई, 2026

16.8 प्रतिशत वोट शेयर रहा था भाजपा का वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में बंगाल में, जबकि वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में यहां इस पार्टी का वोट शेयर 40 प्रतिशत से भी अधिक रहा और 18 सीटें जीतने में कामयाब रही।

आजकल

प्रो. कुंवर प्रांजल सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

बंगाल की राजनीति का नवीन ध्रुवीकरण

बंगाल विधानसभा चुनाव परिणाम में भारतीय जनता पार्टी को लगभग दो-तिहाई बहुमत प्राप्त हुआ है। थोड़ा पीछे चलें तो स्वतंत्रता के बाद से बंगाल की राजनीति लंबे समय तक कांग्रेस के प्रभाव में रही, किंतु 1977 से वाम मोर्चे ने लगभग साढ़े तीन दशकों तक सत्ता कायम रखी। वर्ष 2011 में ममता बनर्जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस की सरकार बनी जिसने डेढ़ दशक तक शासन किया। परंतु दीर्घकालीन रणनीति को धैर्यपूर्वक लागू करते हुए इस बार भाजपा ने बड़ी जीत हासिल की है

बंगाल के मतदाताओं ने विधानसभा चुनाव में इस बार व्यापक परिवर्तन के पक्ष में किया मतदान। फाइल

बंगाल की राजनीति में भारतीय जनता पार्टी का उभार केवल एक चुनावी घटना नहीं, बल्कि राज्य की दीर्घकालिक सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक संरचनाओं में आए परिवर्तन का परिणाम है। वाम शासन ने ग्रामीण समाज में गहरी पैठ बनाई, परंतु समय के साथ संगठनात्मक जड़ता, औद्योगिक ठहराव और राजनीतिक हिंसा के आरोपों ने उसकी वैधता को कमजोर किया। वर्ष 2011 में ममता बनर्जी के नेतृत्व में आल इंडिया तृणमूल कांग्रेस ने 'परिवर्तन' के नारे के साथ वामपंथी वर्चस्व को समाप्त किया। किंतु तृणमूल के उदय के साथ ही बंगाल की राजनीति में पहचान, क्षेत्रीय अस्मिता और कल्याणकारी राष्ट्रवाद का नया मिश्रण उभरा, जिसने भाजपा के लिए वैकल्पिक राजनीतिक स्थान तैयार किया।

भाजपा का बंगाल में प्रारंभिक आधार अत्यंत सीमित था। 1980 और 1990 के दौर में पार्टी मुख्यतः शहरी उच्चवर्गीय हिंदू मतदाताओं तक सीमित रही। साथ ही बंगाल के हिंदू व्यापारियों के बीच भाजपा हमेशा से लोकप्रिय रही है। वर्ष 2014 के बाद भाजपा ने बंगाल को वैचारिक और चुनावी विस्तार के प्रमुख क्षेत्र के रूप में देखा। इस रणनीति के पीछे कई कारण थे- पहला, वामपंथ के पतन से उत्पन्न विपक्षी रिक्तता, दूसरा, तृणमूल के भीतर भ्रष्टाचार, 'कट मनी' और स्थानीय स्तर की हिंसा के आरोप, तीसरा, सीमावर्ती जिलों में अवैध प्रवासन और नागरिकता के प्रश्न को हिंदुत्व राजनीति से जोड़ना। भाजपा ने विशेष रूप से उत्तर बंगाल, जंगलमहल और मतुआ समुदाय जैसे सामाजिक समूहों में अपनी पकड़ मजबूत की। नागरिक संशोधन अधिनियम तथा राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर जैसे मुद्दों ने बंगाली अस्मिता को धार्मिक पहचान आधारित ध्रुवीकरण को तीव्र किया।

ऐतिहासिक अवलोकन : ऐतिहासिक रूप से बंगाल पुनर्जागरण, भद्रलोक संस्कृति और पंथनिरपेक्ष बौद्धिकता का केंद्र माना जाता रहा है, लेकिन लंबे समय से वाम दलों के रहने से बंगाल की यह छवि धीरे-धीरे राजनीतिक हिंसा में बदल गई। ममता के एक धर्म के प्रति विशेष आग्रह अपने आप में सांप्रदायिक राजनीति का वाहक बन गया। इसलिए भाजपा ने यहां अपनी रणनीति को केवल उत्तर भारतीय शैली के हिंदुत्व तक सीमित नहीं रखा। पार्टी ने श्यामा प्रसाद मुखर्जी, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के बंगाली प्रतीकों के माध्यम से स्थानीय वैधता अर्जित करने का प्रयास किया। इस प्रक्रिया में भाजपा ने धार्मिक पहचान को क्षेत्रीय अस्मिता के साथ जोड़ते हुए यह स्थापित करने की कोशिश की कि बंगाल की सांस्कृतिक विरासत हिंदू सभ्यता से पृथक नहीं है।

संगठनात्मक तैयारी : राजनीतिक दृष्टि से बंगाल में भाजपा की वृद्धि भारतीय संघवाद में एक बड़े परिवर्तन का हिस्सा भी है, जहां राष्ट्रीय दल क्षेत्रीय शक्तियों के गढ़ में प्रवेश कर रहे हैं। बंगाल में यह संघर्ष केवल चुनावी सत्ता का नहीं, बल्कि राष्ट्रवाद बनाम क्षेत्रीयतावाद, हिंदुत्व बनाम बंगाली उप-राष्ट्रीयता और कल्याणकारी लोकलुभावनवाद बनाम केंद्रीकृत विकास माडल के बीच वैचारिक प्रतिस्पर्धा का रूप ले चुका है। बंगाल में भाजपा की बढ़ती भूमिका राज्य की सामाजिक संरचना, धार्मिक ध्रुवीकरण, सीमावर्ती भू-राजनीति और वामपंथोत्तर राजनीतिक रिक्तता की संयुक्त उपज है। भाजपा की सफलता इस बात पर निर्भर है कि वह बंगाल की विशिष्ट सांस्कृतिक-भाषायी पहचान के भीतर अपने राष्ट्रवादी भाव को स्थानीय रूप दे सकी है। दूसरी ओर, यह उभार बंगाल की उस ऐतिहासिक राजनीति को भी पुनर्परिभाषित कर रहा है जो कभी वर्ग-संघर्ष और सांस्कृतिक उदारवाद के लिए जानी जाती थी और अब अधिकाधिक पहचान-आधारित प्रतिस्पर्धा की ओर बढ़ रही है।

वहीं भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संगठनात्मक तैयारी भी इस चुनाव के परिणाम के लिए महत्वपूर्ण साबित हुई। जहां भाजपा और संघ के कार्यकर्ताओं ने राज्य के 294 निर्वाचन क्षेत्रों में से लगभग 250 में करीब 1.75 लाख 'मतदाता जागरूकता' बैठकों का आयोजन किया जो एक व्यापक संगठनात्मक प्रयास को दर्शाता है। इन बैठकों का उद्देश्य केवल मतदान के लिए प्रेरित करना नहीं, बल्कि एक विशेष प्रकार की वैचारिक चेतना जिसे 'जागरण' कहा जा रहा है, उसे समाज के भीतर स्थापित करना है। यह जागरण अभियान खासतौर पर प्रत्येक समुदाय के भीतर एक साझा पहचान और कर्तव्यबोध को विकसित करने पर केंद्रित है, जिससे चुनावी समर्थन को वैचारिक आधार भी मिल सके।

इस अभियान को गति देने वाले कुछ महत्वपूर्ण कारक भी सामने आते हैं। पहला, यह चुनाव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के साथ मेल खाता है, जिसके कारण संगठन ने अपने विस्तार और सक्रियता को विशेष रूप से बढ़ाया है। इस दौरान हजारों स्वयंसेवकों ने राज्य के विभिन्न हिस्सों में पहुंचकर लोगों से सीधे संपर्क स्थापित किया है। जो कार्यकर्ता पहले निष्क्रिय हो चुके थे, उन्हें भी पुनः सक्रिय किया गया है, जिससे संगठनात्मक ऊर्जा और पहुंच दोनों में वृद्धि हुई है। इसके साथ ही, संपर्क का एक व्यवस्थित नेटवर्क भी तैयार किया गया। स्वयंसेवक घर-घर जाकर लोगों के संपर्क विवरण एकत्र कर रहे हैं और नियमित संवाद बनाए रख रहे हैं। कई क्षेत्रों में इंटरनेट मीडिया समूह बनाए गए हैं, जिनके माध्यम से चुनाव संबंधी जानकारियों का प्रसार किया गया। इस तरह डिजिटल और जमीनी स्तर की रणनीतियों का व्यापक और बहुस्तरीय अभियान का निर्माण करता है।

नवीन परिदृश्य : बंगाल के नवीन चुनावी परिदृश्य में भाजपा की बढ़ती उपस्थिति सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं को एक संगठित रूप देने की संभावना भी प्रस्तुत करती है। भाजपा यहां अपनी स्थिति को सुदृढ़ करती है, तो वह स्थानीय समाज में पहले से मौजूद धार्मिक, जातीय और सामुदायिक पहचानों को एक व्यापक वैचारिक ढांचे, विशेषकर राष्ट्रवाद के भीतर समाहित करने की कोशिश करेगी। यह प्रक्रिया विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं, स्वयंसेवी नेटवर्क और शैक्षिक-सामाजिक मंचों के माध्यम से संचालित होगी, जिससे सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं को एक साझा वैचारिक दिशा दी जा सके।

इस संदर्भ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे संगठनों की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो सकती है, जो लंबे समय से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के आधार पर समाज में अपनी जड़ें मजबूत करते रहे हैं। परिणामस्वरूप, बंगाल की पारंपरिक सांस्कृतिक पहचान जो अब तक क्षेत्रीयता और भाषाई अस्मिता पर आधारित रही है, उसे एक नए राष्ट्रीय-सांस्कृतिक विमर्श के साथ जोड़ा जा सकता है, जिससे सामाजिक एकीकरण के साथ-साथ एक प्रकार का वैचारिक पुनर्गठन भी देखने को मिलेगा। हालांकि, यह प्रक्रिया पूरी तरह एकरेखीय नहीं होगी, क्योंकि स्थानीय अस्मिता, ऐतिहासिक चेतना और क्षेत्रीय गौरव भी इस नए संगठनात्मक प्रयास के साथ अंतःक्रिया करते हुए नए प्रकार के

दीर्घकालीन रणनीति से संभव हुई सफलता

बंगाल में भाजपा की बढ़त को समझने के लिए 2014 लोकसभा, 2016 विधानसभा, 2019 लोकसभा और 2021 विधानसभा चुनावों का तुलनात्मक अध्ययन सबसे महत्वपूर्ण है। आंकड़े स्पष्ट बताते हैं कि भाजपा का उभार एक क्रमिक, लेकिन क्षेत्रीय रूप से केंद्रित राजनीतिक विस्तार था। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा बंगाल में परिधीय शक्ति थी। उसे केवल दो सीटें मिलीं, लेकिन उसका वोट शेयर लगभग 16.8 प्रतिशत तक पहुंच गया, जो पहले की तुलना में बड़ा उछाल था।

भाजपा के लिए उस समय यह एक बड़ी उपलब्धि थी। इसी चुनाव में तृणमूल कांग्रेस 34 सीटों के साथ प्रभुत्व में रही। यह चरण भाजपा के लिए संगठनात्मक आधार निर्माण का था। यह स्थिति उत्तर बंगाल और सीमावर्ती जिलों में विशेष रूप से शामिल थी। वर्ष 2014 में भाजपा का वोट प्रतिशत भले सीमित था, लेकिन यह वामपंथ के क्षरण से पैदा हुए रिक्त स्थान का संकेत था। वर्ष 2016 के विधानसभा चुनाव में भाजपा अभी भी सीटों के स्तर पर कमजोर रही, परंतु उसका वोट शेयर लगभग 10 प्रतिशत के आसपास पहुंचना महत्वपूर्ण था।

यह चुनाव भाजपा के लिए सत्ता का नहीं, बल्कि बूथ विस्तार और कैडर नेटवर्क का था। पार्टी को अपेक्षाकृत अधिक समर्थन उत्तर बंगाल, आदिवासी बहुल झाड़ग्राम, पुरुलिया, बांकुड़ा और शहरी क्षेत्रों जैसे आसनसोल-दुर्गापुर बेल्ट में मिला। इस दौर में भाजपा ने वाम समर्थकों के असंतोष और कांग्रेस-वाम गठबंधन की सीमाओं का लाभ उठाना शुरू किया। वर्ष 2019 लोकसभा चुनाव भाजपा के लिए निर्णायक मोड़ साबित हुआ। पार्टी ने 18 सीटें जीतीं, 2014 की तुलना में 16 सीटों की वृद्धि और उसका वोट शेयर लगभग 40.3 प्रतिशत तक पहुंच गया, जबकि तृणमूल 22 सीटों पर सिमट गई। यह केवल वोट वृद्धि नहीं थी, बल्कि क्षेत्रीय विस्तार था।

भारतीय जनता पार्टी ने उत्तर बंगाल (कूचबिहार, अलीपुरद्वार, रायगंज), जंगलमहल (पुरुलिया, बिष्णुपुर), औद्योगिक क्षेत्र (आसनसोल) और मतुआ प्रभाव वाले दक्षिण बंगाल क्षेत्रों में बड़ी बढ़त दर्ज की। कूचबिहार जैसी सीट पर भाजपा का वोट शेयर 2014 के लगभग 16.5 प्रतिशत से बढ़कर 2019 में लगभग 48 प्रतिशत तक पहुंच गया। यह दर्शाता है कि सीमावर्ती सुरक्षा, नागरिकता संशोधन कानून और हिंदू शरणार्थी राजनीति ने

खरी-खरी

सही आदमी का सही पार्टी में जाना

ऋषभ जैन

उन्होंने दल बदलते हुए कहा कि वह आदमी तो सही हैं, लेकिन गलत पार्टी में थे। मुझे अच्छा नहीं लगा। स्वयं की प्रशंसा हमारी संस्कृति नहीं है। दूसरों को गलत कहना भी हमारी संस्कृति के विपरीत है। दल-बदल सरीखे सांस्कृतिक कार्य का क्रियान्वयन करते समय असांस्कृतिक बातें कहने से बचना चाहिए था।

दरअसल दल बदलना एक मुश्किल काम है। इसे अंजाम देने के बाद वक्तव्य देना और भी ज्यादा मुश्किल है। यदि वह यह कहते कि वह गलत आदमी हैं जो गलत पार्टी में थे तो कुछ डीसेंट लग सकता था, लेकिन जिस पार्टी में जा रहे हैं उससे सवाल किए जाते कि आप गलत आदमी को ले ही क्यों रहे हैं। सर्वोत्तम तो यह होता कि वे स्वयं को गलत और परायी पार्टी को अच्छा कहते। उनकी तुलना गांधी जी से की जाती। आधुनिक राजनीति में गांधी जैसा होना कौन चाहता है? वह इतना तो कर ही सकते थे कि स्वयं को अच्छा कह देते, जिसमें जा रहे हैं उस पार्टी को भी अच्छा कह देते, पर जिसे छोड़ रहे हैं उसे भी बुरा नहीं कहते।

कहते कि- मैं अच्छा आदमी अच्छी पार्टी में था, अब और भी अधिक अच्छी पार्टी में जा रहा हूं। यह वक्तव्य सांस्कृतिक हिसाब से बेहतर होता। पालिटिकली भी करेक्ट होता। तब लोग यह सवाल नहीं उछाल पाते कि महोदय इतने दिनों से गलत पार्टी में क्या कर रहे थे।

वैसे तो दल-बदल करते समय कोई सफाई देने की जरूरत ही नहीं होनी चाहिए। दूसरी पार्टी अच्छी लगी तो चले गए। दल बदलना मानव स्वभाव है। दल बदलाव इंसान की बायोलाजिकल आवश्यकता है। ओशो कहते थे आवश्यकताओं का दमन करना घातक होता है। दल-बदल प्रवृत्ति का दमन किया गया। पहले यदा-कदा इक्का-दुक्का नेता दल बदल करते थे। इसके खिलाफ कानून बनाया गया। परिणाम यह हुआ कि अब दो-तिहाई लोग दल बदलते हैं।

लोकतंत्र में बहुमत का महत्व है भी। दल-बदल इतना स्वाभाविक है कि इसे करते नेता से सफाई की अपेक्षा रखनी भी नहीं चाहिए। स्वाभाविक कर्म करते हुए भी सफाई देनी पड़े तो मुश्किल होगा ही।

पोस्ट

मुझे सबसे ज्यादा खुशी तमिलनाडु के नतीजे से हुई। जब भी मैं उन राजनीतिक वंशवादियों की हार देखती हूं, जिन्होंने राज्यों को अपनी जागीर बना लिया है, तो मेरे मन में आशा का संचार होता है।
तवलीन सिंह@tavleen_singh

ममता बनर्जी कल ही चुनाव नहीं हारीं। वे उसी दिन हार गई थीं, जब टीएमसी की भीड़ ने आरजी कर अस्पताल में एक डाक्टर के साथ हुए दुष्कर्म और हत्या के महत्वपूर्ण साक्ष्यों को नष्ट कर दिया था। यह सबसे उपयुक्त बदला है कि एक दुखी मां ने राजनीति में प्रवेश किया और खुद टीएमसी को हराने में मदद की।
अमित थड़ाणी@amitsur

भाजपा भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर हावी हो रही है। देश के दूसरे सबसे बड़े समुदाय के लिए भाजपा के साथ मिलकर काम करना बुद्धिमानी भरा होगा, पर वह ऐसा नहीं करेगा। टकराव भरे, शत्रुतापूर्ण रवैये के साथ उसकी राजनीतिक युद्ध छेड़ने की मानसिकता ही रहेगी। मुसलमानों के एक बड़े तबके की इस मूर्खता के कारण आरफा खानम जैसे लोग आनंद लेते रहेंगे।
खालिद बेग@KhalidBaig85

छत्तीसगढ़ डायरी

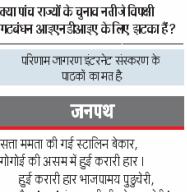

सतीश चंद्र श्रीवास्तव
संपादकीय प्रभारी, रायपुर

जेठ की झुलसाती गर्मी में सुशासन तिहार

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में 'संवाद से समाधान' तक के ध्येय वाक्य के साथ सुशासन तिहार (त्योहार) एक बार फिर शुरू हो चुका है। जेठ की गर्मी पिछले कई वर्षों का रिकार्ड तोड़ रही है। राजनांदगांव तो एक दिन 45.5 डिग्री सेल्सियस तापमान के साथ पूरे विश्व में सबसे गर्म जिला रहा। इन परिस्थितियों के बीच एक मई से शुरू हुआ अभियान 10 जून तक जारी रहेगा। गांवों और शहर में वार्ड स्तर पर समाधान शिविरों के आयोजन हो रहे हैं। इसमें शीर्ष प्रशासनिक अधिकारी भी मौके पर उपस्थित रह रहे हैं।

पिछले वर्ष का अनुभव तो यही बताता है कि मुख्य सचिव से लेकर पंचायत सचिव तक की उपस्थिति में आम जनता की शिकायत पर चर्चा, समाधान और कार्रवाई हुई। सभी विभागों के अधिकारी और कर्मचारी जनता की अदालत में प्रस्तुत रहे। अप्रैल व जून में लगभग 12 लाख आवेदनों पर सुनवाई के बाद जुलाई तक 100 से अधिक स्थानांतरणों और कार्रवाइयों ने मुख्यमंत्री की 'शून्य सहिष्णुता' नीति पर मुहर ही लगाई। इस बार मुख्यमंत्री ने शनिवार को बेमेतरा जिले में नवनिर्मित सीमेंट कंक्रीट (सीसी) रोड की गुणवत्ता की शिकायत मिलने पर सीधे जिलाधिकारी से रिपोर्ट मांगकर आने वाले दिनों के संकेत भी दे दिए हैं। जिले में सभी कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए हैं। अब तक इतना तो स्पष्ट है कि सरकार चाहे तो समस्याओं का समाधान त्वरित और पारदर्शी तरीके से संभव है।

इन सबके बीच 16वीं-17वीं सदी में किसानों के मार्गदर्शक कवि घाघ की एक कविता-कहावत आज भी प्रशासनिक व्यवस्था पर सटीक बैठती है तथा प्रासंगिक भी है : चाहे तो मिनट न लावे, न चाहे तो वर्षों लटकावे! के सखी साजन! ना सखी सरकार!!

जशपुर में लोगों की समस्याएं सुनकर समाधान के प्रयास में जुटे विष्णु देव साय। डीपीआर

प्रदेश में 'मौके पर ही समाधान' की व्यवस्था उत्साह बढ़ाने वाली है तो प्रश्न भी खड़े हैं कि बाबुओं के टेबल की फाइलें कंप्यूटरीकृत हो गई हैं तो उन्हें समयबद्धता और गति देने के लिए मुख्यमंत्री को कब तक हस्तक्षेप करते रहना पड़ेगा। सुशासन तिहार में उम्मीद की जा सकती है कि इस वर्ष भी राशन कार्ड, वनाधिकार पट्टा, पेंशन, बिजली बिल, जलापूर्ति, आवास योजना, नामांतरण, आयुष्मान, आय व जाति प्रमाण पत्र जैसी समस्याओं का समाधान एक सप्ताह के अंदर हो जाएंगे और कई गांवों में पहली बार अधिकारी पहुंचेंगे। निश्चित तौर पर फालोअप की व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है।

सरकार का दावा है कि सुशासन तिहार का उद्देश्य जनता की समस्याओं को मौके पर जाकर सीधे सुनना-समझना और जल्दी समाधान करना है। इसके कई लाभ भी सामने आए। अप्रैल में शुरू हुई प्रक्रिया के तहत अधिकारियों ने शहर से लेकर गांव तक में छोटे-छोटे शिविरों का आयोजन कर मौके पर ही आवेदन लिए और समय सीमा के अंदर समस्याओं का निदान किया। प्रक्रिया अभी भी जारी है तथा अधिकारियों के सीधे जनता के बीच पहुंचने के कारण काम में पारदर्शिता बढ़ने के साथ लापरवाहियों के कम होने की भी उम्मीद है। इन शिविरों का सर्वाधिक लाभ सरगुजा और बस्तर के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को हो रहा है। जमीनी स्तर पर सत्यापन और सुधार संभव हो सका है। यह माना जा रहा है कि जनता के बीच शीर्ष नेतृत्व के सीधे पहुंचने के कारण बिचौलियों की भूमिका कम हो रही है। यद्यपि कुछ लोग इन्हें नौकरशाही में फंसने वाली फाइलों को गति देने वाले एजेंट या सर्विस प्रोवाइडर के नाम से भी बुलाते रहे हैं।

हालांकि पिछले वर्ष भी कई स्थानों पर अधिकारियों ने सिर्फ औपचारिकता का निर्वहन किया और शिकायतों का स्थायी समाधान भी नहीं हो सका। सुशासन तिहार समाप्त होते ही फिर पूर्व जैसी स्थिति बन गई। मुख्यमंत्री के पसीना बहाने का वास्तविक लाभ या सफलता इन समाधानों के स्थायी और नियमित प्रशासनिक व्यवहार व सुधार के रूप में परिणत होने में ही है।

इस वर्ष मुख्यमंत्री के दिशानिर्देश में गठित टीम पूरी प्रक्रिया पर निगरानी रख रही है। ग्रामीणों के लिए पंचायतों और शहरों के वार्डों में पुराने और लंबित मामलों के निपटारे की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। एक महीने में समाधान का लक्ष्य रखा गया है। शिविर में ही लाभ पहुंचाने का प्रयास किया जाना है। इसके लिए सरकारी कर्मचारियों की छुट्टियां भी रोकी जा चुकी हैं। यह व्यवस्था में बदलाव की प्रक्रिया भी है जिसमें शासन-प्रशासन कार्यालय तक सीमित रहने की जगह मौके पर पहुंच रहा है।

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या ग्रेट निकोबार परियोजना के विरोध का राहुल गांधी का रवैया सही है?

सभी आंकड़े प्रतिशत में

आज का सवाल

क्या पांच राज्यों के चुनाव नतीजे विपक्षी गठबंधन आइएनडीआइए के लिए झटका हैं?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है

जनपथ

सत्ता ममता की गई स्टालिन बेकार,
गोगोई की असम में हुई करारी हार।
हुई करारी हार भाजपामय पुडुचेरी,
बैठा 'वाम' गंवाय बची थी जो इक ढेरी!
जगा सनातन आज चला ना सेक्युलर पत्ता,
तप कर पंद्रह साल गई दीदी की सत्ता!!
-ओमप्रकाश तिवारी

वर्ल्ड माडल्स

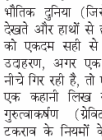

मनीश कुमार झा
तकनीकी मामलों के जानकार

एआइ से आगे का चरण

तमाम क्षेत्रों में एआइ का प्रयोग सामान्य होने के बावजूद इसकी कई सीमाएं हैं। लिहाजा इसे आगे बढ़ाने के लिए एआइ के अगले चरण के तौर पर कंपनियां तकनीकी रणनीति बना रही हैं

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) के क्षेत्र में चैटजीपीटी और जेमिनी जैसे लार्ज लैंग्वेज माडल्स (एलएलएम) ने टेक्स्ट लिखने और तस्वीरें बनाने में कामयाबी हासिल की है। लेकिन अभी ये असली भौतिक दुनिया (जिसे हम आंखों से देखते और हाथों से छूते हैं) के नियमों को एकदम सही से नहीं समझ पाते। उदाहरण, अगर एक कार चट्टान से नीचे गिर रही है, तो एलएलएम इस पर एक कहानी लिख सकते हैं, लेकिन गुरुत्वाकर्षण (ग्रेविटी), गति और टकराव के नियमों के आधार पर यह बिल्कुल सही नहीं बता सकते कि कार की रफ्तार नीचे आते हुए कैसे बढ़ेगी और जमीन से टकराने पर उसके पुर्जे असल में कैसे मुड़ेंगे और बिखरेंगे। दरअसल, ये माडल्स केवल अगला 'शब्द' अनुमान लगा सकते हैं, अगली 'भौतिक घटना' की गणना करने में ये असमर्थ हैं। चूंकि ये माडल्स चीजों के बीच के भौतिक संबंधों को गहराई से नहीं समझ पाते, इसलिए रोबोटिक्स में अनजानी चुनौतियों से निपटने या सेल्फ-ड्राइविंग कारों को अगले स्तर की सुरक्षा देने में ये अकेले अपर्याप्त साबित होते हैं।

इस भौतिक समझ की कमी को पूरा करने के लिए 'ओपनएआइ', 'गूगल' और 'टेस्ला' जैसी कंपनियों के शोधकर्ता 'वर्ल्ड माडल्स' नामक तकनीक विकसित कर रहे हैं, जिसका उद्देश्य कंप्यूटर के अंदर दिखावटी वीडियो गेम बनाना नहीं, बल्कि ऐसा थ्रीडी 'इंटरनल मैप' (कंप्यूटर का अंदरूनी नक्शा) तैयार करना है, जो वास्तविकता की तरह ही काम करे। इस नक्शे में एआइ यह नहीं भूलता कि 'दीवार के पीछे जाने पर कोई वस्तु गायब नहीं होती' (कंसिस्टेंट) और समझता है कि 'अगर किसी वस्तु को धक्का दिया जाए तो उसका भौतिक परिणाम क्या होगा' (इंटरैक्टिव)। मतलब चीजों का गिरना-चलना और टकराना (गुरुत्वाकर्षण या फिजिकल-लाज) बिल्कुल वैसे ही होता है जैसे असली दुनिया में होता है। इसका फायदा यह है कि जब कोई रोबोट असली दुनिया में कोई काम करेगा, तो एआइ पहले से ही बिल्कुल सही बता देगा कि उस काम के करने पर आगे क्या नतीजा हो सकता है।

दरअसल 'वर्ल्ड माडल' एआइ तकनीक कंप्यूटर पर ऐसी वर्चुअल दुनिया बनाते हैं जो वीडियो गेम की तरह होती है, जिसमें आप इधर-उधर घूम सकते हैं (एक्सप्लोरेबल), चीजों को छूकर बदल सकते हैं (इंटरैक्टिव) और जहां हर चीज अपना असली रूप बनाए रखती है (कंसिस्टेंट)। ये असली दुनिया के भौतिक नियमों को समझते हैं: जैसे, यदि आप स्क्रीन पर टेबल पर पड़ी किसी चीज को धक्का दें, तो यह एआइ तकनीक स्वयं समझ लेता है कि गुरुत्वाकर्षण के कारण वह वस्तु नीचे गिरेगी, न कि हवा में तैरेगी।

इसका उदाहरण 'गूगल डीपमाइंड' का 'जेनी-3' है, जो आपके कुछ लिखे हुए शब्दों पर स्क्रीन पर असली जैसा माहौल तैयार कर देता है जिसमें आप स्वयं को घूमकर देख सकते हैं। इसी तरह, 'रनवे' कंपनी का माडल आपकी आवाज सुनकर या कैमरे को घुमाने पर स्क्रीन की दुनिया को आपके हिसाब से कंट्रोल करता है। वहीं, 'एनवीडिया' कंपनी इस तकनीक का इस्तेमाल रोबोटों और सेल्फ-ड्राइविंग कारों को असली सड़क के हालात सिखाने के लिए कर रही हैं। ये उदाहरण बताते हैं कि तमाम कंपनियां अब एआइ को केवल चैटबाट बनाने से आगे बढ़कर असली दुनिया को समझने वाली तकनीक बनाने में जुट गई हैं।

इन वर्ल्ड माडल्स को सिखाने के लिए उन्हें असली दुनिया के हजारों घंटों के वीडियो और कंप्यूटर पर बनाए गए नकली वातावरण (सिमुलेशन) दिखाए जाते हैं, ताकि वे यह धीरे-धीरे सीख सकें कि चीजें असल में कैसे गिरती हैं, कैसे टकराती हैं और कैसे आगे बढ़ती हैं। एआइ विज्ञानियों का साफ मानना है कि केवल शब्दों का अनुमान लगाने वाले एलएलएम से कोई मशीन असली तरीके से समझदार नहीं बन सकती। एआइ को सच में तब ताकत मिलेगी जब वो असली दुनिया के भौतिक नियमों को समझने लगेगा।

इसी सोच ने वर्ल्ड माडल एआइ तकनीक को एक खास क्षमता दी है- एक्शन टेकिंग यानी स्वयं कोई काम करने और उसका असल नतीजा देखने की क्षमता। जैसे, अगर सेल्फ-ड्राइविंग कार या रोबोट को सिखाना है कि अचानक सामने कोई रुकावट आ जाए तो क्या करना है, तो असली सड़क पर यह टेस्ट करना धीमा हो सकता है। लेकिन 'जेनी-3' जैसे 'वर्ल्ड माडल' चंद सेकेंड में लाखों खतरनाक परिस्थितियों के वीडियो, जैसे तेज बारिश में अचानक कोई इंसान सामने आ जाए या रात के अंधेरे में गाड़ी के आगे कोई वस्तुत आ जाए आदि बनाकर कार के दिमाग को बिना किसी असली नुकसान के पूरी तरह प्रशिक्षित कर सकते हैं।

प्रतीकात्मक

हालांकि, इस तकनीक को अभी पूरी तरह निखारना बाकी है। मुश्किल यह है कि ये सिस्टम कुछ देर तक तो एकदम असली जैसा वातावरण दिखा पाते हैं, लेकिन जैसे ही समय बढ़ता है, भौतिक नियम टूटने लगते हैं। इसे सही रखने के लिए बहुत अधिक महंगे और ताकतवर कंप्यूटर की जरूरत पड़ती है। फिर भी, गूगल और एनवीडिया जैसी कई दिग्गज कंपनियां आज इसमें अरबों रुपये का निवेश कर रही हैं, क्योंकि उन्हें विश्वास है कि वर्ल्ड माडल्स ही वह आखिरी सीढ़ी है जो एआइ को एक साधारण चैटबाट से निकालकर इंसान जैसी सोचने वाली ताकत (एजीआइ) तक पहुंचा सकते हैं।

गोदरेज प्रापर्टीज का शुद्ध लाभ 70 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली : रियल एस्टेट फर्म गोदरेज प्रापर्टीज ने सोमवार को बताया कि बीते वित्त वर्ष की चौथी तिमाही (जनवरी-मार्च 2026) में उसका शुद्ध लाभ 70 प्रतिशत घटकर 649.88 करोड़ रुपये रहा है। इसमें घरों की मजबूत मांग के बीच उच्च आय का प्रमुख योगदान रहा है। पिछले वर्ष समान अवधि में कंपनी को 381.99 करोड़ रुपये का लाभ हुआ था। पूरे वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान कंपनी का शुद्ध लाभ बढ़कर 1,850.20 करोड़ रुपये रहा है। (प्रेट्र)

भारत को ऊर्जा, भोजन, उर्वरक, धातु और महत्वपूर्ण खनिजों जैसे क्षेत्रों में प्रमुख आर्थिक कमजोरियों की पहचान और निगरानी करनी चाहिए ताकि भविष्य में पश्चिम एशिया जैसे संकट का प्रभाव कम किया जा सके।

- एस. महेंद्र देव, पीएम की आर्थिक सलाहकार परिषद के चेयरमैन

संसेक्स	77,269.40	▲ 355.90	
निफ्टी	24,119.30	▲ 121.75	
सोना (प्रति दस ग्राम)	₹ 1,52,800	▼ ₹ 2,000	
चांदी (प्रति किलो ग्राम)	₹ 2,49,500	▲ ₹ 6,800	
डालर	₹ 95.23	▼ ₹ 0.39	
क्रूड (प्रति बैरल)	$ 109.8		

एक नजर में

बीती तिमाही में भेल को 1,290 करोड़ का लाभ

नई दिल्ली: सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी भेल ने सोमवार को बताया कि जनवरी-मार्च 2026 तिमाही में उसका शुद्ध लाभ 2.5 गुना बढ़कर 1,290.47 करोड़ रुपये रहा है। इसमें बिजली क्षेत्र के राजस्व में वृद्धि का प्रमुख योगदान रहा है। पिछले वर्ष समान अवधि में कंपनी को 504.45 करोड़ रुपये का लाभ हुआ था। बीते वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान कंपनी का कुल लाभ 1,600.26 करोड़ रुपये रहा है, जो इससे पिछले वित्त वर्ष में 533.90 करोड़ रुपये था। कंपनी बोर्ड ने 1.40 रुपये प्रति शेयर के लाभांश को मंजूरी दी है। (प्रेट्र)

अप्रैल में बजाज आटो की बिक्री 40 प्रतिशत बढ़ी

नई दिल्ली: दोपहिया-तिपहिया निर्माता बजाज आटो ने सोमवार को बताया कि अप्रैल में उसकी कुल बिक्री 40 प्रतिशत बढ़कर 5,13,792 इकाई रही है। अप्रैल 2025 में कंपनी की कुल वाहन बिक्री 3,65,810 इकाई रही थी। कंपनी ने बताया कि पिछले महीने उसकी घरेलू बिक्री 13 प्रतिशत बढ़कर 2,48,210 इकाई रही है, जबकि निर्यात 83 प्रतिशत बढ़र 2,65,582 इकाई रहा है। घरेलू बाजार में दोपहिया की बिक्री 11 प्रतिशत बढ़कर 2,10,063 इकाई और निर्यात 78 प्रतिशत बढ़कर 2,29,890 इकाई रहा है। (प्रेट्र)

अप्रैल में यूपीआइ के जरिये 22.35 अरब लेनदेन

नई दिल्ली: वित्तीय सेवा विभाग ने सोमवार को बताया कि अप्रैल में यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआइ) के जरिये कुल 22.35 अरब लेनदेन हुए हैं। इसमें अप्रैल 2025 के 17.89 अरब के मुकाबले 25 प्रतिशत की वृद्धि रही है। इसी वर्ष मार्च में रिकार्ड 22.64 करोड़ यूपीआइ लेनदेन हुए थे। विभाग ने एक एक्स पोस्ट में कहा कि भारत में होने वाले सभी डिजिटल लेन-देन में यूपीआइ की हिस्सेदारी लगभग 85 प्रतिशत है और यह दुनियाभर में होने वाले लगभग 50 प्रतिशत रियल-टाइम डिजिटल भुगतानों को संचालित करता है। (प्रेट्र)

अप्रैल में भी एलपीजी की खपत 16 प्रतिशत घटी

ईरान युद्ध के कारण आपूर्ति संबंधी बाधाओं से पिछले महीने कुकिंग गैस की खपत 22 लाख टन रही

नई दिल्ली, प्रेट्र: ईरान युद्ध के कारण आपूर्ति बाधाओं में आई रुकावटों के चलते अप्रैल में भी कुकिंग गैस या एलपीजी की खपत में वार्षिक आधार पर 16 प्रतिशत की भारी गिरावट आई है। तेल मंत्रालय के अधीन पेट्रोलियम प्लानिंग एंड एनालिसिस सेल (पीपीएसी) के आंकड़ों के अनुसार, पिछले महीने एलपीजी की खपत घटकर 22 लाख टन रही है, जो अप्रैल 2025 में 26.2 लाख टन थी। इसी वर्ष मार्च में भी एलपीजी की खपत 13 प्रतिशत घटकर 23.79 लाख टन रही थी।

भारत अपनी जरूरत की करीब 60 प्रतिशत एलपीजी आयात करता है। इसका ज्यादातर हिस्सा होर्मुज जलडमरूमध्य के रास्ते आता है। अमेरिका और इजरायल द्वारा ईरान पर किए गए हमलों और उसके जवाब में तेहरान की जवाबी कार्रवाई के बाद यह रास्ता लगभग बंद हो गया था। सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात से सप्लाई में रुकावट आने के कारण सरकार ने घरेलू कुकिंग गैस की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए होटलों और उद्योगों जैसे कमर्शियल संस्थानों को होने वाली आपूर्ति में कटौती कर दी है। इसके अलावा, दो रिफिल के बीच के अंतराल को बढ़ाकर घरों में होने वाली सप्लाई को भी नियंत्रित किया गया। हाल के वर्षों में एलपीजी की खपत में लगातार बढ़ोतरी हुई है। इसका मुख्य कारण सरकार द्वारा लकड़ी और अन्य प्रदूषण फैलाने वाले ईंधनों की जगह स्वच्छ विकल्पों को बढ़ावा देने के प्रयास हैं।

युद्ध के कारण कई खाड़ी देशों में हवाई क्षेत्र बंद होने और उड़ानों के स्थगित होने से अप्रैल में विमान ईंधन या एटीएफ की खपत पिछले साल की तुलना में 1.37 प्रतिशत घटकर 761,000 टन रह गई। मासिक आधार पर भी इसमें गिरावट आई और यह मार्च की बिक्री 807,000 टन से कम है।

- मार्च 2026 में एलपीजी की खपत 13 प्रतिशत घटकर 23.79 लाख टन रही थी
- पिछले महीने पेट्रोल की बिक्री 6.36 प्रतिशत बढ़कर 36.7 लाख टन पर पहुंची

पिछले महीने डीजल की बिक्री में मामूली वृद्धि

युद्ध से प्रभावित इन दो ईंधनों के अलावा पिछले महीने डीजल की बिक्री में भी नरमी देखने को मिली और केवल 0.25 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ इसकी बिक्री 82.82 लाख टन रही। मार्च में डीजल की बिक्री में 8.1 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई थी और यह 87.27 लाख टन तक पहुंच गई थी। अप्रैल में पेट्रोल की बिक्री में 6.36 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई और यह 36.7 लाख टन तक पहुंच गई। यह वृद्धि मार्च में हुई 7.6 प्रतिशत की बढ़त (जो 37.8 लाख टन थी) से कम रही।

अप्रैल में पाम तेल आयात 27 प्रतिशत घटा

मुंबई, प्रेट्र: इस वर्ष अप्रैल में पाम तेल आयात में 27 प्रतिशत की गिरावट रही है और यह एक वर्ष के निचले स्तर पर पहुंच गया है। डीलरों के अनुसार, पिछले महीने पाम तेल आयात घटकर 5.05 लाख टन रह गया है जो अप्रैल 2025 के बाद का सबसे निचला स्तर है। मार्च 2026 में 6.89 लाख टन पाम तेल का आयात किया गया था। डीलर्स का कहना है कि इस गिरावट की वजह संस्थागत खरीदारों की ओर से सुस्त मांग और हाल ही में कीमतों में आई तेजी है। इसने पाम तेल को अन्य प्रतिस्पर्धी तेलों के मुकाबले मिलने वाली छूट को कम कर दिया और रिफाइनरों ने इसकी खरीद में कटौती कर दी। अप्रैल में सोयाबीन तेल का आयात मासिक आधार पर 24 प्रतिशत बढ़कर 355,000 टन हो गया, जो चार महीनों में सबसे अधिक है। सूरजमुखी तेल का आयात दोगुना से भी अधिक बढ़कर 4.35 लाख टन रहा है, जो 22 महीनों में सबसे अधिक है। अनुमान के अनुसार, अप्रैल में कुल खाद्य तेल आयात मासिक आधार पर 10.4 प्रतिशत बढ़कर 13 लाख टन रहा है, जो जनवरी 2026 के बाद सबसे अधिक है।

चालू वित्त वर्ष में बजट आवंटन से ज्यादा होगा उर्वरक सब्सिडी बिल

नई दिल्ली, प्रेट्र: चालू वित्त वर्ष 2026-27 के लिए सरकार का उर्वरक सब्सिडी बिल 1.71 लाख करोड़ रुपये के बजटीय आवंटन से ज्यादा हो सकता है। इसकी वजह पश्चिम एशिया में चल रहे संकट के कारण आयातित यूरिया और दूसरे उर्वरकों की बढ़ती कीमतें हैं।

उर्वरक विभाग की अतिरिक्त सचिव अपर्णा एस शर्मा ने सोमवार को अंतर-मंत्रालयी ब्रीफिंग में कहा, 'हम जानते हैं कि कीमतें बढ़ी हैं। यूरिया और दूसरे उर्वरकों, दोनों की कीमतों में बढ़ोतरी का रुझान दिख रहा है। निश्चित रूप से सब्सिडी बिल में बढ़ोतरी होगी, लेकिन अभी हम कुछ नहीं कह सकते।' सप्लाई चेन में आई रुकावटों के बावजूद खरीफ 2026 सीजन के लिए उर्वरकों की उपलब्धता 'मजबूत और स्थिर' बनी हुई है।

बिजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

ईंधन कंपनियों को नहीं मिलेगी आर्थिक मदद

नई दिल्ली, प्रेट्र : पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में संयुक्त सचिव सुजाता शर्मा ने कहा कि तेल वितरण कंपनियों को पेट्रोल, डीजल और विमान ईंधन की बिक्री पर हो रहे नुकसान के लिए उनको मदद देने का कोई प्रस्ताव सरकार के पास नहीं है। सरकारी तेल कंपनियों इंडियन आयल कारपोरेशन, भारत पेट्रोलियम कारपोरेशन और हिंदुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन को पेट्रोल और डीजल की बिक्री पर भारी नुकसान हो रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने खुदरा दरों में बदलाव पर चार साल से लगी रोक को जारी रखा है, जबकि दो महीने पहले पश्चिम एशिया में शुरू हुए संघर्ष के बाद से कच्चे तेल की कीमतें तेज़ी से बढ़ी हैं। इसके अलावा, दो दशकों से भी ज्यादा समय में पहली बार पिछले महीने से उन्हें विमान ईंधन या एटीएफ पर भी नुकसान होने लगा है।

मैन्यूफैक्चरिंग उत्पादन में पिछले महीने रहा मामूली सुधार

नई दिल्ली, प्रेट्र: नए कारोबारी आर्डर और उत्पाद में वृद्धि के चलते पिछले महीने मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र की गतिविधियों में मामूली सुधार रहा है। हालांकि, बढ़ोतरी की दर लगभग चार वर्षों में दूसरी बार सबसे कमजोर रही है। अप्रैल में एचएसबीसी इंडिया का मैन्यूफैक्चरिंग परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआइ) 54.7 रहा है, जो इसी वर्ष मार्च में 53.9 था।

एचएसबीसी मैन्यूफैक्चरिंग पीएमआइ कुल स्थितियों का एक पैमाना है, जो नए आर्डर, उत्पादन, रोज़गार, सप्लायर डिलीवरी के समय और खरीदे गए स्टाक जैसे पैमानों से निकाला जाता है। एचएस एचएसबीसी इंडिया की मुख्य अर्थशास्त्री प्रांजुल भंडारी ने कहा कि पश्चिम एशिया संघर्ष के असर अब ज्यादा साफ तौर पर दिख रहे हैं। इनपुट लागत अगस्त 2022 के बाद से सबसे तेज गति से बढ़ी है।

चुनाव परिणामों से इंट्रा-डे में 997 अंक तक उछला सेंसेक्स

दिनभर के कारोबार के बाद 355 अंक बढ़कर बंद हुआ बीएसई सूचकांक, निफ्टी 121 अंक बढ़कर 24 हजार के पार पहुंचा

मुंबई, प्रेट्र: राज्यों में उम्मीद के अनुरूप चुनाव परिणाम रहने और बड़ी कंपनियों के शेयरों की खरीदारी की बदौलत सोमवार को बीएसई का मानक सूचकांक सेंसेक्स इंट्रा-डे में 997.25 अंक बढ़कर 77,910.75 के उच्च स्तर तक पहुंचा। हालांकि, दिनभर के कारोबार के बाद यह 355.90 अंक की वृद्धि के साथ 77,269.40 पर बंद हुआ। एनएसई का निफ्टी 121.75 अंक की बढ़त के साथ 24,119.30 पर बंद हुआ।

सेंसेक्स में अदाणी पोर्ट्स, हिंदुस्तान यूनिलीवर, रिलायंस, लार्सन एंड टूब्रो, एटरनल और मारुति में बढ़त रही। दूसरी ओर, भारती एयरटेल, कोटक महिंद्रा बैंक, टीसीएस और आइटीसी में गिरावट रही। जियोजित इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा कि निवेशकों की भावना बंगाल में अनुकूल चुनाव परिणामों और चौथी तिमाही की अपेक्षा से बेहतर आय के कारण मजबूत रही। कच्चे तेल 110 डालर प्रति बैरल से नीचे हो, जो निकट अवधि में राहत प्रदान कर रहा है।

6,800 रुपये बढ़ी चांदी

नई दिल्ली, प्रेट्र: ज्वेलर और स्टाकिस्ट की ओर से ताजा खरीदारी के कारण सोमवार को दिल्ली में चांदी की कीमत 6,800 रुपये बढ़कर 2,49,500 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई। हालांकि, सोने में दो हजार रुपये की गिरावट रही और यह 1,52,800 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया।

कमोडिटी डेरिवेटिव्स में निवेश के पक्ष में नहीं आरबीआइ-इरडा

मुंबई, प्रेट्र : सेबी चेयरमैन तुहिन कांत पांडे ने सोमवार को कहा कि बैंकिंग नियामक आरबीआइ और बीमा नियामक इरडा बैंकों और बीमा कंपनियों को कमोडिटी डेरिवेटिव्स में निवेश करने की अनुमति देने के पक्ष में नहीं हैं।

मुंबई में आइएमसी कैपिटल मार्केट कान्फ्रेंस के दौरान पांडे ने कहा कि इसके लिए आरबीआइ और इरडा के पास कुछ वैध तर्क भी हैं। उन्होंने कहा कि पेंशन नियामक पीएफआरडीए ने भी पेंशन फंड्स को कमोडिटी डेरिवेटिव्स में निवेश करने की अनुमति देने पर विचार किया था, लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया कि क्या इस पर कोई फैसला लिया गया है। पांडे ने कहा कि सेबी जल्दी ही एंथ्रोपिक के एआइ माडल माइथोस और अन्य एआइ टूल्स से पैदा होने वाले नए जोखिमों के बारे में मार्केट इंटरमीडियरीज के लिए एक एडवाइजरी जारी करेगा।

जेएएल मामले में वेदांता की याचिका खारिज

नई दिल्ली, प्रेट्र: अदाणी समूह की ओर से कर्ज में डूबी रियल एस्टेट कंपनी जयप्रकाश एसोसिएट्स लिमिटेड (जेएएल) के अधिग्रहण का रास्ता साफ हो गया है। इसका कारण यह है कि नेशनल कंपनी ला अपीलेट ट्रिब्यूनल (एनसीएलएटी) ने अदाणी समूह की बोली को चुनौती देने वाली वेदांता समूह की याचिका खारिज कर दी है। जेएएल की संपत्तियों में भारत का एकमात्र फार्मूला वन सर्किट भी शामिल है।

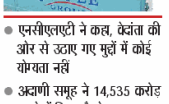

एनसीएलएटी को वेदांता की ओर से उठाए गए मुद्दों में कोई योग्यता नहीं दिखी और इसकी दो याचिकाओं को खारिज कर दिया। न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) अशोक भूषण और तकनीकी सदस्य बरुण मित्रा की एक बेंच ने कहा कि क्रेडिटर्स की समिति (सीओसी) ने अदाणी समूह की 14,535 करोड़ रुपये की बोली को वेदांता की समाधान योजना पर प्राथमिकता देने में सही निर्णय लिया है। सीओसी के फैसले को नेशनल कंपनी ला ट्रिब्यूनल (एनसीएलटी) ने मंजूरी दी थी, जिसके खिलाफ वेदांता समूह ने एनसीएलएटी ने अपील की थी। एनसीएलएटी ने कहा कि एनसीएलटी के निर्णय में हस्तक्षेप करने के लिए वेदांता द्वारा कोई आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है। याचिका में कोई योग्यता नहीं है। दोनों याचिकाएं खारिज की जाती हैं। कोई आदेश पारित नहीं किया जाएगा।

- एनसीएलएटी ने कहा, वेदांता की ओर से उठाए गए मुद्दों में कोई योग्यता नहीं
- अदाणी समूह ने 14,535 करोड़ रुपये में किया है जेएएल का अधिग्रहण

एनसीएलएटी ने कहा कि सीओसी का निर्णय ''समग्र विचार पर आधारित था और इसे व्यावसायिक बुद्धिमत्ता में लिया गया था। जेएएल को जून 2024 में दिवालियापन कार्यवाही के लिए स्वीकार किया गया था, जब यह 57,000 करोड़ रुपये से अधिक के बैंक कर्ज का भुगतान करने में असफल रही थी। समाधान प्रक्रिया में 28 बोलियां आईं। अंतिम बोलीदाताओं में वेदांता, अदाणी एंटरप्राइजेज और अन्य शामिल थे। अदाणी और वेदांता अग्रणी के रूप में उभरे। इसमें अदाणी को प्रस्ताव को अग्रिम वसूली और समग्र मूल्य में प्राथमिकता दी गई। सीओसी ने नवंबर 2025 में अदाणी की योजना को मंजूरी दी थी।

वेदांता ने तर्क दिया कि प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी थी और इसका संशोधित बोली उच्च मूल्य प्रदान करती थी। क्रेडिटर्स ने जवाब दिया कि संशोधित प्रस्ताव केवल तब प्रस्तुत किया गया, जब वेदांता को पता चला कि यह जीतने वाली बोली से पीछे है।

राष्ट्रीय फलक

एफआइआर के लिए सीधे हाईकोर्ट का रुख नहीं, सुप्रीम कोर्ट का फैसला

नई दिल्ली, प्रेट्र : न्याय की तलाश में अक्सर लोग भावुकता और जल्दबाजी में सीधे उच्च न्यायालयों का दरवाजा खटखटाते हैं, विशेषकर जब पुलिस प्राथमिकी दर्ज करने में आनाकानी करे। लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने एक महत्वपूर्ण फैसले में स्पष्ट किया है कि न्याय की सीढ़ियां लांघी नहीं जा सकतीं। इसने कहा कि यदि पुलिस एफआइआर दर्ज नहीं करती, तो सीधे उच्च न्यायालय जाने के बजाय नागरिक को पहले कानून द्वारा निर्धारित वैकल्पिक कानूनी रास्तों का पालन करना अनिवार्य है।

असाधारण अधिकार क्षेत्र का विवेकपूर्ण उपयोग : न्यायमूर्ति संजय करोल व न्यायमूर्ति आगस्टीन जार्ज मसीह की पीठ ने संविधान के अनुच्छेद 226 की व्याख्या करते हुए कहा कि उच्च न्यायालयों के पास रिट जारी करने की शक्ति व्यापक तो है, लेकिन यह 'असाधारण' व 'विवेकाधीन' है। स्पष्ट किया कि केवल इसलिए कि किसी अधिकारी ने लापरवाही बरती है, उच्च न्यायालय को सीधे हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। जब तक कि स्थिति अत्यंत गंभीर या आपातकालीन न हो, तब तक कानूनी ढांचे के भीतर उपलब्ध विकल्पों को दरकिनार करना न्यायिक मर्यादा के अनुकूल नहीं है। सर्वोच्च न्यायालय ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस), 2023 का हवाला देते हुए व्यवस्थित क्रम समझाया।

- कहा - अगर पुलिस एफआइआर दर्ज नहीं करती तो पहले वैकल्पिक कानूनी रास्तों का पालन करना अनिवार्य

सुप्रीम कोर्ट।

स्थिति गंभीर न हो तो विकल्पों को दरकिनार करना न्यायिक मर्यादा के अनुकूल नहीं

उत्तर प्रदेश और बिहार में आंधी-बारिश और वज्रपात का कहर, 44 लोगों की मौत

जागरण टीम, नई दिल्ली

- मौसम के कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त, फसलों को भी भारी नुकसान पहुंचा
- लखनऊ से गोरखपुर तक तबाही, दीवार, पेड़ और बिजली गिरने से हुए हादसे

सोमवार को तेज आंधी, बारिश, ओलावृष्टि और वज्रपात ने भारी तबाही मचाई। इस कारण हुए हादसों में उत्तर प्रदेश में 24 और बिहार में 20 लोगों की मौत हो गई। बड़ी संख्या में लोग जख्मी हो गए। मौसम के कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया और फसलों को भी भारी नुकसान पहुंचा। आंधी से बिजली के खंभे गिरने और तार टूटने से सैकड़ों गांवों की आपूर्ति ठप हो गई। इससे कई जगह सड़कें बाधित रहीं और आम, गेहूं व सब्जियों की फसल को भारी नुकसान पहुंचा।

उत्तर प्रदेश में भीषण गर्मी के बीच पिछले एक सप्ताह से रुक-रुककर वर्षा का दौर जारी है। सोमवार को लखनऊ समेत करीब 50 से अधिक जिलों में सुबह साढ़े आठ बजे के आसपास आसमान में काले बादल छा गए और सुबह साढ़े आठ बजे ही अंधेरा छा गया। गरज-चमक के साथ तेज हवा और बारिश होने लगी। इस दौरान सड़कों पर चलने वाले वाहनों को लाइट जलानी पड़ी। मौसम विभाग के अनुसार, मंगलवार और बुधवार को प्रदेश के पूर्वी से लेकर पश्चिमी हिस्सों तक तेज आंधी, मध्यम से भारी बारिश और ओलावृष्टि का अलर्ट जारी किया है। 60 जिलों में आरेंज अलर्ट घोषित किया गया है। 40 से अधिक जिलों में वज्रपात की भी चेतावनी जारी की गई है।

दोनों उप मुख्यमंत्रियों को लेकर आ रहा विमान आंधी-पानी में फंसा

सोमवार सुबह मौसम खराब होने के कारण दिल्ली से लखनऊ आ रहे उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक और केशव प्रसाद मौर्य का विमान फंस गया। विमान को भोपाल डायवर्ट किया गया। मौसम ठीक होने के बाद सोमवार दोपहर 12 :27 बजे विमान लखनऊ पहुंच सका। इसके अलावा दो अन्य विमान भी हवा में चक्कर काटते रहे। वहीं, दिल्ली में खराब मौसम के कारण दृश्यता कम हो गई। इससे रविवार रात 11 से तड़के तीन बजे तक 15 विमानों को लखनऊ डायवर्ट किया गया। यह विमान एक के बाद एक चौधरी चरण सिंह अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर उतरे। मौसम ठीक होने के बाद इन विमानों को दिल्ली के लिए रवाना किया गया।

सरकार ने पेट्रोल, डीजल, एलपीजी की कीमतें नहीं बढ़ाने का दिया भरोसा

नई दिल्ली, एएनआइ: सरकार ने सोमवार को यह भरोसा दिया कि पश्चिम एशिया में तनाव के बावजूद घरेलू एलपीजी और ईंधन की आपूर्ति स्थिर और निर्बाध बनी हुई है। पेट्रोल, डीजल और एलपीजी सिलिंडरों की खुदरा कीमतें बढ़ाने की फिलहाल कोई योजना नहीं है। सरकार ने यह भी बताया कि घरेलू एलपीजी की आपूर्ति सामान्य है और रविवार को इसके लिए आनलाइन बुकिंग बढ़कर 99 प्रतिशत हो गई।

पेट्रोलियम मंत्रालय के अधिकारियों ने एक अंतर-मंत्रालयी ब्रीफिंग में बताया कि खुदरा आउटलेट पर एलपीजी की कोई किल्लत नहीं है। जबकि एलपीजी के लिए आइनलाइन बुकिंग अब तक के सबसे उच्चतम स्तर पर है। जबकि ईंधन के मामले में अधिकारियों ने इस बात की पुष्टि की है कि पेट्रोल और डीजल की खुदरा कीमतें अपरिवर्तित हैं।

कच्चे तेल का भंडार पर्याप्त रूप से बनाए रखा गया है। जबकि रिफाइनरियां अपनी अधिकतम क्षमता के साथ काम कर रही हैं। साथ ही यह माना कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल, एलपीजी और प्राकृतिक गैस की कीमतें तेजी से बढ़ी हैं।

- स्थिर और निर्बाध बनी हुई है एलपीजी और ईंधन की आपूर्ति

एलएनजी के भंडारण टैंक की संख्या बढ़ाने की तैयारी

प्रेट्र के अनुसार, पश्चिम एशिया में तनाव और बढ़ते जोखिमों के बीच भारत अपनी ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाने के लिए तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) के भंडारण के लिए नए टैंक बनाने की तैयारी में है। पेट्रोनेट एलएनजी लिमिटेड के एक शीर्ष अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। भारत अपनी प्राकृतिक गैस जरूरतों का करीब 50 प्रतिशत हिस्सा आयात करता है।

सशस्त्र बल न्यायाधिकरण में रिक्तियों पर सुप्रीम कोर्ट ने मांगा केंद्र से जवाब

नई दिल्ली, प्रेट्र : सशस्त्र बल न्यायाधिकरण (एएफटी) में रिक्तियों पर संज्ञान लेते हुए सुप्रीम कोर्ट ने एक याचिका पर सोमवार को केंद्र सरकार और अन्य से जवाब तलब किया। याचिका में समयबद्ध तरीके से चयन प्रक्रिया पूरी करने और रिक्त पदों को भरने की मांग की गई है।

प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत एवं जस्टिस जोयमाल्या बागची की पीठ ने याचिका पर सुनवाई करने पर सहमति व्यक्त की और अटार्नी जनरल आर. वेंकटरमणी से इस मामले में सहायता करने का अनुरोध किया। पीठ ने याचिकाकर्ता आर्म्ड फोर्सेज ट्रिब्युनल बार एसोसिएशन (रीजनल बेंच) के वकील से याचिका की एक प्रति अटार्नी जनरल के कार्यालय को भी सौंपने को कहा। इसके बाद पीठ ने मामले की सुनवाई दो सप्ताह बाद के लिए स्थगित कर दी।

शराब घोटाले में मैनपावर के नाम पर 115 करोड़ का गबन, सात गिरफ्तार

राज्य ब्यूरो, नईदुनिया • रायपुर

3,200 करोड़ रुपये के शराब घोटाले से जुड़े मैनपावर घोटाले में राज्य आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो (ईओडब्ल्यू) की टीम ने सात आरोपितों को गिरफ्तार किया है। शनिवार को विशेष न्यायालय ने आरोपितों को 11 मई तक न्यायिक अभिरक्षा पर ईओडब्ल्यू को सौंपने का आदेश दिया।

गिरफ्तार आरोपित हरियाणा, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के निवासी हैं। ईओडब्ल्यू की जांच में सामने आया है कि छत्तीसगढ़ स्टेट मार्केटिंग कार्पोरेशन लिमिटेड (सीएसएमसीएल) में प्लेसमेंट और मैनपावर एजेंसियों के माध्यम से ओवरटाइम भत्ते के नाम पर बड़े पैमाने पर गड़बड़ी की गई। वर्ष 2019-2020 से 2023-24 के बीच फर्जी तरीके से भुगतान किया गया। जांच के अनुसार यह गबन 115 करोड़ रुपये से अधिक का है। एफआइआर के मुताबिक सीएसएमसीएल के तत्कालीन एमडी अरुणपति त्रिपाठी समेत अन्य ने मैनपावर एजेंसियों के साथ मिलकर सुनियोजित षड्यंत्र रचा था।

ये हुए गिरफ्तार

- नीरज चौधरी, सीए एवं सलाहकार, ईगल इंटर साल्यूशन लिमिटेड।
- अजय लोहिया, डायरेक्टर, अलर्ट कमांडोज प्राइवेट लिमिटेड।
- अमित मित्तल,चेयरमैन एवं डायरेक्टर, ए-टू-जेड इन्फ्रासर्विसेस लिमिटेड।
- अजीत दरंदले, डायरेक्टर।
- अमित प्रभाकर सालुंके, डायरेक्टर, सुमीत फैसिलिटीज लिमिटेड।
- राजीव द्विवेदी, डायरेक्टर, प्राइमवन वर्कफोर्स प्राइवेट लिमिटेड, संजीव जैन, डायरेक्टर, प्राइमवन वर्कफोर्स लिमिटेड।

वित्त वर्ष में संशोधित अनुमान से कम रहा प्रत्यक्ष कर संग्रह

नई दिल्ली, प्रेट्र: बीते वित्त वर्ष 2025-26 में केंद्र सरकार का शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 5.12 प्रतिशत बढ़कर 23.40 लाख करोड़ रुपये रहा है। हालांकि, यह संशोधित अनुमान 24.21 लाख करोड़ रुपये था जिसमें कारपोरेट कर से 11.09 लाख करोड़ रुपये और व्यक्तिगत आयकर से 13.12 लाख करोड़ रुपये मिलने का अनुमान जताया गया था।

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) की ओर से जारी डाटा के अनुसार, पिछले वित्त वर्ष में शुद्ध कारपोरेट कर संग्रह 10.99 लाख करोड़ रुपये और व्यक्तिगत आयकर 12.41 लाख करोड़ रुपये रहा है। आयकर में सिक्योरिटी ट्रांजेक्शन टैक्स (एसटीटी) भी शामिल है। वित्त वर्ष 2024-25 में शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह 22.26 लाख करोड़ रुपये रहा था। 2025-26 के दौरान रिफंड में 1.09 लाख करोड़ की कमी आई है और यह घटकर 4.71 लाख करोड़ रह गया है।

बिहार में नीट में धांधली कराने वाले एमबीबीएस छात्र समेत तीन गिरफ्तार

जागरण संवाददाता, नालंदा

- तीन मोबाइल, स्कार्पियो और कार जब्त, मास्टरमाइंड फरार

बिहार में नालंदा पुलिस ने नीट में धांधली कराने वाले गिरोह के तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया है। इनमें एमबीबीएस छात्र भी शामिल हैं। सभी साल्वर गिरोह के सदस्य हैं। एक आरोपित एमबीबीएस द्वितीय वर्ष का छात्र है। आरोपितों के पास से दो लाख 95 हजार रुपये, तीन मोबाइल व स्कार्पियो और कार बरामद की गई है। उनके मोबाइल में नीट के फर्जी एडमिट कार्ड एवं विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रवेशपत्र मिले हैं।

राजगीर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सुनील कुमार सिंह ने सोमवार को बताया कि दो मई की रात करीब 1:45 बजे पुलिस को देखकर दो वाहन भागने लगे। तभी पुलिस ने घेरकर उन्हें दबोच लिया। पकड़े गए लोगों से पूछताछ की गई तो साल्वर गिरोह का पता चला। उसके मोबाइल से एडीईओ व बीएसएनएल समेत अन्य परीक्षाओं में धांधली के ठोस साक्ष्य मिले हैं। गिरफ्तार आरोपितों ने पूछताछ में बताया कि गिरोह का मास्टरमाइंड उज्ज्वल उर्फ राजा बाबू है। वह पावापुरी मेडिकल कालेज के 2022 बैच का छात्र है। उज्ज्वल पर पहले से केस दर्ज है। बता दें कि नीट-यूजी 2024 पेपरलीक में नालंदा के संजीव मुखिया का नाम सामने आया था।

गिरफ्तार बदमाश के साथ प्रेस कान्फ्रेंस करते डीएसपी।

स्पाइसजेट एयरलाइन की समीक्षा अर्जी खारिज, लगाया जुर्माना

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: केएएल एयरवेज और उसके प्रमोटर कलानिधि मारन के साथ चल रहे कानूनी विवाद में 144 करोड़ रुपये जमा करने के आदेश की समीक्षा की स्पाइसजेट एयरलाइन की मांग को दिल्ली हाई कोर्ट ने सोमवार को ठुकरा दिया।

न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद की पीठ ने स्पाइसजेट और इसके प्रमोटर अजय सिंह पर 50 हजार रुपये के जुर्माने के साथ याचिका खारिज कर दी। 19 जनवरी को हाई कोर्ट ने स्पाइसजेट और अजय सिंह को निर्देश दिया था कि वे 194 करोड़ रुपये की स्वीकार की गई देनदारी के बदले 144 करोड़ रुपये छह सप्ताह के भीतर रजिस्ट्री में जमा करें। 18 मार्च को जमा करने की समय-सीमा चार सप्ताह के लिए बढ़ा दी गई थी। अजय सिंह और उनकी एयरलाइन ने 18 मार्च के निर्देश पर कई आधारों पर पुनर्विचार की मांग की।

28 फरवरी 2026 को इजरायल और अमेरिका ने ईरान पर हमले शुरू किए। इस अभियान को इज़राइल ने 'गर्जता हुआ शेर'/'यहूदा का शिल्ड' और अमेरिका ने 'ऑपरेशन एपिक फ्यूरी' कहा, जिसका उद्देश्य ईरान के परमाणु व मिसाइल कार्यक्रम को नष्ट करना था।

होर्मुज में ट्रंप के 'प्रोजेक्ट फ्रीडम' से खाड़ी में फिर युद्ध के हालात

ईरान ने अमेरिकी युद्धपोतों पर दागीं मिसाइलें-ड्रोन, अमेरिका ने डुबोईं सात ईरानी नौकाएं

होर्मुज में फंसे जहाजों को निकालने के लिए अमेरिकी नौसेना ने शुरू किया प्रोजेक्ट फ्रीडम

- यूएई का दावा, ईरान ने चार मिसाइल हमले किए, ड्रोन हमले में पेट्रोलियम ठिकाने पर लगी आग
- ईरान की चेतावनी- आइआरजीसी से समन्वय बगैर होर्मुज से न निकलें जहाज

ईरान के बंदर अब्बास के पास होर्मुज जलडमरूमध्य में सोमवार को तट से दूर लंगर डालकर खड़े मालवाहक जहाज। एपी

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

पश्चिम एशिया में सोमवार को एक बार फिर युद्ध के हालात बनने लगे हैं। होर्मुज जलडमरूमध्य में पिछले दो महीने से अटके पड़े मालवाहक जहाजों को सुरक्षित निकालने के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने प्रोजेक्ट फ्रीडम शुरू करने का एलान किया। इसके विरोध में ईरान ने ड्रोन और मिसाइलों से हमले शुरू कर दिए। ईरान के ड्रोन हमले में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के फुजैराह स्थित एक तेल ठिकाने पर आग लग गई, जिसमें तीन भारतीय नागरिकों के भी घायल होने की खबर है।

यूएई ने दावा किया कि सात अप्रैल को लागू युद्धविराम के बाद पहली बार ईरान ने ड्रोन और मिसाइल हमले किए। ईरान के मिसाइल हमले में दक्षिण कोरिया के तेल टैंकर समेत दो जहाजों में आग लग गई। ईरान ने दावा किया कि होर्मुज में घुसने की कोशिश कर रहे दो अमेरिकी नौसैनिक जहाजों को भी निशाना बनाया गया है। हालांकि, अमेरिकी सेंट्रल कमांड (सेंटकाम) ने इन दावों को खारिज किया।

सेंटकाम ने बताया कि प्रोजेक्ट फ्रीडम के तहत नौसेना ने सोमवार से होर्मुज स्ट्रेट में फंसे मालवाहक जहाजों को निकालने के लिए एक सुरक्षित गलियारा तैयार किया है, जहां ईरानी समुद्री माइन्स का खतरा नहीं है। इस दौरान अमेरिकी ध्वज लगे दो मालवाहक जहाजों को होर्मुज से निकाल लिया गया। अभियान के दौरान ईरान की हमलावर नौकाओं ने अमेरिकी युद्धपोतों पर हमला किया। जवाब में सात सैन्य नौकाओं को डुबो दिया गया। ईरान की तरफ से दागी गई क्रूज मिसाइलों और ड्रोन को भी इंटरसेप्ट कर लिया गया।

न्यूयार्क टाइम्स के अनुसार, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को एक बयान में कहा था कि प्रोजेक्ट फ्रीडम के तहत अमेरिकी नौसेना मानवीय आधार पर व्यापारिक जहाजों को सुरक्षित मार्गदर्शन देगी। साथ ही उन्होंने चेताया कि इस दौरान यदि बाधा डाली गई तो उससे कड़ाई से निपटा जाएगा।

उन्होंने बताया कि कई देशों ने अपने जहाजों की निकासी के लिए अमेरिका से मदद मांगी है। बताया जा रहा है कि पिछले दो महीनों से फंसे जहाजों पर सवार चालक दल के सामने खाद्य और जरूरी सामान की कमी गंभीर होती जा रही है।

हालांकि, सेंटकाम ने संकेत दिया कि अमेरिका सीधे सुरक्षा देने के बजाय केवल समन्वय करेगा। इस अभियान में गाइडेड मिसाइल डेस्ट्रायर, जमीन और समुद्र आधारित करीब 100 विमान व ड्रोन तथा 15 हजार सैन्यकर्मी शामिल हैं। रायटर के अनुसार, कमांडर एडमिरल ब्रैड कूपर ने इसे क्षेत्रीय सुरक्षा और वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए जरूरी बताया है। इसी बीच यूएई ने मिसाइल हमले का आपात अलर्ट भी जारी किया, जिसे युद्धविराम के बाद पहली ऐसी घटना माना जा रहा है। उल्लेखनीय है कि इजरायल और अमेरिका की सेनाओं के हमले के बाद ईरान ने भी पड़ोसी देशों पर हमले शुरू कर दिए थे। साथ ही ईरानी सेना ने अमेरिकी ठिकानों को भी निशाना बनाया था।

अमेरिका ने 22 ईरानी क्रू सदस्यों को छोड़ा

अल जजीरा के अनुसार, खाड़ी में तनाव के बीच राहत भरी खबरें भी आ रही हैं। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने बताया कि अमेरिका ने ईरान के जब्त एक तेल टैंकर के 22 चालक दल सदस्यों को रिहा कर दिया है। उन्हें पाकिस्तान लाया गया, जहां से ईरानी अधिकारियों को सौंपा जाएगा। इसके साथ ही अमेरिका ने ईरानी तेल टैंकर को भी छोड़ दिया है। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि इस कदम से दोनों पक्षों के बीच भरोसा बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

एक और ईरानी जहाज ने पार की नाकेबंदी

एपी के अनुसार, अमेरिकी नौसैनिक नाकेबंदी के बावजूद ईरान का एक और तेल सुपरटैंकर होर्मुज से निकलने में सफल हो गया। टैंकर ट्रैकर्स ने भी एक्स पर इसकी पुष्टि की है। डेरया नाम का सुपर टैंकर इंडोनेशिया के लोंबोक स्ट्रेट को पार कर गया है। इससे पहले रविवार को ह्यूज नाम के एक और सुपर टैंकर के अमेरिकी नौसेना को चकमा देकर निकल जाने की सूचना आई थी। आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल में करीब 25 तेल टैंकरों ने अमेरिकी नौसैनिक नाकेबंदी को छकाया है, जबकि केवल दो टैंकर अमेरिकी बलों के कब्जे में आए।

यूएई पर ईरानी हमले में तीन भारतीय घायल

यूएई के फुजैराह स्थित फुजैराह पेट्रोलियम इंडस्ट्रियल जोन (एफओआइजेड) पर ईरानी ड्रोन हमले के चलते आग लग गई। इसमें तीन भारतीय नागरिक घायल हो गए। फुजैराह सिविल डिफेंस के सदस्यों ने तत्काल कार्रवाई करते हुए आग पर काबू पाया। खलीज टाइम्स के अनुसार, घायल हुए तीनों भारतीयों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। यूएई के रक्षा मंत्रालय ने एक्स पर बताया कि ईरान ने अलग-अलग हिस्सों में चार मिसाइल हमले किए। तीन को इंटरसेप्ट कर लिया गया, जबकि एक मिसाइल समुद्र में गिर गई। मंत्रालय ने नागरिकों के अतिरिक्त सतर्कता बरतने की अपील की है।

ईरान की सख्त प्रतिक्रिया

ईरान की ओर से दावा किया गया है कि जास्क बंदरगाह शहर की ओर से होर्मुज में प्रवेश करने का प्रयास कर रहे अमेरिकी युद्धपोत पर दो मिसाइलें दागीं और एक जहाज को निशाना बनाया गया। ईरान की एकीकृत कमान ने व्यापारिक जहाजों व तेल टैंकरों को निर्देश दिया है कि वे आइआरजीसी से समन्वय के बगैर होर्मुज से निकलने का प्रयास न करें। एकीकृत कमान प्रमुख अली अब्दुल्लाही ने चेताया किसी भी विदेशी सैन्य बल, विशेषकर अमेरिकी सेना, के प्रवेश पर हमला किया जाएगा। रिवोल्यूशनरी गार्ड के प्रवक्ता सरदार हुसैन मोहिबी ने कहा कि ईरान के पास जवाब देने के सभी साधन मौजूद हैं। वहीं सरकारी प्रसारक आइआरआइबी ने 'प्रोजेक्ट फ्रीडम' को ट्रंप की 'बड़बड़ाहट' बताया। संसद की राष्ट्रीय सुरक्षा समिति के प्रमुख इब्राहिम अजीजी ने इसे युद्धविराम का उल्लंघन करार दिया है।

नेपाल ने लिपुलेख पर अपना दावा दोहराया, भारत से वार्ता की मांग

काठमांडू, प्रेट्र : भारत की ओर से सख्ती से खारिज किए जाने के एक दिन बाद नेपाल ने लिपुलेख पर अपना दावा सोमवार को दोहराया और इस मुद्दे को सुलझाने के लिए भारत के साथ वार्ता की पैरवी की। भारत ने रविवार को ही लिपुलेख दर्रे के रास्ते होने वाली आगामी कैलास मानसरोवर यात्रा पर नेपाल की आपत्ति को सख्ती से खारिज किया था। भारत ने क्षेत्र पर नेपाल के दावे को एकतरफा मनमाना विस्तार बताते हुए अस्वीकार्य करार दिया था।

नेपाल के विदेश मंत्रालय रविवार को एक बयान जारी करके लिपुलेख दर्रे के रास्ते कैलास यात्रा के लिए भारत और चीन की तैयारियों पर आपत्ति जताई थी। इस आपत्ति और क्षेत्र पर उसके दावे को भारत की ओर से खारिज किए जाने के बावजूद नेपाल सरकार के प्रवक्ता सस्मित पोखारेल ने सोमवार को कहा, "नेपाल का अपनी सीमा बढ़ाने का कोई इरादा नहीं है; यह क्षेत्र नेपाल का है और सरकार का इस बारे में दृष्टिकोण स्पष्ट है और वह अपने रुख पर कायम है। इस मुद्दे को दोनों देशों के बीच सहयोग और कूटनीतिक बातचीत के माध्यम से सुलझाया जाना चाहिए।" उन्होंने कहा कि विदेश मंत्रालय ने इस संबंध में एक औपचारिक पत्र के जरिये भारत को पहले ही सूचित कर दिया है।

यूरोप ने समझा ट्रंप का संदेश, सैन्य योगदान बढ़ाने को तैयार : नाटो प्रमुख

- सैन्य अड्डों के इस्तेमाल पर अमेरिका से समझौते लागू करने की तैयारी
- स्पेन को छोड़ अधिकांश नाटो देश सहयोग के पक्ष में
- जर्मनी-अमेरिका के बीच बयानबाजी से बढ़ा तनाव
- पोलैंड ने चेताया- आंतरिक मतभेद नाटो के लिए सबसे बड़ा खतरा

येरेवन (आर्मेनिया), एएनआइः उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के महासचिव मार्क रूट ने कहा है कि यूरोपीय देशों ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का संदेश समझ लिया है। अब वे सैन्य योगदान बढ़ाने, अमेरिकी सेना को सैन्य अड्डों के उपयोग की अनुमति देने के लिए आगे बढ़ रहे हैं।

अल जजीरा के मुताबिक, आर्मेनिया में आयोजित यूरोपीय राजनीतिक समुदाय शिखर सम्मेलन के दौरान रूट ने स्वीकारा कि ट्रांस-अटलांटिक साझेदारों के बीच हाल के दिनों में तनाव रहा है, पर अब यूरोपीय देश वाशिंगटन की चिंताओं को गंभीरता से ले रहे हैं। उन्होंने कहा, अमेरिका की ओर से कुछ निराशा जरूर थी, पर यूरोप ने उसे सुना है। यह बयान ऐसे समय आया है जब ट्रंप ने ईरान के साथ जारी संघर्ष के बीच कुछ नाटो देशों पर पर्याप्त समर्थन न देने का आरोप लगाया था। इस रणनीतिक दबाव का असर यूरोपीय देशों के रुख में बदलाव के रूप में दिखने लगा है।

जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मर्ज ने हाल ही में अमेरिका को नाटो में सबसे अहम साझेदार बताया। यह बयान ऐसे समय आया है, जब कुछ दिन पहले ही उन्होंने पश्चिम एशिया के मुद्दे पर ट्रंप प्रशासन की आलोचना की थी। मर्ज ने इंटरनेट मीडिया पर भी कहा, दोनों देशों का साझा लक्ष्य है- ईरान को परमाणु हथियार हासिल करने से रोकना। हालांकि, दोनों नेताओं के बीच व्यक्तिगत व राजनीतिक मतभेद भी उभरकर सामने आए हैं। ट्रंप ने ओवल आफिस में एक कार्यक्रम के दौरान मर्ज की आलोचना करते हुए कहा, जर्मन चांसलर खराब काम कर रहे हैं। उन्हें आव्रजन व ऊर्जा जैसे घरेलू मुद्दों पर ध्यान देना चाहिए। ट्रंप ने यह भी दावा किया कि ईरान के परमाणु मुद्दे पर वार्ता में उनकी स्थिति सही है। इस बीच, ट्रंप प्रशासन जर्मनी से पहले प्रस्तावित 5,000 सैनिकों से भी अधिक संख्या में सैनिकों की वापसी पर विचार कर रहा है, जिससे सहयोगी देशों पर रक्षा जिम्मेदारियां बढ़ाने का दबाव बढ़ गया है।

नाटो सहयोगियों के बीच चल रहे इस तनाव के बीच पोलैंड के पीएम डोनाल्ड टस्क ने चेतावनी दी है कि गठबंधन के सामने सबसे बड़ा खतरा बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक विभाजन है। उन्होंने सदस्य देशों से मतभेद दूर कर संगठन की एकजुटता बनाए रखने की अपील की। ज्ञात हो, 1949 में स्थापित नाटो 32 देशों का सैन्य गठबंधन है, जिसका उद्देश्य राजनीतिक और सैन्य सहयोग के जरिए सदस्य देशों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

डच राजकुमारियों की हत्या की साजिश का खुलासा, संदिग्ध गिरफ्तार

एम्सटर्डम : नीदरलैंड में शाही परिवार को निशाना बनाने की साजिश सामने आई है। पुलिस ने दो राजकुमारियों कैथरीना अमालिया और एलेक्सिया की हत्या की साजिश रचने के आरोप में 33 साल के एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। इसे अदालत में पेश किया जाएगा। उसे फरवरी में हेग से गिरफ्तार किया था, पर साजिश और गिरफ्तारी की जानकारी अब सामने आई है।

पुलिस के मुताबिक, गिरफ्तार किए गए व्यक्ति पर आरोप है कि वह डच राजकुमारियों कैथरीना अमालिया (22) और एलेक्सिया (20) की हत्या की साजिश रच रहा था। जांच में पता चला कि आरोपित के पास दो कुल्हाड़ियां थीं। इन पर एलेक्सिया, मोसाद और सीग हेल जैसे शब्द लिखे थे। सीग हेल नाजी दौर का नारा है। उसके पास एक हाथ से लिखा नोट भी मिला, जिसमें अमालिया, एलेक्सिया और ब्लडबाथ (खून-खराबा) लिखा था। इससे लगता है कि वह बहुत हिंसक हमला करने की तैयारी में था।

ईरान में इंटरनेट पर पाबंदी के बीच 'स्टारलिंक' की तस्करी, गुप्त नेटवर्क सक्रिय

- बीबीसी की रिपोर्ट में खुलासा, हजारों डिवाइस देश में पहुंचाए गए
- कड़ी सजा और गिरफ्तारियों के बावजूद बनी हुई है मांग
- विदेश में रह रहे ईरानी नागरिक कर रहे इंटरनेट और डिवाइस की फंडिंग
- जनवरी तक 50 हजार डिवाइस ईरान में मौजूद, अब तक 100 गिरफ्तार

प्रतीकात्मक

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

ईरान में सख्त इंटरनेट पाबंदियों के बीच सैटेलाइट इंटरनेट सेवा 'स्टारलिंक' को चोरी-छिपे पहुंचाने वाला गुप्त नेटवर्क सक्रिय है। बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक, यह नेटवर्क युद्ध और सरकारी प्रतिबंधों के बीच देश में इंटरनेट पहुंच बनाए रखने की कोशिश कर रहा है, जबकि यह तकनीक ईरान में अवैध घोषित है। रिपोर्ट के अनुसार, जनवरी में बड़े विरोध प्रदर्शनों के दौरान ईरान में इंटरनेट पूरी तरह बंद कर दिया गया था। फरवरी में अमेरिका-इजराइल के हमलों के बाद प्रतिबंध और सख्त कर दिए गए। इसके चलते देश में वैकल्पिक इंटरनेट सेवाओं की मांग बढ़ी है।

इसी मांग को पूरा करने के लिए कुछ गुप्त समूह सीमाओं के जरिए स्टारलिंक उपकरणों की तस्करी कर रहे हैं। 'साहंद' (बदला हुआ नाम) नामक एक व्यक्ति ने बीबीसी को बताया कि एक डिवाइस से कई लोग एक साथ इंटरनेट से जुड़ सकते हैं। यह सरकारी निगरानी को दरकिनार करने का प्रभावी तरीका है। ईरान ने 2025 में कानून बनाकर स्टारलिंक उपकरणों के उपयोग, खरीद-बिक्री व आयात को गैरकानूनी घोषित कर दिया है। इसके तहत अधिकतम दो साल की सजा व बड़ी संख्या में डिवाइस रखने पर 10 साल तक की जेल का प्रविधान है। गत माह चार लोगों, जिनमें दो विदेशी नागरिक थे, को ऐसे उपकरण लाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया।

बीबीसी के हवाले से एक डिजिटल अधिकार समूह का अनुमान है कि अब तक करीब 100 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। इसके बावजूद मांग बनी हुई है। मानवाधिकार संगठन 'विटनेस' के अनुसार, जनवरी तक ईरान में करीब 50,000 स्टारलिंक डिवाइस मौजूद थे। इस नेटवर्क को विदेशों में बसे ईरानी नागरिक और अन्य समर्थक फंडिंग करते हैं। इन डिवाइस को ऐसे लोगों तक पहुंचाया जाता है जो जमीनी हालात को दुनिया तक पहुंचा सकें।

न्यूज गैलरी

अमेरिका में झील किनारे पार्टी में चलीं गोलियां, 12 घायल

वाशिंगटन : अमेरिका के ओक्लाहोमा सिटी के समीप एक झील किनारे पार्टी के दौरान रविवार रात गोलीबारी की घटना हुई। इसमें 12 लोग घायल हो गए, जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पार्टी में गोलीबारी के कारणों का अभी पता चल नहीं पाया है। एडमंड पुलिस की प्रवक्ता एमिली वार्ड ने बताया कि रात करीब नौ बजे आर्केडिया झील के पास युवाओं के एक जमावड़े में गोली चलने की सूचना मिली। इस मामले में अभी तक कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है। उन्होंने कहा, "यह स्पष्ट रूप से भयावह स्थिति है और हम लोगों की चिंताओं को समझते हैं। हम संदिग्धों का पता लगाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं।" यह झील ओक्लाहोमा सिटी के उपनगर एडमंड में स्थित है। (एपी)

यूक्रेन में रूसी मिसाइल हमले में पांच लोगों की मौत

खार्किव : यूक्रेन के उत्तरपूर्वी खार्किव क्षेत्र के मेरेफा कस्बे पर हुए रूसी मिसाइल हमले में पांच लोग मारे गए और कई अन्य घायल हो गए। खार्किव के गवर्नर ओलेह सिनीहुबोव ने बताया कि हमले में 10 घर, एक प्रशासनिक भवन, चार दुकानें, एक गैराज और एक होटल क्षतिग्रस्त हो गए। उन्होंने बताया कि हमले में दो पुरुष और तीन महिलाओं की मौत हो गई, जबकि 18 अन्य घायल हुए हैं, जिनमें से चार को गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया। क्षेत्रीय अभियोजकों ने कहा कि रूसी सेना ने इस्कंदर प्रकार की बैलिस्टिक मिसाइल का इस्तेमाल किया। वहीं, यूक्रेन के इन्फ्रास्ट्रक्चर मंत्री ने सोमवार को कहा कि रूस ने 2026 के पहले चार महीनों में यूक्रेन के बंदरगाह पर 800 से अधिक ड्रोन हमले किए। (रायटर)

लेबनान में इजरायली सेना के हमले में दो लोग मारे गए

तेल अवीव : युद्धविराम को न मानते हुए इजरायल के लड़ाकू विमानों ने रविवार को दक्षिणी लेबनान पर रविवार को फिर हमले किए। इन हमलों में हिजबुल्ला का ठिकाना होने के शक में करीब 50 स्थानों को निशाना बनाया गया। इन हमलों में दो लोगों की मौत हुई है। इजरायली सेना ने उन्हें हिजबुल्ला का सदस्य बताया है। इजरायल ने शनिवार को भी हमले कर हिजबुल्ला के ठिकानों को निशाना बनाया था। (एएनआइ)

भारत और जमैका के संबंधों में क्रिकेट की है अहम भूमिका : जयशंकर

- कहा, यह खेल दोनों देशों के बीच सेतु का करता है काम
- सबीना पार्क में इलेक्ट्रानिक स्कोरबोर्ड का किया अनावरण

किंग्स्टन स्थित सबीना पार्क में इलेक्ट्रानिक स्कोरबोर्ड के लोकार्पण अवसर पर जमैका के प्रधानमंत्री एंड्र्यू होल्नेस और अपनी समकक्ष (दाएं) कैमिना जे स्मिथ के साथ विदेश मंत्री एस जयशंकर। प्रेट्र >>

किंगस्टन, प्रेट्र : विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भारत व जमैका के संबंधों में क्रिकेट की अहम भूमिका का जिक्र किया और कहा कि दोनों देशों के बीच क्रिकेट सेतु का काम करता है। उन्होंने भारत की तरफ से इस कैरेबियाई देश को उपहार में दिए गए इलेक्ट्रानिक स्कोरबोर्ड के अनावरण के मौके पर यह बात कही।

जयशंकर ने रविवार को ऐतिहासिक क्रिकेट मैदान सबीना पार्क में इलेक्ट्रानिक स्कोरबोर्ड के अनावरण कार्यक्रम में कहा, क्रिकेट भारत-जमैका के बीच संबंधों को प्रगाढ़ करता है। भारत में एक अरब से ज्यादा लोग इस खेल को जुनून से देखते हैं। कहा, "खेल साझा अनुभव व आपसी सम्मान को बढ़ावा देकर देशों को करीब लाते हैं। जहां तक भारत-जमैका की बात है तो क्रिकेट का इसमें खास महत्व है।" इस मौके पर जमैका के पीएम एंड्र्यू होल्नेस भी मौजूद रहे। जयशंकर ने कहा,इस मैदान से भारतीय क्रिकेट की खास यादें जुड़ी हैं, जिसमें क्रिकेटर राहुल द्रविड़ का शतक, 2011 में विराट कोहली का टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण शामिल है। कहा, जार्ज हेडली, माइकल होल्डिंग, कर्टनी वाल्श, क्रिस गेल जैसे महान खिलाड़ियों के इस देश को विश्व में अपार सम्मान प्राप्त है। जयशंकर जमैका, सूरीनाम व त्रिनिदाद और टोबैगो की नौ दिनी यात्रा के तहत शनिवार शाम किंगस्टन पहुंचे।

वहां भी गए, जहां भारतीयों के पड़े पहले कदम : जमैकन ग्लीनर अखबार में रविवार को प्रकाशित लेख में जयशंकर ने कहा, भारत-जमैका के बीच संबंध निरंतरता व बदलाव से प्रेरित हैं। 70 हजार भारतीय मूल के लोग दोनों देशों के बीच जीवंत सेतु का काम करता है।" जयंशकर ओल्ड हार्बर भी गए जहां 180 वर्ष पूर्व पहले भारतीय पहुंचे थे।

आस्ट्रिया ने जासूसी के आरोप में रूसी दूतावास के तीन कर्मियों को निकाला

वियना,एपी : आस्ट्रिया ने रूसी राजनयिक भवनों पर लगे एंटीना का उपयोग करके जासूसी करने के संदेह में रूसी दूतावास के तीन कर्मचारियों को निष्कासित कर दिया है।

विदेश मंत्रालय ने सोमवार को बताया कि आस्ट्रियाई अधिकारियों को संदेह है कि तीनों राजनयिक वियना में रूसी दूतावास और डोनौस्टाड जिले में एक राजनयिक परिसर की छतों पर लगे एंटीना का उपयोग करके जासूसी गतिविधियों में शामिल थे। ओआरएफ की रिपोर्ट के अनुसार, इन प्रतिष्ठानों की मदद से रूस वियना स्थित अंतरराष्ट्रीय संगठनों द्वारा उपग्रह इंटरनेट के माध्यम से भेजे गए डाटा को इंटरसेप्ट कर सकता था।

उल्लेखनीय है कि यूरोपीय देश आस्ट्रिया संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की कई एजेंसियों की मेजबानी करता है, जिनमें अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी, पेट्रोलियम निर्यातक देशों का संगठन और यूरोप में सुरक्षा और सहयोग संगठन शामिल हैं।

बांग्लादेश के साथ भारत जनकेंद्रित सहयोग चाहता है : प्रणय वर्मा

- बांग्लादेश के विदेश मंत्री से विदाई मुलाकात में बोले निवर्तमान भारतीय उच्चायुक्त प्रणय वर्मा
- भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण, आर्थिक साझेदारी पर दिया जोर; 'मैत्री समाज' के सदस्यों से भी मिले

प्रणय कुमार वर्मा। फाइल

ढाका, एएनआइः ढाका में भारत के निवर्तमान उच्चायुक्त प्रणय वर्मा ने सोमवार (चार मई) को बांग्लादेश के विदेश मंत्री खलीलुर रहमान से विदाई से पहले शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान उन्होंने द्विपक्षीय संबंधों की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए भारत की उस प्रतिबद्धता को दोहराया, जिसमें दोनों देशों के बीच 'जन-केंद्रित सहयोग' को प्राथमिकता दी गई है। वर्मा ने कहा, भारत, बांग्लादेश की सरकार और वहां की जनता संग मिलकर सभी क्षेत्रों में संबंधों को मजबूत करना चाहती है। यह सहयोग दोनों देशों की राष्ट्रीय विकास प्राथमिकताओं और आपसी लाभ पर आधारित होगा। उन्होंने विश्वास जताया कि दोनों देशों की नई क्षमताओं और आकांक्षाओं के साथ यह रिश्ता भविष्य में और प्रगाढ़ होगा।

इससे पहले, वर्मा ने 'इंडिया बांग्लादेश चैंबर आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री' के प्रतिनिधियों से भेंट के दौरान भौगोलिक निकटता को आर्थिक अवसरों में बदलने का आह्वान किया। व्यापारिक संबंधों को निवेश एवं मूल्य श्रृंखला एकीकरण में बदलने पर जोर दिया। वर्मा 'बांग्लादेश-भारत मैत्री समाज' के सदस्यों से भी मिले और कहा, दोनों देशों का साझा विजन भविष्योन्मुखी होना चाहिए। ज्ञात हो, वर्मा के स्थान पर अब दिनेश त्रिवेदी को बांग्लादेश में भारत का अगला उच्चायुक्त नियुक्त किया गया है।

अटलांटिक क्रूज पर हंटा वायरस से तीन की मौत, कई बीमार

- चूहों से फैलने वाला खतरनाक संक्रमण, एक मरीज अभी भी आइसीयू में

केपटाउन, एपीः अटलांटिक महासागर में सफर कर रहे एक क्रूज जहाज पर संदिग्ध हंटा वायरस संक्रमण ने दहशत फैला दी है। इस रहस्यमयी बीमारी से अब तक तीन लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि तीन अन्य बीमार हैं। डब्लयूएचओ व दक्षिण अफ्रीका के स्वास्थ्य विभाग ने कहा, एक मरीज की हालत गंभीर है। उसे जोहान्सबर्ग के अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जबकि दो अन्य संक्रमितों को जहाज से निकालने की कोशिश जारी है। डच कंपनी द्वारा संचालित यह क्रूज फिलहाल केप वर्डे तट के पास खड़ा है, जहां स्थानीय प्रशासन ने अभी किसी को जहाज से उतरने की अनुमति नहीं दी है। जहाज पर मौजूद दो गंभीर मरीज क्रू मेंबर बताए जा रहे हैं।

चूहों से फैलता है हंटा वायरसः हंटा वायरस दुर्लभ पर खतरनाक संक्रमण है, जो आमतौर पर चूहों और अन्य कृंतकों के मल-मूत्र के संपर्क से फैलता है। यह वायरस दो गंभीर बीमारियों का कारण बनता है एक जो फेफड़ों को प्रभावित करती है और दूसरी जो किडनी पर हमला करती है। यह बीमारी का कोई निश्चित इलाज नहीं है, हालांकि समय पर इलाज से जान बचाई जा सकती है। यह क्रूज करीब तीन हफ्ते पूर्व अर्जेंटीना से रवाना हुआ था, इसमें अंटार्कटिका व फाकलैंड द्वीप जैसे पड़ाव शामिल थे। जहाज का अंतिम गंतव्य स्पेन का कैनरी द्वीप था। पहला शिकार 70 वर्षीय व्यक्ति बना, जिसकी मौत जहाज पर ही हो गई। उसका शव सेंट हेलेना द्वीप पर उतारा गया। बाद में उसकी पत्नी की भी दक्षिण अफ्रीका में मौत हो गई, जब वह घर लौटने की कोशिश कर रही थी। एक अन्य ब्रिटिश नागरिक, जो जहाज पर बीमार हुआ था, फिलहाल दक्षिण अफ्रीका के अस्पताल में भर्ती है। इस जहाज पर करीब 150 यात्री और लगभग 70 क्रू सदस्य सवार थे। तीसरे मृतक का शव अभी भी जहाज पर मौजूद है।

मध्यावधि चुनाव से पहले डोनाल्ड ट्रंप की लोकप्रियता में गिरावट

वाशिंगटन, प्रेट्र : नवंबर में होने वाले मध्यावधि चुनाव से पहले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की समग्र अनुमोदन रेटिंग गिरकर 37 प्रतिशत हो गई है। वाशिंगटन पोस्ट-एबीसी न्यूज-इप्सोस द्वारा कराए गए सर्वे के अनुसार 66 प्रतिशत अमेरिकी आर्थिक मुद्दों से निपटने के उनके तरीके की सराहना नहीं करते हैं। सर्वे में कहा गया है कि ट्रंप को अमेरिका-मेक्सिको सीमा पर आव्रजन से निपटने के मामले में सबसे अच्छी रेटिंग मिली है। इस मुद्दे पर 45 प्रतिशत लोग उनकी नीतियों का समर्थन करते हैं, बड़ी संख्या में अमेरिकी नागरिकों का कहना है कि वे प्रमुख मुद्दों के समाधान के लिए किसी भी दल पर भरोसा नहीं करते हैं। आव्रजन के बारे में 23 प्रतिशत, अर्थव्यवस्था के बारे में 27 , अपराध के बारे में 28 व मुद्रास्फीति के बारे में 33 प्रतिशत ने यह बात कही है। 51 प्रतिशत का कहना है कि एआइ प्रबंधन के मामले में वे रिपब्लिकन व डेमोक्रेट दोनों पर भरोसा नहीं करते हैं।

यात्रा प्रतिबंध वाले देशों के डाक्टरों को अब अमेरिका में रहने की अनुमति

न्यूयार्क टाइम्स से

- ट्रंप प्रशासन ने चुपचाप किया अपनी नीति में बदलाव, पिछले सप्ताह के अंत में वेबसाइट को किया अपडेट

प्रतीकात्मक

वाशिंगटन : अमेरिका के डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन ने चुपचाप एक नीति में बदलाव किया है, जिसके तहत विदेशी डाक्टरों को यात्रा प्रतिबंध से छूट दी गई है। अब ये डाक्टर वीजा प्राप्त कर सकेंगे और अमेरिका में प्रैक्टिस कर सकेंगे।

जनवरी में लागू किए गए यात्रा प्रतिबंध से जुड़ी आंतरिक सुरक्षा विभाग की नीति के कारण 39 देशों (भारत शामिल नहीं) के नागरिकों के वीजा विस्तार, वर्क परमिट और ग्रीन कार्ड पर फैसले रोक दिए गए थे। इसके बाद कुछ डाक्टरों को अस्पतालों द्वारा प्रशासनिक छुट्टी पर भेज दिया गया था। कई अन्य को काम बंद करने के खतरे का सामना करना पड़ रहा था। पिछले हफ्ते के अंत में अमेरिकी नागरिकता,आव्रजन सेवाओं ने बिना औपचारिक घोषणा के वेबसाइट को अपडेट कर दिया। इसमें बताया गया कि डाक्टरों के वीजा प्रोसेसिंग पर लगी रोक अब हटा दी गई है। आंतरिक सुरक्षा विभाग ने एक बयान में कहा, डाक्टरों से जुड़े आवेदनों की प्रोसेसिंग जारी रहेगी। इसका अर्थ है कि एजेंसी डाक्टरों के लिए वीजा और वर्क परमिट जारी करना फिर शुरू करेगी। एसोसिएशन आफ अमेरिकन मेडिकल कालेजेज के अनुसार, अमेरिका में लगभग 65,000 डाक्टरों की कमी है। अगले दशक में यह कमी और बढ़ने की उम्मीद है क्योंकि अमेरिकी अब अधिक समय तक जीते हैं और अधिक डाक्टर रिटायर हो रहे हैं।

सद्दाम की पार्टी का प्रचार करने वाले चार लोगों को छह-छह साल की सजा

बगदाद, एपी : इराक की एक अदालत ने पूर्व तानाशाह सद्दाम हुसैन की प्रतिबंधित बाथ पार्टी के विचारों को बढ़ावा देने के आरोप में चार लोगों को छह-छह साल की सजा सुनाई है। कर्ख आपराधिक अदालत के मुताबिक, इन लोगों के मोबाइल फोन में बाथ पार्टी से जुड़ी प्रतिबंधित सामग्री मिली थी। यह मामला किर्कुक प्रांत में 2025 और 2026 के दौरान सामने आया। अदालत ने साफ किया कि प्रतिबंधित संगठन के प्रचार से जुड़े किसी भी तरह के सबूत को गंभीर अपराध माना जाएगा और ऐसे मामलों में सख्ती बरती जाएगी। ज्ञात हो, अमेरिकी हमले के बाद इराक में सद्दाम सरकार का पतन हो गया था। इसके बाद अमेरिका प्रशासन ने वहां नई सरकार का गठन कराया था, जिसने सद्दाम हुसैन की बाथ पार्टी पर प्रतिबंध लगा दिया था। साथ ही इस संबंध में डीबाथिफिकेशन नीति लागू कर दी थी। इसके तहत सद्दाम समर्थक बहुत से सरकारी कर्मियों को नौकरी से निकाल दिया गया था।

दैनिक जागरण आइपीएल 19

धूम धड़ाका

www.jagran.com मंगलवार 5 मई, 2026

बल्लेबाज	रन
अभिषेक शर्मा	440
केएल राहुल	433
हेनरिक क्लासिन	425

गेंदबाज	विकेट
भुवनेश्वर कुमार	17
अंशुल कंबोज	17
कैगिसो रबादा	16

मुंबई ने बंद किए लखनऊ के लिए प्लेआफ के द्वार

रोहित-रिकल्टन ने जड़े अर्धशतक से मुंबई छह विकेट से जीता सातवीं हार के साथ लखनऊ की उम्मीदें लगभग समाप्त

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली: प्लेआफ की दौड़ से बाहर हो चुकी मुंबई इंडियंस ने सोमवार को लखनऊ सुपर जायंट्स को छह विकेट से हरा दिया। इस हार के साथ ही रिषभ पंत की अगुआई वाली लखनऊ की टीम के लिए प्लेआफ के रास्ते लगभग बंद हो गए हैं। मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में लखनऊ ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निकोलस पूरन (63) की तूफानी अर्धशतकीय पारी के दम पर 228 रन का स्कोर खड़ा किया था, जिसके जवाब में रोहित शर्मा (84) और रियान रिकल्टन (83) के अर्धशतकों के दम पर मुंबई ने चार विकेट पर 229 रन बनाकर मैच अपने नाम किया। लखनऊ की नौ मैचों में यह सातवीं हार है और अब उसके लिए अंतिम चार की दौड़ समाप्त हो चुकी है। अगर वह अपने बाकी पांच मैच जीत भी ले तो भी उसके अधिकतम 14 अंक होंगे और इतना उसे प्लेआफ में पहुंचाने के लिए पर्याप्त नहीं होगा।

रोहित-रिकल्टन का दोहरा वार: इस मैच में मुंबई के नियमित कप्तान हार्दिक पांड्या कमर में ऐंठन के कारण खेलने नहीं उतरे और सूर्यकुमार यादव ने कप्तानी की। वहीं रोहित शर्मा की वापसी हुई, जिन्होंने रिकल्टन के साथ मिलकर लक्ष्य का पीछा करने उतरी मुंबई को तूफानी शुरुआत दिलाई। रिकल्टन ने शमी पर दो चौकों के साथ शुरुआत की जबकि मोहसिन खान पर भी छक्का जड़ा। रिकल्टन और रोहित ने शमी के अगले ओवर में भी छक्के मारे। रोहित ने आवेश की लगातार गेंदों पर दो चौकों और दो छक्कों के साथ पावर प्ले में टीम का स्कोर बिना विकेट खोए 71 रन तक पहुंचाया। रोहित और रिकल्टन ने एम सिद्धार्थ का स्वागत भी छक्के के साथ किया। रिकल्टन ने आवेश पर छक्के और एक रन के साथ 22 गेंद में अर्धशतक पूरा किया जबकि रोहित ने अगले ओवर में सिद्धार्थ पर छक्के के साथ 27 गेंद में अर्धशतक जड़ने के साथ नौवें ओवर में टीम के रनों का सैकड़ा भी पूरा किया।

लखनऊ सुपर जायंट्स के विरुद्ध मुकाबले में शाट लगाते मुंबई इंडियंस के बल्लेबाज रोहित शर्मा • एपी

रिकल्टन ने 11वें ओवर में मोहसिन की गेंदों पर दो छक्के और एक चौका मारा लेकिन इसी ओवर में जोश इंग्लिस को कैच दे बैठे। रिकल्टन के आउट होने के बावजूद रोहित ने आक्रामक रुख जारी रखा और शमी तथा आवेश पर छक्के जड़े। वह हालांकि इसके बाद बाएं हाथ के स्पिनर सिद्धार्थ की गेंद पर शमी को कैच दे बैठे।

मुंबई इंडियंस को अंतिम पांच ओवर में जीत के लिए 42 रन की दरकार थी। सिद्धार्थ ने तिलक वर्मा (11) को डीप एक्सट्रा कवर पर मार्करैम हाथों कैच कराके सुपर जाइंट्स को वापसी दिलाने की कोशिश की। एक गेंद बाद नमन धीर भाग्यशाली रहे जब सिद्धार्थ की गेंद पर कवर्स में इंग्लिस ने उनका कैच टपका दिया। इसका फायदा उठाते हुए नमन ने प्रिंस यादव पर लगातार दो चौके मारे और फिर शमी पर भी छक्का जड़ा। कप्तान सूर्यकुमार 12 रन बनाने के बाद शमी की गेंद पर डीप स्क्वायर लेग पर पूरन के हाथों लपके गए। मुंबई को आखिरी दो ओवर में 11 रन की जरूरत थी और नमन (23) ने विल जैक्स (10) के साथ मिलकर टीम को जीत दिला दी।

आखिरकार चला पूरन का बल्ला, 16 गेंद में जड़ा पचासा: इससे पहले आठ पारियों के बाद आखिरकार निकोलस पूरन के बल्ले से रन निकले। पूरन ने केवल 21 गेंदों में 63 रनों की तूफानी पारी खेली और 16 गेंद में अर्धशतक पूरा किया। इससे पहले पूरन ने आठ पारियों में केवल 82 रन ही बना पाए थे, लेकिन सोमवार को पूरन ने मुंबई इंडियंस के गेंदबाजों की खराब लाइन-लेंथ का पूरा फायदा उठाते हुए आन साइड पर आठ छक्के और एक चौका जड़ा। इस दौरान मुंबई की गेंदबाजी इस दौरान बिखरी हुई नजर आई। जसप्रीत बुमराह न सिर्फ विकेट लेने में नाकाम रहे बल्कि तीन बार नो बाल भी फेंकी, जिससे दबाव और बढ़ गया।

स्कोर बोर्ड

लखनऊ सुपर जायंट्स: 228/5 (20 ओवर)

	रन	गेंद	4/6
मिशेल का. नमन बो. बाश	44	25	4/3
इंग्लिश का. सूर्य बो. गजनफर	13	5	3/0
पूरन का. रिकल्टन बो. बाश	63	21	1/8
पंत का. रिकल्टन बो. जैक्स	15	10	1/1
मार्करैम अविजित	31	25	1/1
अक्षत का. एंड बो. रघु	11	7	0/1
हिम्मत अविजित	40	31	2/2

अतिरिक्त : 11 (वा: 7, नोबा: 4) विकेटपतन: 1-29 (इंग्लिश, 2.3), 2-123 (पूरन, 8.1), 3-125 (मार्श, 8.5), 4-148 (पंत, 10.4), 5-160 (अक्षत, 12.1) गेंदबाजी: दीपक 4-0-43-0, बुमराह 4-0-45-0, गजनफर 4-0-50-1, जैक्स 2-0-34-1, बाश 2-0-20-2, रघु 4-0-36-1

मुंबई इंडियंस: 229/4 (18.4 ओवर)

	रन	गेंद	4/6
रिकल्टन का. इंग्लिश बो. मोहसिन	83	32	6/8
रोहित का. शमी बो. सिद्धार्थ	84	44	6/7
तिलक का. मार्करैम बो. सिद्धार्थ	11	13	0/0
सूर्यकुमार का. पूरन बो. शमी	12	7	2/0
नमन अविजित	23	12	3/1
जैक्स अविजित	10	4	0/1

अतिरिक्त : 6, विकेटपतन: 1-143 (रियान, 10.5), 2-177 (रोहित, 13.6), 3-189 (तिलक, 15.3), 4-213 (सूर्य, 17.4), गेंदबाजी: शमी 4-0-53-1, मोहसिन 4-0-43-1, प्रिंस 3-0-24-0, आवेश 3.4-0-56-0, सिद्धार्थ 4-0-47-2

अंक तालिका		मैच	जीत	हार	रद	नेट रन रेट	अंक
1	पंजाब	9	6	2	1	+0.855	13
2	आरसीबी	9	6	3	0	+1.420	12
3	हैदराबाद	10	6	4	0	+0.644	12
4	राजस्थान	10	6	4	0	+0.510	12
5	गुजरात	10	6	4	0	-0.147	12
6	चेन्नई	9	4	5	0	+0.005	8
7	दिल्ली	9	4	5	0	-0.895	8
8	कोलकाता	9	3	5	1	-0.539	7
9	मुंबई	10	3	7	0	-0.649	6
10	लखनऊ	9	2	7	0	-1.076	4

सीएसके के विरुद्ध जीत से ही बनेगी दिल्ली की बात

लोकेश शर्मा • जागरण

नई दिल्ली: आइपीएल में मंगलवार को दिल्ली कैपिटल्स के सामने पांच बार की चैंपियन चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के खिलाफ करो या मरो की स्थिति है। प्लेआफ की दौड़ में बने रहने के लिए दिल्ली के लिए यह मुकाबला बेहद अहम हो गया है। टीम ने अब तक नौ मैचों में सिर्फ आठ अंक जुटाए हैं और पांच हार के कारण तालिका में सातवें स्थान पर खिसक गई है। आज की हार उसके प्लेआफ के रास्ते को लगभग बंद कर सकती है।

दूसरी ओर चेन्नई सुपर किंग्स के भी इतने ही अंक हैं, लेकिन बेहतर रन रेट के चलते वह छठे स्थान पर काबिज है। इस बीच दिल्ली के प्रशंसकों के लिए एक बड़ी खबर यह है कि पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धौनी इस मुकाबले के लिए दिल्ली नहीं आए हैं। वह फिलहाल चेन्नई में ही रिहैब कर रहे हैं, जिससे उनके इस मैच में खेलने की संभावना खत्म हो गई है। धौनी की गैरमौजूदगी से जहां सीएसके की रणनीति प्रभावित हो सकती है, वहीं दर्शकों में भी निराशा देखने को मिल सकती है।

दिल्ली कैपिटल्स के लिए एक और चुनौती उसका घरेलू प्रदर्शन रहा है। अरुण जेटली स्टेडियम में टीम को अब तक सिर्फ एक जीत मिली है, जबकि गुजरात टाइटंस, पंजाब किंग्स और रायल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ हार झेलनी पड़ी है। हालांकि टीम ने अपने पिछले मैच में राजस्थान रायल्स को हराकर आत्मविश्वास जरूर हासिल किया है। पिछली बार जब ये दोनों टीमें भिड़ी थीं तो चेन्नई ने दिल्ली को 23 रनों से हराया था, ऐसे में दिल्ली की नजर बदला लेने पर भी रहेगी। अब देखना होगा कि घरेलू मैदान पर दिल्ली दबाव से उबरकर जीत हासिल कर पाती है या नहीं, क्योंकि इस मैच का नतीजा उसके पूरे सीजन की दिशा तय कर सकता है।

दिल्ली की तरह सीएसके भी नाजुक स्थिति में है और अगर वे इस मैच में जीत हासिल नहीं कर पाते हैं तो फिर उनका प्लेऑफ की दौड़ से बाहर होना तय हो जाएगा। कप्तान रुतुराज गायकवाड़ सत्र के शुरू में रन बनाने के लिए जूझ रहे थे जिससे टीम को काफी नुकसान हुआ। ऐसे में संजू सैमसन ने अकेले ही सारा भार संभाला। लेकिन गायकवाड अब फार्म में लौट आए हैं। उन्होंने पिछले दो मैचों में अर्धशतक लगाए। मुंबई इंडियंस के विरुद्ध खेली गई उनकी 12 गेंदों में 14 रन की पारी उन्हें आत्मविश्वास देगी।

रुतुराज गायकवाड़ अक्षर पटेल

धौनी पर अपडेट देना मेरे वेतन ग्रेड से ऊपर: एरिक सिमंस

नई दिल्ली, प्रेट्र: चेन्नई सुपर किंग्स के गेंदबाजी कोच एरिक सिमंस ने सोमवार को कहा कि महेंद्र सिंह धौनी दिल्ली कैपिटल्स के विरुद्ध होने वाले मैच के लिए यात्रा नहीं कर पाए हैं। वह पिंडली की चोट से उबर रहे हैं। सीएसके ने अब तक 10 मैच खेले हैं, लेकिन प्रशंसकों का धौनी को मैदान पर देखने का इंतजार समाप्त नहीं हुआ है। सिमंस से धौनी की उपलब्धता को लेकर प्रश्न पूछा गया तो उन्होंने कहा कि धौनी के बारे में अपडेट मेरे वेतन ग्रेड से ऊपर है।

खेल डायरी

20 साल बाद पाक खिलाड़ी बना सिंगल्स चैंपियन

नई दिल्ली, प्रेट्र: एक समय चप्पलों में और सलवार-कमीज पहनकर टेनिस का अभ्यास करने वाले मुहम्मद शोएब ने देश का 20 सालों का सिंगलस खिताब का सूखा खत्म कर दिया है। रविवार को इस्लामाबाद में पाकिस्तान में आइटीएफ फ्यूचर्स खिताब जीतकर 20 वर्षीय शोएब देश के नए टेनिस चैंपियन और स्टार बनकर उभरे। टेनिस के अभ्यास के शुरुआती दिनों में शोएब के लिए परिवार की जूते और टेनिस किट खरीदने की उनकी आर्थिक स्थिति नहीं थी। कई बार उनके पुराने जूतों के तलवे फटने की वजह से पैरों में छाले पड़ते और खून तक निकल आता था। लेकिन अब वह देश के इतिहास में इस उपलब्धि को हासिल करने वाले सिर्फ तीसरे खिलाड़ी बन गए हैं। उनसे पहले 2007 में अकील खान ने लाहौर में फ्यूचर्स टूर्नामेंट जीता था, जबकि उसी साल ऐसाम-उल-हक कुरैशी ने दिल्ली में चैलेंजर खिताब अपने नाम किया था।

मुहम्मद शोएब • प्रेट्र

हाकी गोलकीपरों ने विशेष शिविर में लिया भाग

बेंगलुरु, प्रेट्र: भारतीय महिला हाकी टीम की गोलकीपर सविता, बिचू देवी खारिबाम, बंसरी सोलंकी और माधुरी किंडो ने आयरलैंड के डेविड विलियमसन द्वारा आयोजित एक विशेष गोलकीपिंग शिविर में हिस्सा लिया। यह शिविर मुख्य कोच शोर्ड मारिन की देखरेख में आयोजित किया गया था और दो मई को बेंगलुरु के साइ (भारतीय खेल प्राधिकरण) केंद्र में समाप्त हुआ। कोका-कोला इंडिया फाउंडेशन के 'आनंदना' के सहयोग से आयोजित यह 11 दिवसीय शिविर 22 अप्रैल को शुरू हुआ था, जिसमें गोलकीपरों को केंद्रित और उच्च-प्रदर्शन वाला प्रशिक्षण दिया गया। विलियमसन उत्तरी आयरलैंड के एक अत्यंत अनुभवी फील्ड हाकी कोच और पूर्व खिलाड़ी हैं। वह गोलकीपिंग विशेषज्ञ हैं। उन्होंने अमेरिकी महिला टीम के साथ भी काफी काम किया है।

चोटिल फिल साल्ट स्कैन कराने के लिए इंग्लैंड लौटे

आइपीएल डायरी

नई दिल्ली, प्रेट्र: गत चैंपियन रायल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के आरंभिक बल्लेबाज फिल साल्ट पिछले महीने अंगुली में लगी चोट का स्कैन कराने के लिए इंग्लैंड लौट गए हैं। इस चोट के कारण साल्ट आरसीबी के पिछले तीन मैचों में नहीं खेल पाए थे। उनकी जगह उनके हमवतन जैकब बेथेल ने विराट कोहली के साथ पारी की शुरुआत की थी। 29 वर्षीय साल्ट 18 अप्रैल को एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में दिल्ली कैपिटल्स के विरुद्ध मैच के दौरान डीप बैकवर्ड स्क्वायर लेग पर बाउंड्री बचाने के लिए डाइव लगाते समय चोटिल हो गया था। उनकी बाएं हाथ की अंगुली में चोट लग गई थी।

इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) से अनुबंधित साल्ट इंग्लैंड के टीम प्रबंधन के अनुरोध पर स्वदेश लौट गए हैं और उनकी अंगुली का स्कैन किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार आरसीबी और साल्ट दोनों को उम्मीद है कि वह जल्द फिट हो जाएंगे और वह इस महीने बाद में भारत लौट सकते हैं। साल्ट ने मौजूदा आइपीएल में छह पारियों में 168.33 के स्ट्राइक रेट से 202 रन बनाए थे। आरसीबी फिलहाल पंजाब किंग्स के बाद अंक तालिका में दूसरे स्थान पर चल रहा है।

फिल साल्ट • फाइल फोटो

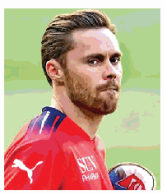

टाइटंस किसी एक खिलाड़ी पर निर्भर नहीं: जेसन होल्डर

अहमदाबाद : जेसन होल्डर का मानना है कि गुजरात टाइटंस ने अभी तक अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं किया है लेकिन इसके बावजूद वह मैच जीत रहा है और आइपीएल के प्लेआफ में जगह बनाने की दौड़ में बना हुआ है। होल्डर ने पंजाब किंग्स के खिलाफ चार विकेट लेकर गुजरात की पांच विकेट से जीत में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने इस बात पर खुशी व्यक्त की कि टीम व्यक्तिगत प्रदर्शन के बजाय सामूहिक प्रयास से जीत हासिल कर रही है।

एशियन मुक्केबाजी में भारतीय खिलाड़ियों ने बनाया दबदबा

ताशकंद, प्रेट्र: भारत के युवा मुक्केबाजों ने सोमवार को एशियन मुक्केबाजी अंडर-15 और अंडर-17 चैंपियनशिप 2026 में लगातार शानदार प्रदर्शन करते हुए अधिकांश भार वर्ग में अपना दबदबा बनाए रखा। अंडर-17 लड़कों की प्रतियोगिता में यादव यश (50किग्रा) ने तुर्कमेनिस्तान के सुलेमान अहमदोव पर 5-0 से शानदार जीत हासिल की, जबकि करुणा अल्बर्टसन कोम (60किग्रा) ने ताजिकिस्तान के अली नजराव के विरुद्ध 4-1 से जीत दर्ज कर सबको प्रभावित किया।

गोपाल रामेश्वर गणेशे (52किग्रा) का मुकाबला काफी कड़ा रहा, लेकिन वे ताजिकिस्तान के नजराव दामिर से 2-3 के मामूली अंतर से हार गए। मिश्रा प्रशांत (57 किग्रा) का सामना चीन के तांगजी लियू जैसे कड़े प्रतिद्वंद्वी से हुआ और वे 0-5 से हार गए। अंडर-15 लड़कियों के क्वार्टरफाइनल में खुशी राणा (49 किग्रा) ने शानदार प्रदर्शन करते हुए वियतनाम की थी नगोक ट्रक गुयेन के विरुद्ध पहले राउंड में ही आरसीएस से जीत हासिल की, जबकि हंसिका अत्री (46 किग्रा) ने उज्बेकिस्तान की विसोला बख्तियारोवा को 5-0 हराया, नित्या पांडे (55 किग्रा) ने कड़ा मुकाबला किया, लेकिन उन्हें हार मिली।

विश्व कप में होगी तीरंदाजों की कड़ी परीक्षा

जापान में होने वाले एशियाई खेलों से पहले आत्मविश्वास, लय पाने के लिए आज से शंघाई में विश्व कप में शिरकत करेंगे भारतीय तीरंदाज

शंघाई, प्रेट्र : भारतीय तीरंदाज मंगलवार से शुरू होने वाले विश्व कप के दूसरे चरण में खराब योजना, दिशाहीनता और पूर्णकालिक विदेशी कोच की अनुपस्थिति से घिरे माहौल में उतर रही है। इस विश्व कप में मजबूत टीमों की मौजूदगी और इस साल होने वाले एशियाई खेलों को देखते हुए भारत की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। जापान के ऐची-नागोया में 19 सितंबर से चार अक्टूबर तक होने वाले एशियाई खेल तेजी से नजदीक आ रहे हैं, लेकिन भारत की तैयारी बिल्कुल भी भरोसेमंद नहीं दिख रही है। युआनशेन स्पोर्ट्स सेंटर में कुल 320 तीरंदाज भाग लेंगे, जो पिछले वर्ष से 48 अधिक हैं।

सत्र की शुरुआत मेक्सिको में हुए विश्व कप के पहले चरण से हुई, जहां भारतीयों का प्रदर्शन निराशाजनक रहा। भारत के लिए एकमात्र सकारात्मक पहलू महिलाओं की कंपाउंड टीम का स्वर्ण पदक था। दक्षिण कोरिया जैसी दिग्गज टीम की अनुपस्थिति के बावजूद भारतीय रिकर्व तीरंदाज उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे। यह प्रदर्शन हकीकत का आईना साबित हुआ, जहां तरुणदीप राय, अतनु दास, धीरज बोम्मादेवरा, दीपिका कुमारी और अंकिता भकत जैसे बड़े नाम भी पदक दौर तक नहीं पहुंच सके। पुरुष रिकर्व टीम पहले ही दौर में बाहर हो गई। महिला टीम ने शुरुआती मुकाबला जीता, लेकिन क्वार्टर फाइनल में तुर्की से हार गई। व्यक्तिगत स्पर्धा में देश की सबसे सफल तीरंदाज दीपिका कुमारी दूसरे दौर में ही बाहर हो गईं, जबकि अंकिता, सिमरनजीत कौर और कुमकुम मोहोड़ तीसरे दौर से आगे नहीं बढ़ सकीं। भारत की उम्मीदें एक बार फिर कंपाउंड तीरंदाजों पर टिकी होंगी। ये देश के लिए अधिक पदक जीतना चाहेंगे। महिला टीम की अगुवाई ज्योति सुरेखा वेन्नम करेंगी, जिन्हें अदिति स्वामी और मधुरा धमांगांवकर का साथ मिलेगा। पुरुष वर्ग में अभिषेक वर्मा, ओजस देवताले और कुशल दलाल से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद होगी।

भारतीय टीम: तरुणदीप राय, अतनु दास, धीरज बोम्मादेवरा और यशदीप भोगे (पुरुष रिकर्व), दीपिका कुमारी, अंकिता भकत, सिमरनजीत कौर और कुमकुम मोहोड़ (रिकर्व महिला), अभिषेक वर्मा, कुशल दलाल, ओजस देवताले और साहिल जाधव (पुरुष कंपाउंड), ज्योति सुरेखा वेन्नम, अदिति स्वामी, प्रगति और मधुरा धमांगांवकर (महिला कंपाउंड)।

दीपिका कुमारी

धीरज बोम्मादेवरा

फ्रेंच ओपन की पुरस्कार राशि पर शीर्ष खिलाड़ियों ने जताई नाखुशी

24 मई से शुरू होगा साल का दूसरा ग्रैंडस्लैम, खिलाड़ियों ने कहा, राशि में उनका हिस्सा घटा

पेरिस, एपी: नोवाक जोकिवक, जानिक सिनर, एरिना सबालेंका और कोको गफ समेत कई शीर्ष खिलाड़ियों ने फ्रेंच ओपन टेनिस टूर्नामेंट की पुरस्कार राशि को लेकर गहरी निराशा व्यक्त की है। वर्ष का दूसरा ग्रैंडस्लैम फ्रेंच ओपन पेरिस में 24 मई से शुरू होगा। खिलाड़ियों का कहना है कि उनकी कई मांगों पर अब भी आयोजकों ने ध्यान नहीं दिया है। इनमें बेहतर प्रतिनिधित्व, स्वास्थ्य और पेंशन शामिल हैं।

खिलाड़ियों की यह मांग तब आई जब फ्रेंच ओपन के आयोजकों ने पिछले महीने घोषणा की थी कि रोलां गैरां पर खेले जाने वाले टूर्नामेंट की पुरस्कार राशि में लगभग 10 प्रतिशत बढ़ोतरी की गई है, जिससे कुल पुरस्कार राशि 61.7 मिलियन यूरो (लगभग 686 करोड़ रुपये) हो गई है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 5.3 मिलियन यूरो अधिक है। खिलाड़ियों ने सोमवार को जारी संयुक्त बयान में कहा, 'फ्रेंच ओपन टूर्नामेंट के राजस्व में खिलाड़ियों की हिस्सेदारी 2024 में 15.5 प्रतिशत से घट गई है और 2026 में इसके 14.9 प्रतिशत रहने की संभावना है। पुरुष और महिला सिंगल्स चैंपियन 28 लाख यूरो (लगभग 31.5 करोड़ रुपये) और उपविजेता खिलाड़ियों को 14 लाख यूरो (15.5 करोड़ रुपये) मिलेंगे। सेमीफाइनल में पहुंचने वालों को 7.5 लाख यूरो (8.34 करोड़ रुपये) जबकि पहले दौर में हारने वाले खिलाड़ियों को 87000 यूरो (96 लाख रुपये) मिलेंगे। पुरुष और महिला डबल्स विजेताओं को छह लाख यूरो (6.5 करोड़ रुपये) और मिक्स्ड डबल्स चैंपियन को 1,22,000 यूरो (1.35 करोड़ रुपये) मिलेंगे।

हार्डी के आलरांउड प्रदर्शन से पेशावर बना पीएसएल चैंपियन

लाहौर, एपी: आरोन हार्डी के आलराउंड प्रदर्शन के दम पर पेशावर जाल्मी ने हैदराबाद किंग्समेन को फाइनल में पांच विकेट से हराकर 2017 के बाद पहली बार पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) क्रिकेट टूर्नामेंट का खिताब जीता। हार्डी ने 27 रन देकर चार विकेट लिए, जिससे पेशावर ने हैदराबाद को 18 ओवर में केवल 129 रन पर आउट कर दिया। जवाब में पेशावर की तरफ से साइम अयूब (54) ने जुझारू अर्धशतक बनाया और इसके बाद हार्डी ने 39 गेंदों पर 56 रन की नाबाद पारी खेली। जिससे पेशावर ने गद्दाफी स्टेडियम में खेले गए फाइनल में 15.2 ओवर में पांच विकेट पर 130 रन बनाकर जीत दर्ज की। पेशावर की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने अपने चार विकेट 40 रन पर खो दिए। इसके बाद हार्डी ने अब्दुल समद (46) के साथ पांचवें विकेट के लिए 85 रन की साझेदारी करके अपनी टीम को जीत दिलाई।

आर्सेनल और फाइनल के बीच एटलेटिको की कड़ी चुनौती

लंदन, एपी: लंदन के प्रतिष्ठित एमिरेट्स स्टेडियम में यूएफा चैंपियंस लीग में मंगलवार रात सेमीफाइनल के दूसरे चरण में आर्सेनल का सामना एटलेटिको मैड्रिड से होगा, जहां ये दोनों टीमें फाइनल में जगह बनाने उतरेंगी। सेमीफाइनल का पहला चरण 1-1 से बराबरी पर समाप्त हुआ था, जहां विक्टर ग्योकेरस और जूलियन अल्वारेज ने पेनाल्टी के जरिए गोल किए थे। ऐसे में दूसरे चरण में मुकाबला और भी रोमांचक होने की उम्मीद है।

आर्सेनल को इस मैच में घरेलू मैदान का फायदा मिलेगा। हालांकि हालिया फार्म मिलाजुला रहा है, जहां पिछले पांच मैचों में टीम ने दो जीत दर्ज की है और इंग्लिश प्रीमियर लीग में मैनचेस्टर सिटी से हार झेलनी पड़ी। इसके बावजूद कोच मिकेल अर्टेटा के पास इतिहास रचने का सुनहरा मौका है। आर्सेनल पिछले दो सीजन से सेमीफाइनल तक पहुंच रहा है, लेकिन खिताब से दूर रहा है। इस बार 20 साल बाद टीम को फाइनल में पहुंचाने का सपना उनके सामने है। दूसरी ओर, एटलेटिको मैड्रिड का सफर भी आसान नहीं रहा है। टीम ने नाकआउट चरण में क्लब ब्रुग, टाटनहैम हाटस्पर और बार्सिलोना जैसी मजबूत टीमों को हराकर यहां तक का सफर तय किया है। एलेक्जेंडर सोरलोथ और जूलियन अल्वारेज शानदार फार्म में हैं। कोच डिएगो सिमोन की टीम 2016 के बाद पहली बार फाइनल में पहुंचने का सपना देख रही है।

सेमीफाइनल दूसरा लेग
आर्सेनल vs एटलेटिको मैड्रिड
रात 12:30 बजे | स्थानः लंदन
सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क

आर्सेनल के विक्टर गियोकेरेस • एपी

एटलेटिको के ग्रीजमैन • एएफपी

इंटर मिलान ने जीता सीरी ए खिताब

मिलान, एपी: इंटर मिलान ने परमा को 2-0 से हराकर तीन दौर के मैच शेष रहते ही इटालियन लीग फुटबाल टूर्नामेंट सीरी-ए का खिताब अपने नाम कर लिया। इंटर मिलान को ट्राफी हासिल करने के लिए केवल एक ड्रा की जरूरत थी। मार्कस थुरम और हेनरिक मखितार्यान ने एक-एक गोल किया। इंटर मिलान से इस जीत से दूसरे स्थान पर काबिज नेपोली पर 12 अंकों की अजेय बढ़त बना ली है। यह इंटर मिलान का 21वां सीरी ए खिताब है। वह सर्वाधिक खिताब जीतने के मामले में युवेंटस (36) के बाद दूसरे स्थान पर है। इंटर मिलान की तरफ से पहला गोल पहले हाफ के समाप्त होने से ठीक पहले मार्कस थुरम ने किया। वहीं 37 वर्षीय हेनरिक मखितार्यान ने 80वें मिनट लीग के शीर्ष गोल स्कोरर लोटारो मार्टिनेज के पास पर मुकाबले का दूसरा गोल दागा। इंटर अब 10 दिन के बाद इटालियन कप के फाइनल में लाजियो का सामना करेगा।

इंटर मिलान की टीम • एएफपी

क्रिकेट और स्पोर्ट्स की अन्य खबरों के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

जीवन दर्शन

श्री श्री रवि शंकर
आर्ट आफ लिविंग के प्रणेता, आध्यात्मिक गुरु

करुणा और समर्पण की शक्ति मां

मातृत्व के भाव को विस्तार देने पर समूचा जगत अपना अनुभव होता है। यह भाव सबसे प्रेम करने और दूसरों के प्रति करुणा के लिए प्रेरित करता है। मातृ दिवस (10 मई) पर विशेष...

आदि शंकराचार्य का कथन है कि पुत्र कुपुत्र हो सकता है लेकिन माता कभी कुमाता नहीं होती। यह इस सत्य को रेखांकित करता है कि मातृत्व का मूल स्वभाव करुणा और समर्पण है। यह वह शक्ति है, जो समाज को जोड़ती है, विविधताओं को समाहित कर लेती है और मतभेदों के बीच संतुलन बनाती है।

मातृत्व का वास्तविक अर्थ दूसरों के लिए सर्वश्रेष्ठ की कामना करना है। माताओं के पास सृजन करने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की अद्भुत क्षमता होती है। मातृत्व की मिठास इतनी प्रबल होती है कि मां जो कुछ भी कहती है, हम उसे सहजता से स्वीकार कर लेते हैं। मां परिवार में भावनात्मक संतुलन बनाए रखती है। उसकी प्रसन्नता 'पाने' में नहीं, वरन 'देने' में निहित होती है।

मातृत्व का भाव यह नहीं है कि 'यह संतान मेरी है' क्योंकि मैंने इसे जन्म दिया है। मातृत्व का भाव अवसर प्रदान करता है कि आप सभी से अपनत्व का भाव अनुभव करें। मातृत्व के भाव को विस्तार देने पर समूचा जगत ही अपना प्रतीत होता है। यह भाव मानवता के लिए योगदान देने को प्रेरित करता है। जिस तरह मां अपने बच्चे का पोषण करती है, उसी तरह प्रकृति भी हमें संजोती है। धरती हमें जन्म देती है, पालन-पोषण करती है और अंततः हमें अपने भीतर समाहित कर लेती है। हमारे यहां ईश्वर को आद्यशक्ति मां के रूप में देखा जाता है, जो करुणामयी, प्रेमपूर्ण, क्षमाशील प्रेम करने वाली हैं। आद्य शक्ति यानी मूल ऊर्जा को मां माना गया, जिससे ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि की उत्पत्ति हुई।

मातृत्व का अंतिम और सबसे गहरा रहस्य जीवन की नश्वरता को स्वीकार करने में है। जब जीवन को प्रेम, सेवा और संतुलन के साथ पूर्णता में जिया जाता है, तब मृत्यु का भय नहीं रह जाता है। मातृत्व उस अनंत प्रेम का अनुभव है, जो निरंतर बहता रहता है- कभी त्याग के रूप में, तो कभी असीम आनंद के रूप में। मातृत्व का सार है- अपने भीतर उस भाव को जीवित रखना, जो बिना शर्त देता है, जोड़ता है और हर परिस्थिति में जीवन को थोड़ा और मानवीय बना देता है। मांएं घर, समुदाय, समाज और पूरी दुनिया में शांति स्थापित करने का सामर्थ्य रखती हैं।

लेख विस्तार से पढ़ने के लिए स्कैन करें।

अध्यात्म की अन्य सामग्री पढ़ने के लिए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

सप्ताह के व्रत त्योहार

पांच मई, मंगलवार : ज्येष्ठ मास का प्रथम मंगल, बड़ा मंगल
10 मई, रविवार : श्री शीतलाष्टमी व्रत

इस पेज पर आपकी सम्मति और सुझावों का स्वागत है-
feature@jagran.com

भाव-चिंतन

स्वामी मैथिलीशरण
संस्थापक अध्यक्ष, श्रीरामकिंकर विचार मिशन

सहज योग में स्थित श्रीराम भक्त हनुमान जी

हनुमान जी का जीवन सहजयोग में स्थित है। समाधि तो उन साधकों के लिए है, जिन्हें कुछ बाहर छोड़ना है और समाधि में जाकर कुछ अद्भुत प्राप्त करना है, पर हनुमान जी का सहज स्वरूप ही उस अखंड, व्यापक, अनंत रूप राम को पाकर धन्य है, जिसके कारण उनके अंत:करण में पाने और छोड़ने का संकल्प-विकल्प कभी आता ही नहीं है। ज्येष्ठ मास के प्रथम मंगलवार पर विशेष...

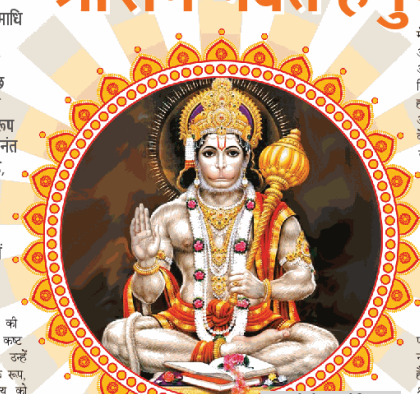

हनुमान जी की कृपा भरी चितवन-दृष्टि सब प्रकार का मंगल करती है। ● चित्र सौ.: जागरण आर्काइव

हनुमान जी, प्राणायाम की पूरक क्रिया से भक्तों के कष्ट अपने भीतर लेकर उन्हें कष्टमुक्त कर देते हैं। वे प्रभु के रूप, गुण, करुणा, कृपा और वात्सल्य को अंदर लेकर अहं ब्रह्मास्मि वृत्ति के द्वारा 'कुंभक' क्रिया करते हैं। राम नाम का उद्घोष कर भक्तों को पूर्ण कर 'रेचक' क्रिया करते हैं तथा लंका दहन के पश्चात अट्टहास कर 'रेचक' क्रिया पूर्ण करते हैं। गुणों को लेना और दोषों को समाप्त करना। जीवन में प्राणायाम की इसी प्रक्रिया से हमें भी अपने चित्त को पवित्र कर दुर्वृत्तियों को समाप्त करना होगा। हनुमान जी का जीवन सहजयोग में स्थित है।

समाधि तो उनके लिए है, जिन्हें समाधि में जाने के लिए कुछ छोड़ना है और समाधि में जाकर कुछ पाना है, पर हनुमान जी तो व्यापक, अनंत रूप राम को पाकर धन्य हैं, जिससे उनमें पाने व छोड़ने का संकल्प-विकल्प आता ही नहीं।

ज्ञान स्थिति में सत की भी विस्मृति उनका स्वस्वरूप है। अक्षर स्वरूप होने के कारण हनुमान जी का क्षरण और क्षय नहीं होता है। उन्हें अग्नि जला नहीं सकी, पानी डुबा नहीं सका, वायु के वे स्वयं पुत्र हैं। हनुमान जी में अज्ञान जनित अविद्या का ऐसा ही अभाव है, जैसे अग्नि में शीतलता संभव नहीं, बर्फ में गर्मी संभव नहीं है। हनुमान जी आकाश के रूप में ही व्यक्त हैं और अव्यक्त भी। व्यक्त-अव्यक्त, साकार-निराकार, चिदाकाश-आकाश वे ही हैं। हनुमान जी स्वर की भांति सुनाई देते हैं, अर्थ की भांति समझ आते हैं और तत्व के रूप में ग्रहणीय हैं। क्रिया के रूप में जब वे अपने इन गुणों का उपयोग भगवान की सेवा में करते हैं, तब उपादान रूप में भले ही सामने दिखाई दें, पर वे व्यक्त रूप राम में, अव्यक्त राम के स्वरूप उनकी आत्मा ही हैं।

समाज को इसी प्राणायाम प्रक्रिया की आवश्यकता है। ज्ञान का अर्जन करें, फिर धारण करें, तत्पश्चात उसे समाज में बांट दें। किसी भी उपलब्धि में इस प्राणायाम से ही पूर्णता संभव है। पतझड़ नए पत्तों को आमंत्रित करता है, नया पुराना होता है। गिर जाना ही पतझड़ है। हनुमान जी लंका गए, लौटकर श्रीराम के पास आ गए। लक्ष्मण के लिए औषधि लेने गए और लौट आए। यह लौटकर आ जाना ही अपनी स्वस्थिति में स्थित हो जाना है। हवा का आना, रुकना और जाना... शरीर में भी यही प्रक्रिया पंचप्राणों का संचालन करती है।

आदि-मध्य-अंत, ब्रह्मा-विष्णु-महेश, उदय-मध्य-अस्त सब कुछ यही प्रक्रिया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने द्वादश ग्रंथों में राम जी के बाद यदि सबसे अधिक किसी की महिमा गाई है तो वे हनुमान जी ही हैं। जिसको हनुमान जी का सहारा है, उसकी प्रतिज्ञा सदा पूरी होती है। यह वचन वैसे ही अटल है, जैसे पत्थर पर वज्र कुलिश की लकीर। उनके स्मरण मात्र से संकट और शोक दूर हो जाते हैं। जिस पर हनुमान जी की कृपा होती है, उस पर माता पार्वती, शिव, लक्ष्मण, राम और जानकी भी अनुकूल रहते हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि हनुमान जी की कृपाभरी चितवन-दृष्टि सब प्रकार का मंगल करती है।

श्रीमद्भगवद्गीता के 15वें अध्याय के अनुसार, हनुमान जी निर्वानमोहा हैं-कोई उनमें मान नहीं, मोह नहीं। जितसंगदोषा हैं, क्योंकि उन्होंने सभी आसक्तियों पर विजय प्राप्त कर ली है। अध्यात्मनित्या हैं, क्योंकि उनकी परमात्मा राम में नित्य स्थिति है। विनिवृत्तिकामा हैं, क्योंकि न उनमें कोई कामना है, न कामना-त्याग का अहंकार या प्रदर्शन। सारे द्वंद्वों से मुक्त हैं। राममय होने के कारण वे अविनाशी भी हैं। वे बालवय में सूर्य को मुख में ले लेते हैं, क्योंकि वे भगवान के जिस परमधाम में स्थित हैं, उसे सूर्य-चंद्र प्रकाशित नहीं करते। वे भगवान की भक्तिमणि युक्त राम नाम की मुद्रिका मुख में धारण करते हैं, जिसे प्रकाशित होने के लिए दिया, घृत, बाती की आवश्यकता नहीं होती है।

मन की गति से चलकर भी गति पर उनका पूर्ण नियंत्रण है। उनका मन रामलक्ष्य होने के कारण अन्यत्र भटकता नहीं। जितेंद्रिय हैं, क्योंकि राम काज करिबे को आतुर रहते हैं। उनकी आतुरता का आधार इंद्रियां नहीं। बुद्धिमतां वरिष्ठं का तात्पर्य है-बुद्धि जब संसार विषयक होती है, तब वह कलंकित होती है, पर जो बुद्धि को विवेक के रूप में सत को स्वीकार कर असत का त्याग करते हैं तो बुद्धि को भी निष्कलंकित कर देते हैं। नेत्रों से भगवान को देखकर अश्रुप्रवाह करते हैं। कान से भगवान की कथा सुनकर स्वयं को समुद्र बनाकर कथा सरिता को भरते रहते हैं। पैर से भगवान के कार्य के लिए चलते हैं। हाथ से भगवान के चरण दबाते हैं। जिह्वा से भगवान की कथा कहते हैं और उनकी दिव्यता को अपने रोम-रोम में बसाए रहते हैं।

भगवान राम कहते हैं- प्रति उपकार करौं का तोरा... सनमुख होइ न सकत मन मोरा... हे हनुमान, तुमने जो मुझ पर उपकार किया है, उसके बदले में मेरे पास कुछ ऐसा है ही नहीं कि मैं उससे उऋण हो सकूं। मैं तो तुम्हारे सामने मुंह करने योग्य नहीं हूं। लंका जाकर हनुमान जी ने सीता जी को जब श्रीराम की कुशलता और उनकी प्रेमभावना की आतुरता का बखान किया तो श्रीसीता जी ने भी यही कहा कि हनुमान! मैं तुम्हें क्या दूं, मेरे पास तो कुछ है ही नहीं। हनुमान जी ने सबसे ऊंचा उत्तर देकर मां के संकोच को मिटा दिया। हनुमान जी बोले- सुनु मातु मैं पायो अखिल जग राजु आजु न संशय। मां, इसमें कोई संदेह नहीं कि आज मैंने 14 लोकों के राज्य का स्वामित्व पा लिया है। हनुमान जी जानते हैं कि आज मेरी मां को जो प्रसन्नता हो रही है, यदि उनके पास वर्तमान में यह सुविधा होती तो वे 14 लोकों का मुझे स्वामित्व दे देतीं। हनुमान जी ने सोचा कि जो आप देना चाहती हैं, वह तो मुझे मिल ही गया। धन्य हैं हनुमान जी और उनकी शरणागति ज्ञान, भक्ति और कर्म के साथ।

लेख विस्तार से पढ़ने के लिए स्कैन करें।

maithili.sharan@yahoo.com

जीवन प्रबंधन

आचार्य नारायण दास
महंत, श्रीभरत मिलाप आश्रम मायाकुंड, ऋषिकेश

दोषों को जलाकर बनें पवित्र

भगवान दत्तात्रेय ने अपने 24 गुरुओं की श्रृंखला में 'अग्नि' को भी गुरु पद पर प्रतिष्ठित कर यह सिद्ध किया कि प्रकृति के इस गुरु-तत्व में भी जीवन प्रबंधन के उच्चतम आदर्श सन्निहित हैं...

महाराज यदु को उपदेश देते हुए दत्तात्रेय कहते हैं- हे राजन! अग्नि के माध्यम से मैंने आत्मिक अभ्युदय हेतु अत्यंत गूढ़ एवं व्यावहारिक शिक्षाओं को आत्मसात किया है, जो कि आध्यात्मिक दीप्ति और तप का स्वरूप है-

तेजस्वी तपसा दीप्तो दुर्धर्षोदरभाजन:।
सर्वभक्षोऽपि युक्तात्मा नादत्ते मलमग्निवत्।।

हे राजन! अग्नि ऊर्जा, ऊष्मा और प्रकाश की ऐसी दिव्यज्योति है, जो सर्वभक्षी होकर भी स्वयं को कलुषित नहीं होने देती। अग्नि का प्रथम गुण उसकी तेजस्विता है। यह संकेत है कि वास्तविक ओज बाह्य आडंबरों से नहीं, अपितु कठोर साधना, इंद्रिय संयम व तप की अग्नि से उद्भूत होता है। तपस्वी का व्यक्तित्व ही समाज में अमिट प्रभाव को अंकित करता है।

अग्नि को परास्त करना असंभव है। एक अग्निकण भी अनुकूल परिस्थिति में दावानल बनने का सामर्थ्य रखता है। जीवन संघर्षों और प्रतिकूलताओं में अविचलित रहकर अपने आत्मबल को प्रदीप्त रखना ही सफलता का मार्ग है।

हे राजन! अग्नि का एक विशिष्ट स्वभाव है, वह जो कुछ ग्रहण करती है, उसे भस्म कर देती है, किंतु उसके दोषों को स्वयं में धारण नहीं करती। अग्नि से प्रेरणा लेकर साधक को चाहिए कि वह जगत के व्यवहारों को तो स्वीकार करे, किंतु उनके विकारों को अपने चित्त में स्थान न दे। मान-अपमान और सुख-दुख के द्वंद्वों के मध्य उनसे निर्लिप्त रहना ही अंतःकरण की शुद्धि का परम सोपान है। जिस प्रकार अग्नि अशुद्धियों को जलाकर भी स्वयं पावन बनी रहती है, वैसा ही चित्त योगी का होना चाहिए।

हे राजन! अग्नि काष्ठ और पाषाण में प्रसुप्त रहती है, किंतु घर्षण से प्रदीप्त हो जाती है। यह तथ्य परमात्मा की सर्वव्यापकता को बताता है। ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है, परंतु अज्ञान के तिमिर के कारण दृष्टिगोचर नहीं होता। जब साधक ज्ञान, भक्ति और विवेक से अंतःकरण का मंथन करता है, तब वह प्रकट हो जाता है। जिस प्रकार अग्नि में आहुति देते ही सबकुछ भस्म हो जाता है, उसी प्रकार ब्रह्मज्ञान और भक्ति की ज्वाला में मनुष्य के पाप, वासनाएं और दोष विलीन हो जाते हैं।

हे राजन! अग्नि को गुरु स्वीकार कर प्राप्त की गई यह शिक्षा दिव्य जीवन-पथ प्रदान करती है। यह हमें तेजस्वी बनने और संसार में रहते हुए भी निर्लिप्त रहने का बोध कराती है। यदि मनुष्य उसके गुणों को आचरण में ढाल ले, तो वह स्वयं प्रकाशित होकर समाज के लिए आलोक-स्तंभ बन जाएगा, जो व्यष्टि व समष्टि के लिए मंगलकारी होगा।

लेख विस्तार से पढ़ने के लिए स्कैन करें।

अगले मंगलवार को पढ़ें मोरारी बापू का चिंतन...

सनातन धारा

प्रो. गिरिजा शंकर शास्त्री
पूर्व अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

महादानों में श्रेष्ठ जलदान

गर्मी में जलदान करना सबसे बड़ा पुण्य का काम है। जानें सनातन संस्कृति में जल और जलदान का महत्व....

मनुष्य ही नहीं, समस्त जीवों के जीवन में जल की महती भूमिका होती है। किसी भी धार्मिक कार्य से पूर्व स्नान परमावश्यक होता है। तदनंतर आसन की पवित्रता, पूजन सामग्री की पवित्रता एवं आत्मशुद्धि हेतु जल से मार्जन करना आवश्यक माना गया है।

जल शब्द के लिए वैदिक वांगमय में मुख्यतः 'आप' शब्द का प्रयोग हुआ है। स्वरूप दृष्टि से जल द्रव रूप है, किंतु अत्यधिक शीत में यह हिम (बर्फ) रूप में परिवर्तित हो जाता है। तब यह ठोस होता है। सूर्य की प्रखर किरणों के द्वारा तप्त होने पर यह वाष्प बनकर बादल हो जाता है, तब यह गैस रूप भी होता है। इसमें सोम के साथ अग्नितत्व भी रहता है। जैसा कि ऋग्वेद के 'आपः' सूक्त में कहा गया है-

अप्सु मे सोमो अब्रवीदंतर्विश्वानि भेषजा।
अग्निं च विश्वशंभुवमापश्च विश्वभेषजी।।

महर्षि व्यास ने जल में विद्यमान अग्नि को तीन रूपों में माना है-

वैद्युत जाठर: सौरो ह्यपांगर्भास्त्रयोऽग्नय:।
तस्मादप: पिबन् सूर्यो गोभिर्दीप्यत्यसौ दिवि।।

अर्थात जल के गर्भ में रहने वाली अग्नि तीन प्रकार की होती है- वैद्युत, जाठर, सौर। जल में अग्नि की उपस्थिति जानकर ही जल से विद्युत उत्पन्न की गई। जल की स्तुति करते हुए अथर्ववेद के ऋषि कहते हैं कि दिव्यगुणों से संपन्न जल देवता हम लोगों के लिए सुखकारी हों, तथा पूर्ण शांति प्रदान करें। ईश्वर प्राप्ति में सहायक हों तथा हमारे पीने के लिए हों-

शंनो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंय्योरभि श्रवन्तु नः।।

यही कारण है कि भारतीय अध्यात्म में जलदान की बड़ी महिमा है। वेदव्यास जी पद्मपुराण में कहते हैं कि 16 महादानों में श्रेष्ठ है जलदान। जो प्यासे व्यक्ति को जल पिलाता है, उसके पुण्यों का वर्णन भगवान भी नहीं कर सकते। जिसके बनवाए हुए पोखरे में पशु-पक्षी व जीव-जंतु जलपान करते हैं, वह व्यक्ति देवताओं द्वारा स्वर्ग में पूजित होता है।

जल के बिना प्राणों को धारण करना असंभव है। पितरों के तर्पण कार्य तथा सुंदर रूप का कारक यह जल ही है। अतः सभी प्रकार से प्रयत्नपूर्वक बावली, कुआं तथा जलाशय आदि का निर्माण कराना चाहिए। ग्रंथों में कहा गया है कि जलाशय बनवाने वाले को इतना पुण्य मिलता है कि वह कल्पपर्यंत स्वर्ग में निवास करता है। जहां पृथ्वी पर जल का अभाव हो, वहां मार्ग में पवित्र स्थान पर एक मंडप बनाकर जल का प्रबंध करना चाहिए तथा विशेषतः गर्मी में पथिकों को जल पिलाना चाहिए। तीन वर्ष तक जो प्याऊ (पौंसला) चलाता है, उसकी कीर्ति त्रैलोक्य में विख्यात होती है। ग्रीष्मऋतु में जलदान करने वाला सभी पापों से मुक्त हो जाता है। कहा गया है कि जिन्हें अपने पितरों को अक्षय लोकों की प्राप्ति करानी हो, उन्हें प्यास से व्याकुल जीवों को जल दान करना चाहिए।

महाराष्ट्र के स्वामी एकनाथ के विषय में एक कथा है कि जब वे गंगोत्री से कांवड़ में जल भरकर रामेश्वरम में भगवान शिव का जलाभिषेक करने जा रहे थे। तभी मार्ग में उन्हें प्यास से तड़पता एक गधा दिखाई दिया। उन्होंने उस गधे को गंगोत्री का जल पिला दिया। कहा जाता है कि इस कृत्य से उन्हें भगवान शंकर ने प्रकट होकर दर्शन दिया और एकनाथ जी का जीवन धन्य हो गया।

लेख विस्तार से पढ़ने के लिए स्कैन करें।

आज का भविष्यफल- 5 मई, 2026 मंगलवार

पं. के. ए. दुबे पद्मेश

आज की ग्रह स्थिति : ज्येष्ठ मास कृष्ण पक्ष तृतीया का राशिफल
आज का राहुकाल : अपराह्न 03 बजे से 04 बजकर 30 मिनट तक
आज का दिशाशूल : उत्तर
आज की भद्रा : प्रातः 05 बजकर 25 मिनट तक। विशेष : तृतीया तिथि की वृद्धि

कल 6 मई, 2026 का पंचांग

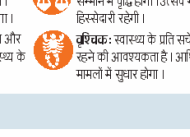

कल का दिशाशूल : उत्तर
विक्रम संवत 2083 शके 1948 उत्तरायण, उत्तरगोल, वसंत ऋतु, ज्येष्ठ मास कृष्ण पक्ष की चतुर्थी 07 घंटे 52 मिनट तक तत्पश्चात पंचमी, मूल नक्षत्र 15 घंटे 54 मिनट तक तत्पश्चात पूर्वाआषाढ़ा नक्षत्र, सिद्ध योग 25 घंटे 12 मिनट तक तत्पश्चात साध्य योग, धनु में चंद्रमा।

मेष : पारिवारिक दायित्व की पूर्ति होगी। रिश्तों में निकटता आएगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

वृष : आर्थिक मामलों में प्रगति होगी। शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी।

मिथुन : रिश्तों में निकटता आएगी। उपहार या सम्मान में वृद्धि होगी। रचनात्मक प्रयास फलीभूत होगा।

कर्क : जीवनसाथी का सहयोग और सान्निध्य मिलेगा, लेकिन स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

सिंह : रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यावसायिक योजना फलीभूत होगी।

कन्या : पारिवारिक दायित्व की पूर्ति होगी। संपत्ति के मामलों में सफलता मिलेगी।

तुला : रिश्तों में निकटता आएगी। सम्मान में वृद्धि होगी। उत्सव में हिस्सेदारी रहेगी।

वृश्चिक : स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। आर्थिक मामलों में सुधार होगा।

धनु : जीवनसाथी का सहयोग और सान्निध्य मिलेगा। सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। सम्मान बढ़ेगा।

मकर : जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। रचनात्मक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी, लेकिन मन अशांत रहेगा।

कुंभ : संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। आर्थिक मामलों में प्रगति होगी। रिश्तों में निकटता आएगी।

मीन : व्यस्तता बढ़ेगी। प्रयास फलीभूत होगा। आर्थिक मामलों में सचेत रहें। यात्रा का योग है।

वर्ग पहेली-3325

© Bird Features & Writing Agency

बाएं से दाएं :
2. लगातार निरंतर (3)।
4. एक मरुस्थल का नाम (3)।
5. मेघ, बादल, समुद्र (4)।
7. ग्रंथ का मौलिक परिचय (3)।
8. जमीन, धरती (2)।
9. नियुक्त करना (3)।
11. मुकदमे की सुनवाई की जगह (4)। 14. मीमांसा, व्याख्या (4)।
16. छह अंगों वाला (3)।
18. लक्ष्मी (2)।
19. इच्छा, अभिलाषा (3)।
20. चने की पत्तियों और डंठल में से निकला हुआ क्षार (4)।
22. सहने की क्रिया, शांति, क्षमा (3)। 23. प्रेम, प्रीति (3)।

ऊपर से नीचे :
1. मात्र, केवल, निरा (3)।
2. प्रात:काल, सवेरा (3)।
3. तपोवन (4)।
4. हुकूमत, शासन (4)।
6. सफेद, एक राग का नाम (3)।
10. नष्ट करना, मारना (3)।
11. द्वेष रहित, इर्ष्या का अभाव (3)।
12. अंधकार (2)। 13. सूर्य, दिनकर (2)। 15. व्यथा, पीड़ा, कष्ट (3)।
17. नमी, तरी (4)।
18. पुराण के अनुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से छठा लोक (4)।
20. चुनने का कार्य, संचय (3)।
21. भीतरी या छिपी बात (3)।

कल का हल

सुडोकू-3325

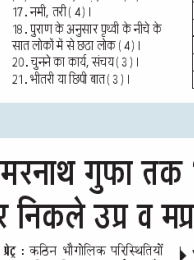

		1			2	7		
6	3		9		5		4	2
	2		3					
3				8		9	5	
	8		7		9		2	3
1			6					
		5		3	6	2		8
	7			9				4
	1		4			5	9	

कल का हल

7	6	2	4	5	3	9	1	8
9	4	1	2	8	6	5	3	7
3	5	8	7	9	1	6	2	4
2	9	4	3	7	8	1	6	5
1	7	5	6	4	9	3	8	2
8	3	6	1	2	5	4	7	9
5	1	9	8	6	7	2	4	3
6	2	7	5	3	4	8	9	1
4	8	3	9	1	2	7	5	6

राष्ट्रीय फलक

जम्मू-कश्मीर में बर्फबारी और भूस्खलन में फंसे 400 लोग

जागरण टीम, श्रीनगर

जम्मू-कश्मीर में सोमवार को मौसम और खराब हो गया। कश्मीर के शोपियां को जम्मू संभाग के पुंछ जिले से जोड़ने वाले मुगल रोड़ पर बर्फबारी व भूस्खलन से शाम को रास्ता बंद होने से करीब 200 वाहन जगह-जगह फंस गए। कुछ यात्रियों ने इंटरनेट मीडिया के माध्यम से प्रशासन से मदद मांगी। इसके बाद फंसे वाहनों में सवार करीब 400 लोगों को निकालने का काम शुरू हुआ। इस बीच, कश्मीर में भी पहाड़ों पर हिमपात और निचले क्षेत्रों में बारिश जारी रही।

मौसम विभाग ने पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव के चलते तीन मई से बारिश-बर्फबारी की संभावना जताई थी। इसका असर, रविवार दो मई की शाम से ही दिखने लगा था। सोनमर्ग, अफरवट, जोजि ला दर्रा, गुरेज, साधना टाप, राजदान टाप समेत उच्च पर्वतीय इलाकों में ताजा बर्फबारी हुई। इस बीच, मुगल रोड़ पर छत्ता पानी से पीर की गली के बीच दोपहर बाद भारी हिमपात शुरू हो गया।

हिमाचल में ओलावृष्टि से सेब को नुकसान, आंधी से छतें उड़ी

राज्य ब्यूरो, जागरण, शिमला : हिमाचल में सोमवार को भी वर्षा, ओलावृष्टि व आंधी से नुकसान का क्रम जारी रहा। रोहतांग, कुंजुम और बारालाचा में हिमपात हुआ है। ठियोग, रोहड़ू, चौपाल में ओलावृष्टि हुई वहीं नेरवा में आंधी चलने से कई घरों की छतें उड़ गईं। ओलावृष्टि के कारण सेब सहित अन्य गुठलीदार फलों तथा मैदानी क्षेत्रों में वर्षा से गेहूं को नुकसान पहुंचा है। ओले गिरने से सेब के पौधों की पत्तियां छलनी हो गई हैं। किन्नौर जिले के मालिंग के समीप पहाड़ी दरकने से हुए भूस्खलन के कारण सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण राष्ट्रीय राजमार्ग अवरुद्ध हो गया।

रामकथा संग्रहालय में संरक्षित व प्रदर्शित होंगी तीन व्यक्तियों की पांडुलिपियां

जागरण संवाददाता, अयोध्या

> परीक्षण कमेटी की बैठक में सदस्यों ने दी स्वीकृति, दो सौ वर्ष से पुरानी पांडुलिपियां ही कीं स्वीकार

अंतरराष्ट्रीय रामकथा संग्रहालय में संरक्षण व प्रदर्शन के लिए 200 वर्ष से अधिक पुरानी पांडुलिपियों को स्वीकार कर लिया गया। नई दिल्ली स्थित प्रधानमंत्री संग्रहालय में अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र की अध्यक्षता में हुई परीक्षण कमेटी की बैठक में सदस्यों ने तीन लोगों के प्रस्ताव को स्वीकृति दी है। इनमें लखनऊ के दो और अयोध्या के एक व्यक्ति शामिल हैं। इनके पास रामायण व रामचरितमानस से संबंधित 10-12 हस्तलिखित पांडुलिपियां संरक्षित बताई गई हैं। ये ताम्र पत्र, ताड़ पत्र और कागज पर लिखित हैं। वहीं, एक प्रति ही उपलब्ध होने से ताई भाषा की पांडुलिपि पर अभी निर्णय नहीं हो पाया। जल्द ही इस पर अंतिम निर्णय लिया जाएगा।

प्रधानमंत्री संग्रहालय की ओर से चलाए गए 'पांडुलिपि संरक्षण यज्ञ' के अंतर्गत प्राप्त पांडुलिपियों के संरक्षण संबंधी प्रस्तावों पर अंतिम निर्णय के लिए सोमवार को नई दिल्ली में बैठक हुई। अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्र के नेतृत्व में परीक्षण कमेटी के सदस्यों ने गहन विमर्श और फोटो व वीडियो देखने के पश्चात प्राचीनता के आधार पर उन्हीं पांडुलिपियों को संरक्षण के लिए स्वीकार किया, जो दो सौ वर्ष या इससे अधिक पुरानी मानी गईं। बैठक से आनलाइन जुड़े रहे रामकथा संग्रहालय के निदेशक और कमेटी के सदस्य डा. संजीव कुमार सिंह ने बताया कि अयोध्या के कुमारगंज निवासी जंगजीत सिंह, मूलतः बुंदेलखंड के निवासी व लखनऊ में रह रहे माधवेंद्र पोरवाल और लखनऊ के एक वृद्ध की पांडुलिपियों को सहमति दी गई है। जंगजीत के पास संरक्षित हस्तलिखित रामचरितमानस लगभग 270 वर्ष पुरानी मानी गई है। अन्य दोनों की पांडुलिपियां दो सौ वर्ष से अधिक प्राचीन हैं। डा. सिंह ने बताया कि शीघ्र ही श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सदस्य नृपेंद्र मिश्र, महासचिव चंपतराय व अन्य की उपस्थिति में पांडुलिपियों को स्वीकार किया जाएगा।

अयोध्या के कुमारगंज निवासी जंगजीत सिंह के पास संरक्षित रामचरितमानस की हस्तलिखित पांडुलिपि। जागरण

अमरनाथ गुफा तक 'दंडवत यात्रा' पर निकले उप्र व मप्र के चार युवक

> 'सनातन धर्म का संदेश' और 'सांप्रदायिक सद्भाव' का कर रहे प्रसार

जम्मू, प्रेट्र : कठिन भौगोलिक परिस्थितियों की परवाह किए बिना उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के चार युवक पवित्र अमरनाथ यात्रा पर निकले हैं। पिछले नौ माह से अधिक समय से जारी यात्रा में वे 'दंडवत प्रणाम' कर रहे हैं। वे 'सनातन धर्म के संदेश' और 'सांप्रदायिक सद्भाव' का प्रसार करने के उद्देश्य से कठिन साधना कर रहे हैं। रामबन जिले में जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग के घुमावदार रास्तों को पार करते हुए ये युवा तीर्थयात्री पूरी तरह से साष्टांग दंडवत करते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

श्रद्धालु बार-बार जमीन पर लेटकर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं। वे दक्षिण कश्मीर हिमालय में लगभग 3,880 मीटर की ऊंचाई पर स्थित उस पवित्र गुफा मंदिर की ओर बढ़ रहे हैं, जहां भगवान शिव का प्राकृतिक रूप से निर्मित हिमलिंग विराजमान है। मध्य प्रदेश के तीर्थयात्री जतिंदर राजपूत, रोहित राय और नयन जैन, तथा उत्तर प्रदेश के अमित राजपूत ने महीनों पहले अपनी यात्रा शुरू की थी। मध्य प्रदेश के तीनों सदस्यों ने तीन सितंबर, 2025 को अपनी यात्रा शुरू की, जबकि अमित राजपूत 23 जुलाई, 2025 को ही रवाना हो गए थे।

अमित राजपूत ने कहा, "हम बाबा बर्फानी का आशीर्वाद लेने के लिए दंडवत प्रणाम यात्रा पर निकले हैं। यह हमारी बहुत पुरानी इच्छा थी और हम पिछले नौ महीनों से इस यात्रा पर हैं।" समूह के सदस्य रोहित राय ने कहा, "पिछले करीब एक साल से हमारी दिनचर्या जमीन पर लेटने, फिर उठने और धीरे-धीरे आगे बढ़ने के इर्द-गिर्द ही घूम रही है।" इन युवाओं ने कहा कि उनकी यह यात्रा उच्च उद्देश्य से प्रेरित है, जिसका लक्ष्य सनातन धर्म के मूल्यों को बनाए रखना और गाय को भारत का राष्ट्रीय पशु घोषित किए जाने का समर्थन करना है।

राष्ट्रीय संस्करण

दैनिक जागरण

मंगलवार, 5 मई, 2026

आजकल

14

www.jagran.com

पहली बार अमेरिका में मानव लिवर का किया गया प्रत्यारोपण

1963 में आज ही अमेरिका में डा. थामस ई स्टार्ल्ज ने पहली बार मानव लिवर का प्रत्यारोपण किया था। मरीज 22 दिनों तक जीवित रहा। यद्यपि मरीज ज्यादा दिन जीवित नहीं बचा, लेकिन इस आपरेशन ने साबित कर दिया कि यह प्रक्रिया संभव है। यह आधुनिक प्रत्यारोपण की नींव बनी।

विज्ञान जगत को मिले एनोड, कैथोड और आयन के नाम

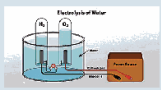

1834 में आज ही इंग्लैंड में विलियम व्हेवेल ने माइकल फैराडे को पत्र लिखकर एनोड, कैथोड व आयन के नाम सुझाए थे। फैराडे उस समय पानी के विद्युत अपघटन (इलेक्ट्रोलाइसिस) की प्रक्रिया पर काम कर रहे थे। उन्हें इलेक्ट्रोड के लिए नए नामों की आवश्यकता थी।

प्रीतिलता ने 21 साल की उम्र में किया था ब्रिटिश राज पर सशस्त्र हमला

क्रांतिकारी प्रीतिलता वादेदार का जन्म 1911 में आज ही चटगांव (अब बांग्लादेश) में हुआ था। कालेज के बाद क्रांतिकारी मास्टरदा सूर्य सेन के संपर्क में आकर क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लेने लगीं। 23 सितंबर, 1932 को क्रांतिकारियों के एक समूह का नेतृत्व करते हुए 'कुत्ते और भारतीयों का प्रवेश वर्जित' का बोर्ड लगाने वाले चटगांव के पहाड़तली यूरोपियन क्लब पर बम व गोलियों से हमला किया। उनका उद्देश्य अंग्रेजों को यह संदेश देना था कि भारतीय अब अपमान सहन नहीं करेंगे। इस दौरान घायल होने के बाद उन्होंने आत्मसमर्पण के बजाय पोटेशियम साइनाइड निगलकर बलिदान दे दिया।

गलत खान-पान बढ़ा रहा पार्किंसंस का खतरा

अध्ययन ▸ पीड़ितों के पाचन तंत्र में अल्फा सिन्यूक्लिन नाम का प्रोटीन गलत तरीके से होता है मुड़ा

नई दिल्ली, नेशनल डेस्क : पार्किंसंस एक ऐसी बीमारी है जो उम्र बढ़ने के साथ धीरे-धीरे दिमाग को प्रभावित करती है। हाल के शोध में एक चौंकाने वाले आंकड़े सामने लाए हैं। पार्किंसंस की शुरुआत पेट से हो सकती है। विज्ञानियों का मानना है कि एक असामान्य प्रोटीन पेट से दिमाग तक फैलता है, जिसमें दशकों का समय लग सकता है क्योंकि केवल 10 से 15 प्रतिशत मामले ही आनुवंशिक होते हैं। हमारा खाना इस बीमारी के जोखिम को कम करने में बड़ी भूमिका निभा सकती है। गलत खान-पान उसे बढ़ा सकता है।

आंत और दिमाग का गहरा कनेक्शन : शोध से पता चला है कि पार्किंसंस से पीड़ित कुछ लोगों के पाचन तंत्र में अल्फा सिन्यूक्लिन नाम का गलत तरीके से मुड़ा हुआ प्रोटीन जमा हो जाता है। इसलिए बीमारी का पता लगने से सालों पहले क्रानिक कब्ज जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं। चूहों पर अध्ययन में देखा गया कि जब यह प्रोटीन आंत में इंजेक्ट किया गया, तो यह दिमाग तक पहुंच गया और पार्किंसंस जैसे लक्षण पैदा किए। यही कारण है कि शोधार्थी खान-पान पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। पैकेटबंद स्नैक्स, फास्ट फूड और प्रोसेस्ड मीट मस्तिष्क की कोशिकाओं में सूजन व नुकसान का कारण बन सकते हैं।

प्रतीकात्मक

किन चीजों से परहेज करें?

डेयरी प्रोडक्ट्स - दूध और डेयरी प्रोडक्ट्स ज्यादा मात्रा में खाने से, खासकर पुरुषों में पार्किंसंस के बढ़ते जोखिम से जुड़ा पाया गया।

अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड - बाजार में मिलने वाली ब्रेड, सीरियल्स और फ्रोजन मील जैसे अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड्स जोखिम को बढ़ा सकते हैं।

तली-भुनी चीजें और मिठाइयां - तले हुए खाने और ज्यादा मीठे से परहेज करना न केवल पार्किंसंस बल्कि पूरे स्वास्थ्य के लिए जरूरी है।

खतरे कम करने को क्या खाएं?

- खाने में कुछ खास चीजों को शामिल करके इस बीमारी के खतरे को कम किया जा सकता है।
- काफी और चाय- नियमित रूप से काफी और चाय पीने से पार्किंसंस के जोखिम को कम करने से जुड़ा है। दिलचस्प बात यह है कि यह फायदा डिकैफ काफी में नहीं देखा गया, जिससे संकेत मिलता है कि सुरक्षा कैफीन के कारण होता है।
- फाइबर से भरपूर खाना- ज्यादा फाइबर खाने वाले लोगों में भविष्य में पार्किंसंस होने की संभावना कम पाई गई है।
- माइंड और मेडिटेरेनियन खाना- शोध बताते हैं कि जो लोग माइंड डाइट का अनुसरण करते हैं, उनमें पार्किंसंस के लक्षण अन्य लोगों की तुलना में औसतन 17.4 साल बाद विकसित होते हैं। माइंड डाइट में हरी पत्तेदार सब्जियों, बेरीज, नट्स, जैतून के तेल और मछली के सेवन पर जोर दिया जाता है। मेडिटेरेनियन डाइट (भूमध्यसागरीय आहार) इस बीमारी की संभावना को 25 प्रतिशत तक कम कर सकती है। मेडिटेरियन डाइट पौधों पर आधारित भोजन शैली है, जिसमें फल, सब्जियां, साबुत अनाज, बीन्स, नट्स और जैतून के तेल पर जोर दिया जाता है।

अस्थमा के लिए इनहेलर लेने से कमजोर होती हैं हड्डियां

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

▸ **एम्स व जान हापकिन्स के अध्ययन में रीढ़ की सर्जरी के बाद दोबारा आपरेशन की संभावना अधिक पाई गई**

अस्थमा के इलाज में इस्तेमाल होने वाले इनहेलर जहां मरीजों के लिए जीवनरक्षक साबित होते हैं। इस संबंध में एक नए शोध ने इनके लंबे उपयोग को लेकर उनकी चिंता बढ़ा दी है। अमेरिका की जान हापकिन्स यूनिवर्सिटी और एम्स (दिल्ली) के विशेषज्ञों के संयुक्त अध्ययन में सामने आए हैं कि स्टेराइड युक्त इनहेलर हड्डियों को कमजोर करते हैं और रीढ़ से जुड़ी समस्याओं का खतरा बढ़ा सकते हैं।

यह अध्ययन प्रतिष्ठित मेडिकल जर्नल स्पाइन में प्रकाशित हुआ है। एम्स के आर्थोपेडिक विभाग के प्रोफेसर डा. भावुक गर्ग के अनुसार, शोध में मार्च 2006 से मार्च 2026 के बीच रीढ़ की सर्जरी कराने वाले मरीजों का विश्लेषण किया गया। कुल मरीजों को तीन समूहों में बांटा गया। इनहेलर लेने वाले अस्थमा मरीज, बिना इनहेलर वाले अस्थमा मरीज और सामान्य मरीज। प्रत्येक समूह में 768 मरीज शामिल किए गए। नतीजों में पाया गया कि इनहेलर का उपयोग करने वाले अस्थमा मरीजों में सर्जरी के बाद जटिलताएं अधिक देखी गईं। इनमें से 19.7 प्रतिशत मरीजों को दो साल के भीतर दोबारा सर्जरी करानी पड़ी, जबकि पांच साल में यह आंकड़ा 26.3 प्रतिशत तक पहुंच गया। इसके विपरीत, इनहेलर नहीं लेने वाले अस्थमा मरीजों में यह दर काफी कम रही। दो साल में 7.3 प्रतिशत और पांच साल में 10.2 प्रतिशत। शोध के अनुसार, स्टेराइड का लंबे समय तक उपयोग हड्डियों की मजबूती को प्रभावित कर सकता है, जिससे रीढ़ की सर्जरी के बाद हड्डियों के जुड़ने की प्रक्रिया धीमी या कमजोर हो सकती है।

प्रतीकात्मक

प्रदूषण प्रभावित शहरों को अधिक खतरा : एम्स विशेषज्ञों का मानना है कि प्रदूषण से प्रभावित शहरों जैसे दिल्ली में अस्थमा के मामले अधिक होने से इनहेलर का उपयोग भी बढ़ता है, जिससे यह जोखिम अधिक हो जाता है।

बढ़ते तापमान से सांस की समस्याओं का खतरा : मेडिकल रिपोर्ट्स से पता चलता है कि जब तापमान बढ़ता है, तो हवा में ओजोन और पार्टिकुलेट मैटर का स्तर भी बढ़ जाता है, जो फेफड़ों में सूजन और सांस लेने में तकलीफ पैदा करता है। ये सभी फैक्टर मिलकर अस्थमा मरीजों के लिए ट्रिगर का काम करते हैं। इसके अलावा गर्मी में डिहाइड्रेशन, इलेक्ट्रोलाइट्स के असंतुलन व थकान के कारण भी सांस की तकलीफ बढ़ सकती है। लू के दौरान अस्पतालों में अस्थमा से जुड़ी इमरजेंसी में 10–15% तक की वृद्धि देखी गई है।

समाचार के लिए इंटरनेट मीडिया और इन्फ्लुएंसर्स का सहारा लेते हैं किशोर

न्यूयार्क, एपी : किशोर बड़ों की तुलना में गैर पारंपरिक स्रोतों जैसे इंटरनेट मीडिया और इन्फ्लुएंसर्स से समाचार प्राप्त करने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं, जो जानकारी प्राप्त करने के तरीके में एक पीढ़ीगत बदलाव का संकेत देता है। मीडिया इनसाइट प्रोजेक्ट द्वारा किए गए एक राष्ट्रीय अध्ययन में पाया गया है कि 36 प्रतिशत अमेरिकी वयस्क कहते हैं कि वे इंटरनेट मीडिया से दिन में कम से कम एक बार समाचार प्राप्त करते हैं। लेकिन 13 से 17 वर्ष के किशोरों के लिए यह संख्या 57 प्रतिशत तक बढ़ जाती है।

इसी तरह 43 प्रतिशत वयस्क कहते हैं कि वे राष्ट्रीय मुद्दों और घटनाओं के बारे में इन्फ्लुएंसर्स या स्वतंत्र सामग्री निर्माताओं से 'कभी-कभी' जानकारी प्राप्त करते हैं, जबकि किशोरों में यह संख्या 57 प्रतिशत है। यह प्रोजेक्ट द एसोसिएटेड प्रेस नार्क सेंटर फार पब्लिक अफेयर्स रिसर्च, अमेरिकन प्रेस इंस्टीट्यूट और नार्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी और यूनिवर्सिटी आफ मैरीलैंड के पत्रकारिता स्कूलों के बीच सहयोग है।

नए सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि किशोरों के जीवन में इंटरनेट मीडिया की व्यापकता है। यह दर्शाता है कि अधिक संख्या में किशोर इन प्लेटफार्मों या स्वतंत्र सामग्री निर्माताओं से समाचार प्राप्त कर रहे हैं, बजाय इसके कि वे सीधे राष्ट्रीय या स्थानीय समाचार स्रोतों से जानकारी लें। अमेरिकन प्रेस इंस्टीट्यूट की कार्यकारी निदेशक राबिन टामलिन ने कहा कि अमेरिकियों ने पारंपरिक पत्रकारिता को नहीं छोड़ा है, लेकिन वे उन स्रोतों का पुनर्मूल्यांकन कर रहे हैं, जिन पर वे भरोसा करते हैं। टामलिन ने कहा कि पारंपरिक राष्ट्रीय और स्थानीय आउटलेट्स एक विश्वसनीय स्रोत के रूप में खड़े हैं, लेकिन युवा दर्शक उन युवा निर्माताओं के साथ संबंध बना रहे हैं जिन्हें वे पारदर्शी और प्रामाणिक मानते हैं। यह वास्तविकता समाचार के भविष्य के लिए बड़ा निहितार्थ रखती है। किशोर अधिकतर इंटरनेट मीडिया की ओर रुख करते हैं और समाचार खोजते हैं।

36 **प्रतिशत अमेरिकी वयस्क कहते हैं कि वे इंटरनेट मीडिया से दिन में कम से कम एक बार समाचार प्राप्त करते हैं**

प्रतीकात्मक

इसके अलावा, किशोर समाचार खोजने के लिए सर्च इंजनों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस चैटबाट्स की ओर भी अधिक रुख करते हैं। सर्वेक्षण में पाया गया कि 10 में से लगभग चार में किशोर दैनिक समाचार सर्च से प्राप्त करते हैं, जबकि 10 में से लगभग दो एआइ चैटबाट्स से समाचार प्राप्त करते हैं। सर्वे में पाया गया कि जिन लोगों ने कहा कि उन्हें खबरें डिजिटल साइटों या ऐप्स से मिलती हैं, और जिन्हें टेलीविजन और स्ट्रीमिंग से मिलती हैं, उनके अलग-अलग आयु समूहों में बहुत कम अंतर है। अमेरिका के लगभग 10 में से चार वयस्क और लगभग उतने ही किशोर दिन में कम से कम एक बार टीवी से खबरें देखते हैं और लगभग उतने ही लोग डिजिटल न्यूज साइटों पर खबरें देखते हैं। प्रोफेसर टाम रोसेनस्टील ने कहा, यह धारणा कि टेलीविजन समाप्त हो रहा है, एक गलतफहमी है। वीडियो से समाचार देखना समाप्त नहीं हो रहा है। यह बदल रहा है।

एआइ और इन्फ्लुएंसर्स के प्रति संदेह रखते हैं कई किशोर : इस बात के बावजूद कि कई किशोर इन्फ्लुएंसर्स और एआइ से खबरें पा रहे हैं, उनमें से कई लोगों में एक स्वस्थ स्तर का संदेह भी है। हालांकि किशोर बड़ों की तुलना में एआइ चैटबाट्स से मिलने वाली जानकारी पर 'बहुत ज्यादा भरोसा' करने की बात ज्यादा कहते हैं, फिर भी एआइ के आउटपुट पर बहुत कम लोगों को ही पूरा भरोसा है। सिर्फ 11 प्रतिशत किशोर को ही एआइ से आने वाली जानकारी पर ज्यादा यकीन होता है, जबकि बड़ों में यह आंकड़ा सिर्फ चार प्रतिशत है। किशोर इस बात पर भरोसा है कि वे यह पहचान सकते हैं कि कोई चीज इंसान ने बनाई है या एआइ ने। लगभग एक तिहाई किशोरों ने एआइ से बने कंटेंट और इंसान से बने कंटेंट के बीच फर्क करने की काबिलियत पर ज्यादा भरोसा जताया, जबकि बड़ों में यह आंकड़ा हर 10 में से लगभग दो लोगों का है। सिर्फ 12% किशोरों को ही आजाद क्रिएटर्स या इन्फ्लुएंसर्स से मिलने वाली जानकारी पर भरोसा होता है, चाहे वह जानकारी टीवी, इंटरनेट मीडिया या किसी और जरिये से ही क्यों न आ रही हो। यह आंकड़ा उन छह प्रतिशत अमेरिकी बड़ों से तो ज्यादा है जो ऐसी ही बात कहते हैं, लेकिन फिर भी यह बहुत कम है।

छिपा हुआ तनाव लोगों की याददाश्त को पहुंचा सकता है नुकसान

वाशिंगटन डीसी, एएनआइ : एक नए अध्ययन से पता चलता है कि तनाव को अपने अंदर समेटना विशेष रूप से निराशा की भावनाएं बुजुर्ग चीनी अमेरिकियों में याददाश्त के गिरने की गति को तेज कर सकता है। आश्चर्यजनक रूप से सामुदायिक समर्थन जैसे कारकों का समान प्रभाव नहीं दिखा है।

शोधकर्ताओं का कहना है कि सांस्कृतिक दबाव और रूढ़िवादिता भावनात्मक संघर्षों को अनदेखा और असंवेदनशील बना सकते हैं। इसके निष्कर्ष बताते हैं कि लक्षित, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील तनाव मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। रटगर्स हेल्थ के नए शोध के अनुसार, तनाव को आंतरिक रूप से दबाने से वृद्ध चीनी अमेरिकियों में स्मृति हानि का खतरा बढ़ सकता है। एक नए अध्ययन से पता चलता है कि तनाव को आंतरिक रूप से दबाना विशेषकर निराशा की भावनाएं वृद्ध चीनी अमेरिकियों में स्मृति में गिरावट को बढ़ा सकता है।

▸ **तनाव को आंतरिक रूप से दबाने से वृद्ध चीनी अमेरिकियों में स्मृति हानि का बढ़ सकता है खतरा**

न्यूरोलाजी की सहायक प्रोफेसर चेन ने कहा, तनाव और निराशा उम्र बढ़ने वाली जनसंख्या में अनदेखी हो सकती है, फिर भी ये मस्तिष्क की उम्र बढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चूंकि, ये भावनाएं परिवर्तनीय हैं।

हमारा लक्ष्य इस शोध को सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील तनाव-निवारण हस्तक्षेपों को सूचित करने के लिए उपयोग करना है, ताकि बुजुर्गों में इन भावनाओं को कम किया जा सके। बड़े अध्ययन ने समय के साथ याददाश्त में बदलावों को ट्रैक किया।

तनाव कम करने के लिए मोबाइल पर गेमिंग का सहारा ले रहे बच्चे

नई दिल्ली, नेशनल डेस्क : अक्सर हम शिकायत करते हैं कि आजकल के बच्चे हर वक्त मोबाइल में ही घुसे रहते हैं। हम इसे 'स्क्रीन की लत' मान लेते हैं, लेकिन 'रुकम कैपिटल' की एक नई रिपोर्ट 'जेन अल्फा डिकोडेडः द कंज्यूमर-ब्रांड डायनेमिक' ने इस धारणा को पूरी तरह गलत साबित कर दिया है। अध्ययन के मुताबिक, बच्चों का इंटरनेट या फोन से चिपके रहना मनोरंजन या लत का हिस्सा नहीं है। दरअसल, स्कूल, ट्यूशन और माता-पिता की कड़ी निगरानी के बीच उनकी जिंदगी इतनी बंधी हुई है कि डिजिटल दुनिया ही वह इकलौती जगह बचती है, जहां वे खुद को स्वतंत्र महसूस कर पाते हैं।

बच्चों की आजादी पर सख्त पहरा : यह सच है कि आज के बच्चों के पास डिजिटल टूल्स की कमी नहीं है। रिपोर्ट के आंकड़े बताते हैं कि 73.5% बच्चों के पास अपना पर्सनल स्मार्टफोन है और 60.3% बच्चे लैपटाप का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि उन्हें इंटरनेट पर कुछ भी करने की पूरी छूट मिली हुई है।

माता-पिता की बच्चों पर रहती है नजर : शोध के अनुसार, 54% माता-पिता हमेशा इस बात पर नजर रखते हैं कि बच्चा आनलाइन क्या कर रहा है, जबकि 29.6% अक्सर इसकी जांच करते हैं। वहीं फोन के इस्तेमाल का समय भी तय है। 41% घरों में स्क्रीन-टाइम को लेकर कड़े नियम हैं और अन्य 41% अभिभावक बच्चों को तभी फोन देते हैं जब वे कोई अच्छा काम करके उसे 'कमाते' हैं। इसके अलावा, 54% से अधिक परिवारों में टीवी और ओटीटी ऐप्स पर भी 'अभिभावकों का नियंत्रण' लगा हुआ है।

▸ **बच्चों के मोबाइल के उपयोग को लेकर रुकम कैपिटल की एक नई रिपोर्ट**

प्रतीकात्मक

बच्चों की असली थकान का कारण क्या है? : इस अध्ययन का एक चौंकाने वाला पहलू यह है कि बच्चों के मानसिक तनाव की सबसे बड़ी वजह स्कूल नहीं, बल्कि 'ट्यूशन' है। स्कूल की पढ़ाई को ही ट्यूशन में बार-बार दोहराया जाता है, जिससे बच्चे खुद को थका हुआ और निराश महसूस करते हैं। इसी थकान को मिटाने के लिए वे गेमिंग का सहारा लेते हैं। उनके लिए आनलाइन गेम खेलना सिर्फ टाइमपास नहीं है बल्कि यह एक ऐसी जगह है जहां वे तनाव दूर करते हैं, दोस्तों से मिलते हैं और एक अलग पहचान बनाते हैं।

छोटी उम्र में ही पैसों की समझ : जेन अल्फा के बच्चे आर्थिक मामलों में भी काफी स्मार्ट हो रहे हैं। हर 10 में से लगभग 7 बच्चे घर के छोटे-मोटे काम करके या डिजिटल तरीकों से अपने लिए पैसे कमाना चाहते हैं। वहीं 45% बच्चों में आत्मनिर्भर होकर कमाने की गहरी इच्छा देखी गई है। हालांकि, पैसों को बचाने के मामले में वे अभी सीख ही रहे हैं, क्योंकि केवल 14% बच्चे ही पाकेट मनी का बड़ा हिस्सा नियमित तौर पर बचा पाते हैं। यह रिसर्च हमें यह समझाती है कि आज के 'जेन अल्फा' बच्चे स्क्रीन के गुलाम नहीं हैं।

पर्यावरण को लेकर व्यापार मेला

दक्षिणी जर्मनी के म्यूनिख में सोमवार को आइएफएटी म्यूनिख ट्रेड फेयर में एचएसएम के बेलिंग प्रेस सिस्टम से गुजरकर दबा हुआ कचरा दिखाया गया। यह मेला पानी, अपशिष्ट जल, कचरा और संसाधन प्रबंधन से जुड़ी पर्यावरण तकनीकों को समर्पित है। आयोजकों के अनुसार, 60 से ज्यादा देशों के 3,000 से ज्यादा प्रदर्शक इस मेले के दौरान अपनी रणनीतियां और नए आविष्कार पेश कर रहे हैं। यह फेयर 7 मई, 2026 तक चलेगा। पर्यावरण प्रौद्योगिकियों के लिए दुनिया का अग्रणी व्यापार मेला है। यह मेला उद्योग के पेशेवरों को नवीनतम तकनीकों, नवाचारों और समाधानों को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। एएफपी

स्क्रीन शाट

दुल्हन बनने के लिए तैयार हुमा

अभिनेत्री और नजदीकी दोस्त सोनाक्षी सिन्हा की ही तरह अब अभिनेत्री हुमा कुरैशी भी सादगी से अपने परिवारजनों के बीच शादी करने जा रही हैं। उनसे जुड़े सूत्रों के अनुसार हुमा इस साल अक्टूबर-नवंबर तक अपने ब्वायफ्रेंड रचित सिंह से शादी कर सकती हैं। उनकी यह शादी मुंबई में ही बेहद निजी लोगों के बीच सादगी से होगी। चार साल दोनों ने एकदूसरे को डेट किया है। अब दोनों को लग रहा है कि शादी के बंधन में बंधने का यह सही समय है, इसलिए दोनों इस रिश्ते को आगे बढ़ाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। शादी की तैयारियां भी शुरू हो चुकी हैं। शादी का समारोह बेहद निजी होगा, जहां करीबी लोग ही मौजूद होंगे। इसके बाद हुमा फिल्म इंडस्ट्री के लोगों के लिए एक बड़ा रिसेप्शन भी रखने की योजना बना रही हैं। पेशे से एक्टिंग कोच रचित के साथ हुमा के अफेयर की खबरें तब आने लगीं, जब दोनों को थामा की स्क्रीनिंग पर साथ देखा गया था। हाल ही में दोनों को मुंबई एयरपोर्ट से साथ यात्रा करते हुए भी देखा गया। पिछले साल खबरें भी आई थीं कि दोनों ने अमेरिका में सगाई कर ली है।

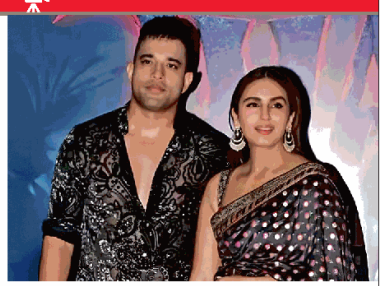

आगामी दिनों में टाक्सिक फिल्म में दिखेंगी हुमा। फाइल

नहीं मिला पानी, तो शूटिंग हुई ठप

बड़ी फिल्म शूट करना आसान नहीं होता है। बड़ी फिल्म का सेटअप भी बड़ा होता है और वह जरुरतें पूरी न हो, तो दिक्कतें आ सकती हैं। ऐसा ही कुछ हुआ है एसएस राजामौली की फिल्म वाराणसी के साथ भी। फिल्म से जुड़े सूत्रों के अनुसार, फिल्म वाराणसी का हैदराबाद शेड्यूल रोक दिया गया है, क्योंकि वहां अधिकारियों ने अंडरवाटर शूट के लिए डेढ़ सौ पानी के टैंकर उपलब्ध कराने से इन्कार कर दिया। टीम ने शहर के बाहरी इलाके में बनाए गए एक खास सेट पर महेश बाबू के साथ अंडरवाटर सीक्वेंस शूट करने की योजना बनाई थी। फिल्म की प्रोडक्शन टीम की डेढ़ सौ पानी के टैंकर (प्रत्येक की क्षमता दस हजार लीटर) की मांग की थी, लेकिन अधिकारियों द्वारा इस मांग को खारिज कर दिया गया। निर्माताओं को अंडरवाटर सीन की शूटिंग के लिए अनुमति नहीं मिली और पानी की सप्लाई रुकने से शूटिंग ठप हो गई। अधिकारियों के पानी न देने का कारण क्षेत्र में पानी की बढ़ती मांग और मौजूदा सप्लाई सिस्टम पर दबाव है, जिसका कारण गैर-जरूरी कार्यों के लिए अनुमति नहीं दी गई। जबकि फिल्म की टीम सप्लाई और ट्रांसपोर्टेशन का खर्च खुद उठाने के लिए तैयार थी। उल्लेखनीय है कि अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा लंबे समय बाद भारतीय सिनेमा में वापसी कर रही हैं। वहीं पृथ्वीराज सुकुमारन कुंभ और महेश बाबू, रुद्र और भगवान श्री राम के डबल रोल में नजर आएंगे।

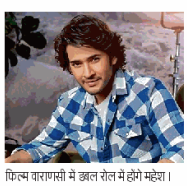

फिल्म वाराणसी में डबल रोल में होंगे महेश।

फिर काम पर लौटे बाबिल

पिछले काफी समय से कैमरा से दूर चल रहे अभिनेता बाबिल खान अब फिर सेट पर लौट आए हैं। बाबिल पिछले कुछ समय से मानसिक स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतों से गुजर रहे थे, इस कारण उन्होंने शूटिंग से दूरी बना ली थी। अब वह अपने आगामी प्रोजेक्ट के दूसरे शेड्यूल की शूटिंग के लिए सेट पर लौट आए हैं। इंस्टाग्राम पर बाबिल ने अपने प्रशंसकों के लिए एक नोट साझा करते हुए काम पर वापसी की घोषणा की। उन्होंने लिखा, 'मैं शूटिंग के दूसरे शेड्यूल की शुरुआत कर रहा हूं, कुछ पल निकालकर आपको बताना चाहता हूं कि मैं आपसे प्यार करता हूं और यह भी मानता हूं कि आपका प्यार मेरे लिए कितना मायने रखता है। मैं जी जान से मेहनत करता हूं, ताकि आप मुझे देखते हुए जो भी समय बिताएं, वह पूरी तरह सार्थक हो। उम्मीद है कि बहुत जल्द आप मुझे अपनी स्क्रीन पर देखेंगे।' बाबिल के इस प्रोजेक्ट की जानकारी को गुप्त रखा गया है। उन्होंने साल 2022 की फिल्म कला से इंडस्ट्री में कदम रखा था, जिसमें तृप्ति डिमरी नजर आई थीं। पिछले साल मई में वह उस वक्त चर्चा में आए, जब उनका एक भावुक वीडियो आनलाइन सामने आया, जिसमें उन्होंने काम करने को लेकर निराशा जाहिर करते हुए इंडस्ट्री को नकली और असभ्य बताया था। बाद में यह क्लिप हटा दी गई और फिर कुछ समय के लिए इंटरनेट मीडिया से भी दूरी बना ली।

मुस्कुराते हुए बाबिल ने सेट से की तस्वीर साझा की। फाइल

संजय के लिए छोड़ दिया था इस्माइल ने वायलन

भले ही संगीतकार इस्माइल दरबार और फिल्मकार संजय लीला भंसाली अब साथ काम न कर रहे हों, लेकिन जब साथ काम करके थे, तो गजब की दोस्ती हुआ करती थी। संजय के साथ देवदास, हम दिल दे चुके सनम फिल्में कर चुके इस्माइल ने केवल एक बार कहने पर अपने दिल के सबसे करीब वायलन को छोड़ दिया था। फराह खान के कुकिंग शो पर इस्माइल कहते हैं कि कुणाल गांजावाला को मैंने ब्रेक दिया था, वो संजय के रिश्तेदार थे। खामोशी फिल्म के बाद वह उनसे मिलने गए थे, तब संजय ने कहा था कि तुम्हारा कोई संगीतकार दोस्त होगा, तो बताना। वह हम दिल दे चुके सनम पर काम कर रहे थे। उससे पहले मैं बैकग्राउंड में वायलन बजाता था। हम दिल दे चुके सनम के बाद मेरे पास काफी काम था। संजय ने कहा कि देवदास फिल्म करनी है, पूरा समय चाहिए। मेरे पीछे काम को लेकर कई लोग पड़े थे। मुझे जरुरत भी थी। लेकिन फिर मैंने सोचा कि ब्रेक भी तो उन्होंने ही दिया है। देवदास पूरी करने के लिए मैंने 35 से 40 फिल्में छोड़ दी थी। लेकिन उनके लिए मेरा सबसे बडा बलिदान था, वायलन को छोड़ना, जिसे मैंने 22 साल सीने से लगाकर रखा था। बीवी-बच्चों, माता-पिता, भाई-बहनों की परवरिश उसी से कमाए पैसों से की थी। संजय ने सीधे मीटिंग में सबसे पहले कहा कि मेरे साथ काम करना है, तो वायलन छोड़ना होगा। मैंने 15 सेकेंड में कहा कि छोड़ दिया, अब आगे बताओ क्या करना है।

दोस्ती निभाने में यकीन रखते हैं इस्माइल। इंस्टाग्राम - @ismaildarbarofficial